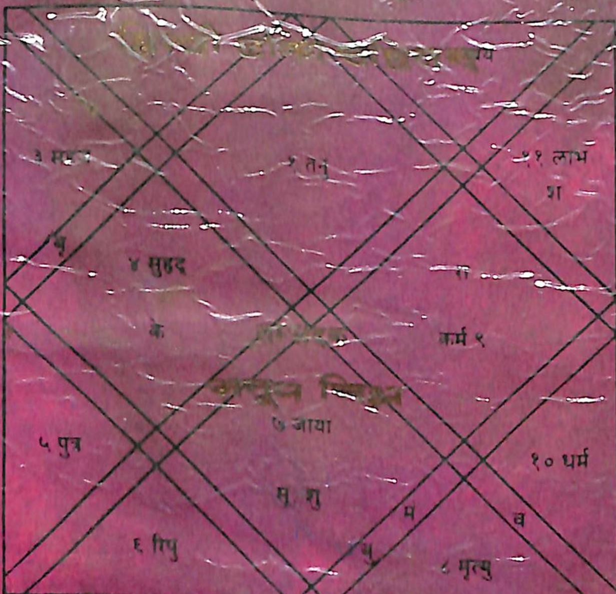
कुण्डली दर्पण



प्राप्ति स्थान

विश्वभारती संस्कृत संस्थान

वाराणसी

मूल्य २५-००

ॐ तत्सत्

कुण्डली दर्पणः

हिन्दी टीका सहित

सम्पादकः

अनूप मिश्रः

स्थान

विश्व भारती संस्कृत संस्थान
(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्वी गेट के सामने)
जगतगंज, वाराणसी - २२१ ००२

प्रकाशक
शिव साहित्य संस्थान
सी. के. ५/२६ए भिखारीदास लेन,
वाराणसी

अन्य प्राप्तिस्थान
विश्वभारती संस्कृत संस्थान
(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्वी गेट के सामने)
जगतगंज, वाराणसी - २२१ ००२

पुनर्मुद्रित संस्करण १९९७

कम्प्युटर कम्पोजिंग :

राजेश कम्प्युटरर्स
जयप्रकाश नगर, वाराणसी २२१ १०३,
दूरभाष : (०५४२) ३६०५९९

KUNDALI - DARPANA

With Hindi Commentary

Edited by

ANOOPA MISHRA
Ex. Senior Professor (Astro & math)
Govt. Sanskrit College, Benares

VISWABHARATI SANSKRIT SANSTHAN
VARANASI

Published by
SIVA SAHITYA SANSTHAN
C.K. 5/26 A Bhikhari Das Lane
Varanasi

Also can had be
Viswabharti Sanskrit Sansthan
Copp. S.S.V.V. (East Gate)
Jagatganj, varanasi

Reprint Ed. 1997

Computer Composing :
RAJESH COMPUTERS
Jaiprakash Nagar, Varanasi
Ph. No. 360599

भूमिका

त्रिस्कन्धज्योतिःशास्त्रस्य परिणामभूतं होरातन्त्रं प्रसिद्धम् , यस्याधाररूपं जातकस्य जन्मपत्रमेव । सर्वतः शुद्धे एव जन्मपत्रे तत्तद्भावस्थग्रहाणां बलाबलविवेकतः सर्वं शुभाशुभफलं सम्यग् घटत ऐवत्यत्र नास्ति सन्देहावसरः । परन्तु यस्य जन्मपत्रमेवाशुद्धमज्ञदैवज्ञकृतं तदर्थं फलादेशचर्चा व्यर्थप्रायैव । अतः सर्वैरेव जन्मपत्रलेखकैस्तदर्थं सर्वतः सावधानैर्भवितव्यम् । एतदर्थका एवार्षकल्पाः कतिपये ग्रन्थाः प्राचीनोक्ताः प्रसिद्धाः,यदाश्रयतः परिशीलितज्योतिर्विषयाणामेव विदुषां कृते न काचिद् विप्रतिपत्तिः । परन्त्वाधुनिकाः कतिचनाकिञ्चना अपि जना जन्मपत्रलेखकाः परिदृश्यन्ते, येषां कृते सत्यपि द्वित्रनिबन्धे प्रत्येकविषयस्य विशदीकरणाभावान्न तथोपयुक्ततेति तत्सम्बन्धिसकलोपयुक्तविषयाणां संग्रहरूपः 'कुण्डलीदर्पणो' नामैष लघुग्रन्थः प्रणीतो यद्गुणगौरवमाद्यन्तावलोकनेन स्वयमेवावगतं भवेत्पाठकानाम् । छात्राणां मभ्यास-सौकर्याय विषयसूच्यपि संरक्षिता । वस्तुतो जन्मपत्रविरचन-सम्बन्ध्यावश्यकगणितविषयाणामेवात्र संग्रहो न हि फलादेशानाम् केवलं सर्वरोचकत्वाज्जायाभावविचारः संक्षेपतो दर्शितः । यदत्र मद्बुद्धिभ्रान्ति-दोषाद्यन्त्रालयादिदोषाद्वा समापतितमसामञ्जस्यन्तन्निष्पक्षधिया सुधिया शोध्यमित्यलमतिपल्लवितेन -

सुजनाः स्वयमेव मार्मिकाः प्रकृतग्रन्थविधानकर्मणः ।
अवलोक्य सुबोधपद्धतिं प्रभविष्यन्ति तरां मुदान्विताः ।।

अनूप मिश्रः

विषयानुक्रमणिका

ॐ तत्सत्

अथकुण्डलीदपर्णः

विभूतिवरदं बुधवृन्दवन्द्यपादारविन्दमनघं गिरिजातनूजम् ।
ध्यानपूजनजपादिनिविष्टभावाः सन्तो भवन्ति नितरामुदितप्रभावाः ।।१।।
त्वा पदाम्वुजमशेषदयाकरस्य ज्ञानोदधेर्निजगुरोर्मुरलीधरस्य ।
पयोगिजनिपत्रविधानमार्गं सोदाहृतिं सुविशदं वितनोत्यनूपः।।२।।
निबन्धाः सन्त्यनेकेऽत्र विषये विपुलोद्यमाः ।
तथापि लाघवप्रीत्या कुण्डलीदर्पणः कृतः ।।३।।
यदाश्रयवशादल्पधियोऽपि सफलाशयाः ।
जन्मपत्रविधाने हि प्रभवन्ति विशेषतः ।।४।।

सूर्योदय एवं सूर्यास्त-कालिक होरा (घण्टा मिनट) जानने का प्रकार -

पञ्चभक्तं रात्रिमानं होरा सूर्योदये तथा ।
द्युमानं पञ्चभिर्भक्तं सूर्यास्ते सा प्रजायते ।।५।।

रात्रिमान को ५ से भाग देने पर लब्धि सूर्योदय काल का घण्टा मिनट, दिनमान को ५ से भाग देने पर सूर्यास्त समय का घंटा मिनट होता है ।

उदाहरण

यथा किसी दिन दिनमान दण्ड २६दण्ड ४ पल है तो पहले २६ में पाँच से भाग र लब्धि ५ घण्टा मास १ को ६०से गुणा कर उसमे दिनमान का पल ४२

जोड़ा तो ६०+४२ = १०२ हुआ, इसमें फिर उसी ५ से भाग दिया तो लब्धि पूरी २० आई (शेष २ को ५ के आधे से कम होने के, कारण छोड़ दिया) अतः उस दिन सूर्यास्त काल ५ बजकर २० मिनट पर होना ज्ञात हुआ। इसी प्रकार रात्रिमान पर से सूर्योदय का ज्ञान किया जा सकता है । अथवा सूर्यास्त-कालिक घंटा-मिनट को पूरे १२ घण्टे में घटा देने से भी शेष तुल्य घण्टा-मिनट उस दिन सूर्योदय का आ जायगा ॥५॥

जन्म-कालिक घण्टा-मिनट से इष्टघटी का ज्ञान -

सूर्योदयाज्जन्मकालपर्यन्तं यन्मिता गताः ।
होरादयः पञ्चगुणास्ते द्विभक्ताः फलं हि यत् ।।६।।
घट्यादिकः स एवेष्टकालो जन्माङ्गमूलकः ।
होरायोगः सावधानैरिह कार्यो बुधैः सदा ।।७।।

सूर्योदय से आरम्भ कर जन्मकाल तक जितने घण्टा-मिनट बीतें हों उस संख्या को ५ गुणा कर गुणन-फल में दो से भाग दें तब जो लब्धि आवे वही जन्म-कालिक इष्टघटी होती है। यही इष्ट घटी सारी जन्मकुण्डली का मूल (आधार) होती है । सारा फलादेश इसी पर निर्भर रहता है, अतः इसकी शुद्धि यावच्छक्य पूरे विचारों के साथ अवश्य कर लेने चाहिये, अन्यथा इसके अशुद्ध रहने से सभी परिश्रम व्यर्थ होते हैं "छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्" इसकी शुद्धि के सम्बन्ध में कुछ उपाय दिखलावेगें । जन्मसमय तक कितने घण्टा-मिनट बीते हैं इसके लिए भी सावधानता की आवश्यकता है २४ घण्टे का दिन होता है, जिसकी समाप्ति प्रचलित घटीयन्त्र (घड़ी) के द्वारा दो आवृत्तियों में होती है अर्थात् मध्यरात्रि से अग्रिम दिन-मध्य तक १२ घण्टा फिर उसके बाद से १,२,३, ... क्रम से अग्रिम मध्यरात्रि तक १२ घण्टा, परन्तु हमको अपने परम्परागत सिद्धान्त के आधार पर सूर्योदय-काल में दिनारम्भ एवं दिनारम्भ से जन्मकाल पर्यन्त जितने घटी-पल बीते हैं उसीको इष्टघटी मानना है ; अतः इसके ज्ञान के लिए (१) यदि मध्याह्न के भीतर (दिन में) जन्म है तो सीधे जन्म-कालिक घण्टा-मिनट में सूर्योदय का घण्टा-मिनट घटाने से दोनों समय के बीच का घण्टा-मिनट आ जायगा, इसीको ५ गुना कर २ से भाग दीजिए वही इष्टघटी होगी। (२) यदि मध्याह्न

के बाद मध्यरात्रि के भीतर जन्म हो तो जन्म-कालिक घण्टा-मिनट में मध्याह्न और सूर्योदय का अन्तर रूप घण्टा-मिनट जोड़ने पर सूर्योदय एवं जन्म-काल के बीच का समय (घंटा मिनट) होगा। यदि मध्यरात्रि के बाद अग्रिम सूर्योदय के पूर्व (रात्र्यन्त में) जन्म हो तो जन्म-कालिक घं० मि० में सूर्योदय एवं मध्याह्न का अन्तररूप घं० मि० तथा १२ घण्टा और जोड़ दीजिये तब सूर्योदय से जन्म-काल तक का अभिमत घण्टा-मिनट होगा। इसीको ५ से गुणा कर २ से भाग देने पर ठीक ठीक जन्मकाल की इष्टघटी होगी।

(१) उदाहरण—

यथा—मध्याह्न के पूर्व ९ बज के २० मिनट पर किसी का जन्म है और उस दिन सूर्योदय ६ बजकर ४० मिनट पर है, अतः जन्मकाल घण्टा-मिनट में सूर्योदय घण्टा-मिनट घटाने से ९।२०—६।४०=२।४० रहा, यही सूर्योदय से जन्मकाल तक गत घण्टा-मिनट हुआ। इसीको ५ से गुणने पर १०।२०० अर्थतः १३।२० (मिनट में ६० से भाग देकर लब्धि ३ घं० में जोड़ दिया). अब इसमें २ से भाग देने के लिये न्यास—

```
२) १३।२० ( ६=घटी
   १२
   ---
    १
   ×६०
   ---
   ६०
   २०
   ---
२) ८० (४०=पल
   ८०
    ०
```

इस प्रकार लब्धि ६।४० घट्यादि आई, यही जन्मकाल की इष्ट घटी हुई।

(२) उदाहरण—

यथा किसी का जन्म उसी दिन सूर्यास्त के बाद १० बज कर २५ मिनट पर हुआ है तो ऊपर कहे हुये (२) नियम के अनुसार उस दिन मध्याह्न और सूर्योदय का अन्तर घं. मि. १२।०—६।४०=५।२० हुआ।

इसमें जन्मकाल घं. मि. १०।२५ जोड़ दिया ५।२०+१०।२५=१५।४५ यही सूर्योदय से जन्मकाल तक अभिमत घं. मि. हुआ, इस पर से इष्टघटी लाने की क्रिया—

```
          १५ । ४५
        × ५
      ─────────────
        ७५ । २२५ = ७८ । ४५ (गुणनफल)
        २ ) ७८ । ४५ ( ३९ = घटी
             ७८
            ────
              ०
             × ६०
            ─────
              ०
             ४५
          ────────
          २) ४५ ( २२ = पल
             ४४
          ────────
              १
             × ६०
          ─────────
          २ ) ६० ( ३० = विपल
              ६०
            ──────
               ०
```

इस प्रकार जन्मकालिक इष्टघटी ३९।२२।३० आई। इसी तरह अन्य उदाहरणों में भी क्रिया करने से इष्टघटी ठीक जानी जा सकती है। अङ्कों में लाघव के लिये इष्टघटी के और भी प्रकारान्तर हो सकते हैं जो कि प्रकृत विषय साधारण होने के कारण व्यर्थ समझा। यदि घटीयन्त्र ठीक है तो यह इष्टघटी सर्वतः शुद्ध ही समझनी चाहिये। परन्तु यदि घटीयन्त्र शुद्ध नहीं है या है ही नहीं, वहाँ छाया पर से इष्टघटी का ज्ञान करना चाहिये ॥ ६-७ ॥

दिन में छाया पर से इष्टकाल ज्ञान के लिये
पहले मध्याह्न कालिक छाया-साधन—

(वराहमिहिर)

दिनं खरामैरधिकं यदल्पं रसेन पंक्त्या निहतं शराप्तम् ।
हीनं घनं देशपलप्रभायां छाया च सा स्याद्दिनमध्यभागे ॥ ८ ॥

जन्मदिन का दिनमान तीस से जितना अधिक हो उसको ६ से गुण कर ५ से भाग दे, लब्धि को उस देश की पलभा में घटाने पर उस दिन की मध्याह्न कालिक छाया होगी। यदि दिनमान ३० से कम हो तो दोनों के अन्तर को १० से गुण कर पाँच से भाग दे, लब्धि को पलभा में जोड़ने से दिनार्ध छाया होगी।

उदाहरण—

जन्म-स्थान की पलभा ६ अंगुल, दिनमान ३२।४२ है तो दिनमान में ३० घटाने पर शेष ३२।४२–३० = २।४२ को ६ से गुणा १२।२५२ = १६।१२ पाँच से भाग दिया तो लब्धि ३।१४ आई, इसको पलभा ६ में घटाने से दिनमध्य की छाया ६–३।१४ = २।४६ हुई ॥ ८ ॥

इष्टकालीन छाया पर से इष्टघटी का आनयन—

छाया निजेष्टा दिनमध्यभागच्छायोनिता दिक्सहिता तयाप्ता।
दिने शराघ्ने गतगम्यनाड्यः श्रीमान् वराहो वदति स्वयुक्त्या ॥९॥

जन्मकाल में द्वादशाङ्गुल शंकु की जो छाया (अंगुलादिक) हो उसमें उस दिन की मध्याह्नच्छाया (पूर्वगणितागत) घटाकर १० जोड़ दे, उससे पञ्चगुणित दिनमान में भाग देने से लब्धि जो आवे वही पूर्वाह्न में गतघटी (अपेक्षित) होगी, यदि मध्याह्न के बाद की छाया हो तो लब्धि तुल्य गम्य घटी अर्थात् जन्मसमय से सूर्यास्त तक का काल आवेगा, अतः इस लब्धि को दिनमान में घटाने से शेषरूप अपेक्षित इष्टघटी होगी।

उदाहरण—

मान लीजिये, उसी दिन पूर्वाह्न में १२ अंगुल शंकु की छाया ५ अंगुल हुई है, अतः इसमें उस दिन की मध्याह्नछाया २।४६ घटाया ५–२।४६ = २।१४ इसमें १० जोड़ने पर १२।१४ = १२ × ६० + १४ = ७३४ भाजक हुआ। दिनमान ३२।४२ को ५ से गुणने पर १६०।२१० = १६३।३० = १६३ × ६० + ३०

= ९८१० भाज्य हुआ। अब भाज्य में भाजक का भाग देने के लिये न्यास—

```
७३४)९८१०(१३=घटी
     ७३४
     ----
     २४७०
     २२०२
     ----
     २६८
     ×६०
     ----
७३४)१६०८०(२२=पल
     १४६८
     १४००
     १४६८
     ----
     –६८ (स्वल्पान्तर)
```

इस प्रकार लब्धि १३।२२ आई, यही जन्मकालिक इष्टघटी हुई॥ ९॥

जन्म-समय शुद्ध घटी-यन्त्र के अभाव में अन्य उपाय—

(निजकृत फलिताक्षेपविमर्श)

घटीयन्त्रेऽप्यविश्वस्ते ह्यथवा तदभावके।
दिने शीर्षोद्गमे जाते प्राङ्गणे मापनादरम्॥ १०॥
भित्तिच्छाया विनिर्देश्याऽऽसन्ने परदिने ततः।
घटीयन्त्रेण शुद्धेन सह सूर्योदयादिना॥ ११॥
तच्छायातुल्यकालोऽसौ जन्मकालः प्रकीर्त्यते।
रात्रौ चेत् खस्थिता तारा याऽतिदीप्ताऽवलोकने॥ १२॥
तदाश्रयवशादेव यष्टिमूलस्थदृष्टितः।
भित्तिसंलग्नयष्ट्यग्रदर्शना स्याद्यथा तथा॥ १३॥
यष्टिः शीघ्रं स्थिरा कार्याऽऽधारसंधारणादिभिः।
यदैव परसत्रौ सा तारा यष्ट्यग्रसङ्गता॥ १४॥

तत्राशुद्धघटीयन्त्रभवो जन्मेष्टकालकः ।
इत्थमज्ञजनोऽपि स्यात्क्षमो जन्मेष्टनिर्णये ॥ १५ ॥

यदि घड़ी का समय अशुद्ध हो या घड़ी न रहे तो दिन में—जन्म होते ही आङ्गन में किसी दीवार की छायासीमा को सीधी रेखा खींच कर सुरक्षित रखे, बाद में कहीं से शुद्ध घड़ी मँगा कर अपने पास रखे, दूसरे दिन उस दीवार की छाया जिस समय खींची हुई रेखा पर बिलकुल मिल जाय तत्कालीन उस घड़ी का समय जन्मकाल समझना चाहिये।

यदि रात्रि में जन्म हो तो जन्म होते ही आकाश में जो तारा अधिक देदीप्यमान प्रतीत हो, (आस-पास के नक्षत्रों के अवस्थान का भी ध्यान रखे ताकि दूसरी रात्रि में उस तारा को पहचान सके) किसी दीवार या खंभे पर सीधी यष्टि के द्वारा उस तारा को इस तरह देखे कि यष्टि के मूल में दृष्टि, एवं ठीक यष्ट्यग्र के सामने तारा रहे, और वैसे ही उस यष्टि को नीचे कुछ आधार देकर स्थिर कर दे। बाद शुद्ध घड़ी के सहारे दूसरी रात्रि में जिस समय वह तारा ठीक उसी यष्टि के अग्रगत प्रतीत हो, वही समय (घण्टा, मिनट) जन्मकाल होता है। इसी घं. मि. पर से कहे हुये नियम के अनुसार घटी पल ले आना चाहिये। इस ढंग से साधारण मनुष्य भी शुद्ध इष्ट घटी का निर्णय कर सकता है। (यह उपाय अयन के आरम्भ या विराम के समय ठीक ही है। मेषार्क या तुलार्क के समय अधिक क्रान्तिगति होने के कारण स्थूल होते हुये भी ग्राह्य है) ॥ १०–१५ ॥

इष्ट-लग्नपरीक्षा—

अश्विनीमघमूलादिभानां भागत्रयं क्रियात् ।
चतुर्घ्नेष्टघटीमानं नवभिर्भागमाहरेत् ॥ १६ ॥
स्वभागादेः शेषतुल्यं जन्मनक्षत्रमुच्यते ।
अन्यथा चेदिष्टमानमशुद्धं परिकीर्त्यते ॥ १७ ॥

अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों को तीन भाग क्रम से (नौ नौ नक्षत्र) करें जो कि अश्विनी से आश्लेषा तक ९ नक्षत्र प्रथम नवक (अश्विन्यादि), मघा से ज्येष्ठा

तक ९ नक्षत्र द्वितीय नवक (मघादि) एवं मूल से रेवती तक ९ नक्षत्र तृतीय नवक (मूलादि) होंगे। तब जन्मकालिक इष्टघटी को चार से गुणा करे ९ का भाग दे (लब्धि का प्रयोजन नहीं) शेष जो रहे जन्मनक्षत्र जिस नवक में पड़ता हो उसीके आरम्भ से शेषतुल्य ही जन्मनक्षत्र होना चाहिये, यदि इस प्रकार से आगत नक्षत्र जन्मनक्षत्र नहीं है तो इष्टघटी अशुद्ध समझना चाहिये, तब वैसी स्थिति में इष्ट घटी में आधी या चौथाई घटा बढ़ाकर जन्मनक्षत्र को प्रमाणित करना चाहिये।

उदाहरण—

किसी का जन्म-नक्षत्र अनुराधा और इष्टघटी १६।५५ है। अनुराधा द्वितीय नवक (मघादि) में पड़ता है। अब देखना है कि इस इष्ट पर से जन्म-नक्षत्र ठीक मिलता या नहीं। इष्टघटी को ४ से गुणा किया तो (१६।५५) × ४ = ६४।२२० = ६७।४० हुआ, इसमें ९ का भाग दिया तो पूर्वप्रदर्शित भागक्रिया से लब्धि ७।३१ आई, अर्थात् मघा से सातवाँ विशाखा गत और आठवाँ अनुराधा वर्तमान (जन्म नक्षत्र) ठीक ही आया॥ १६ – १७॥

जन्मकालिक सूर्य-नक्षत्र पर से इष्ट-परीक्षा—

इष्टस्यार्द्धं सूर्यनक्षत्रयुक्तं भाप्तं यः स्याच्छेषसंख्यामितस्य।
राशिर्नक्षत्रस्य लग्नं तदेव बोध्यं नो चेज्जन्मकालस्तदन्यः॥१८॥

इष्ट को आधा कर उसमें जन्म-कालिक सूर्यनक्षत्र की संख्या अश्विनी से गिन कर जोड़ दें, २७ से भाग देने पर जो शेष रहे (लब्धि का प्रयोजन नहीं) अश्विनी से गिन कर शेष-तुल्य संख्या वाले नक्षत्र की जो राशि हो वही लग्न होना चाहिये (इष्ट को आधा करने पर यदि पल के स्थान में ३० से कम हो तो उसका त्याग करना चाहिये)।

पूर्वोक्त उदाहरण में इष्टघटी १६।५५ जन्मकालिक सूर्य-नक्षत्र मघा एवं लग्न वृश्चिक है। इसकी परीक्षा के लिये इष्ट का आधा ८।२८ (३० से कम रहने से पल का त्याग करने पर केवल घटी ८ रही) इसमें सूर्य नक्षत्र मघा की संख्या १० मिलाने से १८ हुआ, इसमें २७ का भाग देने पर भी वही १८ शेष रहा, अतः अश्विनी से १८वें नक्षत्र ज्येष्ठ की राशि वृश्चिक लग्न उचित ही आया॥ १८॥

सूर्यांश पर से इष्टपरीक्षा—

इष्टकालो हतः षड्भिः सूर्यांशेन समन्वितः ।
त्रिंशद्भक्तः सैकलब्धितुल्यं लग्नं रवेः परम् ॥ १९ ॥

इष्टघटी को ६ से गुणा कर जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य का केवल अंश जोड़ दे तब ३० से भाग देने पर जो पूरी लब्धि आवे उसमें १ और मिला देने से जो संख्या हो, रविनिष्ठ राशि से तत्तुल्य अग्रिम राशि लग्न होना चाहिये ।

उदाहरण—

इष्टघटी १६ । ५५ को ६ से गुणने पर (१६ । ५५) × ६ = ९६ । ३३० = १०१ । ३० आया, स्पष्ट सूर्य का अंशमान १ जोड़ा तो १०२ । ३० हुआ, अब इसमें ३० से भाग दिया तो लब्धि ३ आई (शेष १२ । ३० का प्रयोजन नहीं) इसमें एक मिलाने से ४ हुआ उस दिन सूर्य सिंह राशि पर है, अतः सिंह से चतुर्थ वृश्चिक है, यही उस इष्ट पर लग्न भी सिद्ध होता है (लग्नानयन आगे देखें) इन प्रमाणों से उस जातक की इष्टघटी शुद्ध प्रमाणित होती है ॥ १९ ॥

भयात भभोग की परिभाषा—

जन्मर्क्षस्येष्टकाले तु यावान् भागो गतो भवेत् ।
भयातं तत्तथा तस्य पूर्णमानं भभोगकः ॥ २० ॥

जातक के जन्मकाल में जो दैनिक नक्षत्र प्रतीत हो वह जन्मनक्षत्र उसके आरम्भ से जन्मकाल तक जन्मनक्षत्र का जितना हिस्सा बीत चुका हो उसका नाम भयात है । एवं उस नक्षत्र के आरम्भ से अन्त तक जितना पूरा मान सिद्ध हो वह भभोग कहलाता है (इसी परिभाषा के आधार पर पञ्चाङ्गस्थ जन्मनक्षत्र की आलोचना सावधानता के साथ करने पर स्वयं अपनी बुद्धि से भयात भभोग का परिमाण आ जाता है, तथापि अग्रिम श्लोकों से इसीका आनयन किया है) ॥ २० ॥

भयात भभोग लाने का प्रकार—

गतर्क्षमानं खरसेषु शुद्धं सूर्योदयादिष्टघटीसमेतम् ।
भयातसंज्ञं च निजर्क्षमानयुक्तं भभोगो भवतीष्टकेऽल्पे ॥२१॥

नक्षत्रमानादधिकेष्टमानेऽन्तरं तयोरेव भयातसंज्ञम् ।
नक्षत्रमानं त्वथ षष्टिशुद्धमैष्यर्क्षमानेन युतं भभोगः ॥२२॥

जन्म-दिन में जो पञ्चाङ्गस्थ नक्षत्र है उसका मान यदि इष्ट घटी से अधिक है (अर्थातः नक्षत्रमान से ईष्टघटी कम है) तो वही जन्म नक्षत्र, उसके अव्यवहित पूर्व नक्षत्र गत नक्षत्र हुआ, उसका कुछ मान जन्मके पूर्व दिन पञ्चाङ्गस्थ जो हो उसको ६० में घटा दे शेष को जन्मदिन के इष्टकाल में जोड़ दे तो भयात होगा। और जन्म दिन का जो नक्षत्रमान है उसमें शेष जोड़ दे तो भभोग हो जायगा।

उदाहरण—

यथा माघ शुक्ल ६ मंगल को १५। २५ इष्ट काल पर किसी का जन्म है, उस दिन रोहिणी का मान २८। ४६ होने के कारण यही जन्मर्क्ष एवं उसके पूर्व कृत्तिका गतर्क्ष हुआ। गत सोमवार को कृत्तिका का मान २७। २२ है। अतः—

२७। २२ को
६०। ०० में घटाने पर
३२। ३८ शेष रहा, इसमें
१५। २५ इष्टकाल जोड़ने पर
४८। ३ यही भयात हुआ।
फिर उसी शेष ३२। ३८ में
२८। ४६ जन्मर्क्ष (रोहिणी) का मान
जोड़ा तो ६१। २७ हुआ, यही भभोग है। इसी तरह अन्यान्य उदाहरणों में भी करना चाहिये॥ २२॥

यदि नक्षत्रमान से इष्टकाल अधिक हो तो इष्ट और नक्षत्रमान इन दोनों का अन्तर ही भयात होता है। और नक्षत्रमान को ६० में घटाने पर जो बचे उसमें अग्रिम दिन का नक्षत्रमान जोड़ दे तो भभोग हो जायगा।

उदाहरण—

पूर्वोक्त उदाहरण के अनुसार मंगल की रात्रि में ४० । २२ इष्ट पर किसी का जन्म है (अग्रिम बुध को मृगशिरा का मान ३१।३२ है) अतः रोहिणी का मान २८।४९ और इष्टकाल ४० । २२ का अन्तर ४० । २२–२८ । ४९ = ११ । ३३ भयात हुआ। रोहिणी का मान २८ । ४९ को ६० में घटा कर ३१ । ११ अग्रिम दिन का मृगशिरा का मान ३१ । ३२ जोड़ दिया तो ६२ । ४३ यही भभोग हुआ (इस उदाहरण में जन्मनक्षत्र मृगशिरा ही सिद्ध हुआ) ॥ २२ ॥

त्र्यहस्पृगादौ स्वधियैव शोध्यं यतः स्फुटं तत्परिभाषयैव ।
आद्यन्तकालावगमात्सुबोधं भयातभोगानयनं सदैव ॥ २३ ॥

उन दो के अतिरिक्त कुछ और भी उदाहरण होंगे जैसे त्र्यहस्पृक् नक्षत्र अर्थात् कभी कभी किसी नक्षत्र को तीन दिन से सम्बन्ध पड़ जाता है, जन्म-दिन के पूर्व रात्र्यन्त में, जन्मदिन में तथा जन्म के अग्रिम दिन के सूर्योदय के बाद भी (यह परिस्थिति चन्द्रमा की गति अल्प होने पर नक्षत्र का मान अधिक होने से होती है)। एसे ही चन्द्र-गति अधिक होने पर नक्षत्र का मान कम होने से कभी कभी एक ही दिन में तीन नक्षत्र का भी सम्बन्ध पड़ जाता है, अर्थात् सूर्योदय-काल में प्रथम नक्षत्र, तब से रात्र्यन्त के कुछ पहले ही तक द्वितीय नक्षत्र फिर तब से अग्रिम सूर्योदय-काल में तृतीय नक्षत्र। इन स्थितियों में ज्यौतिषी को चाहिये कि भयात भभोग की जो तात्त्विक परिभाषा (श्लो० २० में) कही गई है उसके आधार पर अपनी बुद्धि से काम ले (खास कर जन्म-नक्षत्र का आरम्भ कब हुआ है, जन्मकाल तक कितना बीता है, तथा आरम्भ से अन्त तक पूरा घट्यादि मान कितना है इसी से भयात भभोग स्वयं बना ले) तथापि एक उदाहरण देते हैं।

यथा—पौषकृष्ण द्वितीया शनिवार को २५ । ४२ इष्ट पर किसी का जन्म है। उस दिन पुनर्वसु ६०।०, अग्रिम रविवार को भी पुनर्वसु ३ । ३६ तक है। शनिवार के पूर्व दिन शुक्र को आर्द्रा का मान ५८ । १० है (उसके बाद शुक्र के रात्र्यन्त में भी पुनर्वसु इसीसे सिद्ध होता है) अतः अपनी बुद्धि से ६०। ० में आर्द्रा

का मान ५८ । १० घटा दिया तो पुनर्वसु का शुक्र-रात्र्यन्त में ६० । ०—५८।१० = १ । ५० रहा। इसमें सूर्योदय से जन्मकाल तक का मान इष्टघटी २५ । ४२ जोड़ा तो २७ । ३२ हुआ यही भयात आया। भभोग के लिये तीनों हिस्से (शुक्र रात्र्यन्त का १ । ५० शनैश्चर का पूरा ६० । ० तथा रविवार का ३ । ३६) को एक साथ जोड़ दिया। यथा—

१ । ५०
६० । ००
३ । ३६

६५ । २६ यही भभोग हुआ ॥ २३ ॥

अयनांश जानने का प्रकार—

शको भूनेत्रवेदोनस्त्रिनिघ्नो द्विशतैर्हृतः ।
फलं वर्षादिकालीनाः प्रभवन्त्ययनांशकाः ॥ २४ ॥

द्वाभ्यां हृतान्नन्दहतार्कराशेः फलेन युक्ता विकलात्मकेन ।
वर्षादिकालीनचलायनांशा निजेष्टमासादिगता भवेयुः ॥ २५ ॥

रवेर्भागास्त्रिगुणिता नखाप्तविकलायुताः ।
मासादिजायनांशास्ते जायन्ते स्वदिनादिजाः ॥ २६ ॥

जन्मशका में ४२१ घटा कर शेष को ३ से गुणा कर २०० से भाग दे तब जो लब्धि आवे वह जन्मशका के आरंभ में अयनांश होता है।

जन्म-कालिक सूर्य की राशिसंख्या जो हो उसको ९ से गुणा कर २ से भाग देने पर लब्धि विकलात्मक होगी। उसको वर्षादिकालिक अयनांश में यथास्थान जोड़ने से वर्तमान सौरमास के आरम्भ-कालिक अयनांश हो जायगा।

फिर जन्म-कालिक सूर्य की अंशसंख्या जो हो उसको ३ से गुणा कर २० से भाग देना, उसमें जो लब्धि आवे वह मासादिकालीन अयनांश में जोड़ देने से जन्मदिन का अयनांश (अभिमत) आ जायगा।

उदाहरण—

यथा शाके १८५६ श्रावणशुक्ल अष्टमी शनिवार में अयनांश जानना है, उस दिन का स्पष्ट सूर्य राश्यादि ४ । १ । २० है। जन्मशका में ४२१ घटाने पर १८५६–४२१ = १४४५ शेष बचा, इसको ३ से गुणा दिया ४३३५ तब २०० से भाग देने के लिये—

२००)४३३५(२१ = अंश
४२००
१३५
× ६०
२००)८१००(४० = कला
८०००
१००
× ६०
२००)६०००(३० = विकला
६०००
०

लब्धि २१ । ४० ३० आई, यही १८५६ शाका के आरम्भ दिन का अयनांश हुआ।

स्पष्टसूर्य की राशिसंख्या १ है जिसको ९ से गुणा कर दो से भाग देने पर लब्धि विकलात्मक ४ । ३० वर्षादिकालीन अयनांश २१ । ४० । ३० में जोड़ दिया तो २१ । ४४ । ३० यह जन्मसौरमास के आरम्भ का अयनांश हुआ।

फिर स्पष्टसूर्य का अंश २० को ३ से गुणा और २० से भाग दिया तो लब्धि विकला ३ आई। इसको मासादिकालीन अयनांश २१ । ४४ । ३० में जोड़ देने पर २१ । ४४ । ३३ यही जन्मकालिक अयनांश हुआ ॥ २४ – २६ ॥

पञ्चाङ्गस्थ ग्रहों का चालन—

पंक्तिः स्वेष्टाद्धवेदग्रे पंक्तयामिष्टं विशोधयेत् ।
तच्चालनमृणं ज्ञेयं घनं ज्ञेयं तदन्यथा ॥ २७ ॥

यदि जन्मदिन के आगे पंक्ति हो तो पंक्ति के दिनादि में जन्म का दिनादि घटाने पर शेष गत दिवसादि रहेगा (इसको ऋण चालन कहते हैं) यदि पंक्ति के आगे जन्मदिन हो तो जन्म के दिनादि में पंक्ति का दिनादि घटाया जाय तो शेष ऐष्य दिवसादि रहेगा (इसका नाम धन चालन है)।

विशेष—पञ्चाङ्गों में साप्ताहिक ग्रह बने रहते हैं, किसी में उदयकालिक, किसी में मिश्रमानकालिक। इसीको पंक्ति कहते हैं। जिस दिन जिस समय जन्म हुआ हो उसके आगे या पीछे जो पंक्ति साढ़े तीन दिन के भीतर की हो वही पंक्ति लेनी चाहिये (साढ़े तीन से अधिक दूरी वाली पंक्ति लेने से ग्रहानयन म स्थूलता होती है, इसके लिये रव्यादिक दिनों की संख्या १, १, ३....७ तक क्रम से समझना चाहिये।) ऋणचालन में गणितागत फल पंक्तिस्थ ग्रहों में घटाने से एवं धनचालन में जोड़ने से जन्म समय के ग्रह होंगे (यह क्रिया अत्यधिक गति होने के कारण चन्द्रमा के स्पष्टीकरण के लिये नहीं है, उसके लिये स्वतन्त्र प्रकार आगे दिया गया है)।

उदाहरण—

यथा अष्टमी शनिवार को इष्टघटी १६ । ५५ पर जन्म है। अव्यवहित पूर्वदिन शुक्र के मिश्रमान (४६ । ५१) कालिक (पंक्तिस्थ) ग्रह पञ्चाङ्ग में बने हैं।

इससे सिद्ध हुआ कि पंक्ति के आगे दिन इष्ट है, अतः इस अवसर पर धनचालन और ऐष्य दिवसादि होगा। पंक्तिवारादि = ६।४६।५१ इष्टवारादि = ७।१६।५५ है। यहाँ इष्ट में पंक्ति घटाने पर सीधे ०।२६।४ शेष बचा, यही ऐष्य दिवसादि हुआ (दिन के स्थान में शून्य रहने के कारण घट्यादि ही जानना) ॥ २७ ॥

ग्रहस्पष्टीकरण—

गतिर्गुण्या गतैष्येण दिनाद्येन विभाजिता ।
षष्ट्या लब्धांशहीनाढ्यः पंक्तिखेटः स्फुटो भवेत् ॥ २८ ॥

जिस ग्रह का स्पष्टीकरण करना हो उसकी गति (पंक्ति में लिखी रहती है) को गत या ऐष्य दिवसादि से गुणा करें (गोमूत्रिका क्रम से) तब ६० से गुणनफल में भाग देने से लब्धि अंशादिक गत-ऐष्य के क्रम से ऋण-धन चालनफल होगा, इसको पंक्तिस्थ ग्रह के राश्यादि में ऋण-धन कर देन से जन्मकालिक स्पष्ट ग्रह बन जायगा। जहाँ घट्यादि हो वहाँ पर ६० से भाग देने से कलादिक ही लब्धि माननी चाहिये।

उदाहरणार्थ—उसी इष्ट पर स्पष्ट सूर्य बनाना है जहाँ कि ऐष्य घट्यादि २९।४, पंक्तिस्थ सूर्यराश्यादि ४।०।४९।१९ एवं सूर्य की गति ५७।३६ है। अब गति को ऐष्य घट्यादि से गुणने के लिये गोमूत्रिका-क्रम से न्यास—

२७।४ × ५७ = १६५३।२२८
२७।४ × ३६ = १०४४।१४४
गुणनफल = १६५३। १२७२।१४४
= १६७४।१४।२४

इसमें ६० का भाग देने पर कलादि लब्धि २७।५४ मिली, इसको पंक्तिस्थ सूर्य ४।०।४९।१९ में जोड़ देने से जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य ४।१।१७।१३ हुआ ॥ २८ ॥

स्पष्ट चन्द्रमा का आनयन—

भयातं भभोगोद्धृतं यातनक्षत्रयुक्तं चतुर्घ्नं नवाप्तं गृहादिः ।
शशी तद्गतिर्भोगभक्ताऽयुतघ्नाष्टभागद्विसंख्या कलाद्या तथैवम् ॥ २९ ॥

पलात्मक भयात को पलात्मक भभोग से भाग दे, लब्धि में, गतनक्षत्र की संख्या जोड़ कर चार से गुण दे बाद में ९ से भाग देने पर लब्धि राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा होगा। २८८ अङ्क को अयुत १०००० से गुण कर पलात्मक भभोग का भाग देने से चन्द्रमा की स्पष्टगति कलात्मक आ जाती है।

उदाहरण—

किसी का अनुराधा नक्षत्र में जन्म है जिसका भयात ७।४१ (पलात्मक ४६१) और भभोग ५८।७ (पलात्मक ३४८७) है तो चन्द्रानयन करते हैं—पहले भयात ४६१ में भभोग ३४८७ से भाग देने के लिये न्यास—

```
३४८७)४६१(०
      ०००
      ४६१ इसको पहले ३० से गुणा
     ×३०
३४८७)१३८३०(३
     १०४६१
      ३३६९ अब ६० से गुणा
      ×६०
३४८७)२०२१४०(५७
     १७४३५
     २७६९०
     २४४०९
      ३२८१
      ×६०
३४८७)२०२८६०(५८
     १७४३५
     २८५१०
     २७८९६
       ६१४ (अन्तिम शेष त्याज्य)
```

इस प्रकार लब्धि ०।३।५७।५८ आई, इसमें गतनक्षत्र विशाखा की संख्या १६ जोड़ दिया तो १६।३।५७।५८ हुआ, चार से गुण दिया तो गुणनफल ६४।१२।२२८।२३२ षष्टिशुद्ध करने पर ६४।१५।५१।५२ हुआ, इसमें ९ का भाग देने के लिये न्यास—

९)६४।१५।१५।५२(७
६३
——
१
×३०
——
३०
१५
——
९)४५(५
४५
——
००
९)५१(५
४५
——
६
×६०
——
३६०
५२
——
९)४१२(४५
३६
——
५१
४५
——
६ (त्याज्य)

लब्धि राश्यादि ७।५।५।४५ मिली, यही स्पष्ट चन्द्र हुआ। अब गति लाने के लिये २८८ को अयुत से गुणने पर २८८०००० हुआ, इसमें पलात्मक भभोग ३४८७ से भाग देने के लिये न्यास—

```
३४८७)२८८००००( ८२५ = कला
     २७८९६
     ───────
      ९०४०
      ६९७४
      ───────
      २०७४०
      १७४३५
      ───────
       ३३०५
        × ६०
      ───────
३४८७)१९८३००(५६ = विकला
      १७४३५
      ───────
      २३९५०
      २०९२२
      ───────
       ३०२८ (त्याज्य)
```

इस तरह चन्द्रमा की स्पष्टगति कलाविक ८२५।५६ आई ॥ २९ ॥

लङ्का के राश्युदयमान—

अष्टाद्रिदस्रास्त्रिशतं कुहीनं त्रिबाहुरामाः क्रमतस्तथोत्क्रमात् ।
संस्थापिता मेषमुखादिभानां लङ्कोदया द्वादश ते पलात्मकाः ॥३०॥

२७८, २९९ एवं ३२३ इन अङ्कों को क्रम से, उत्क्रम से, फिर क्रम से, उत्क्रम से स्थापित करने से लङ्का में मेषादि द्वादश राशियों के पलात्मक उदयमान होते हैं ॥ ३० ॥

लङ्कोदयचक्र—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
उदयपल	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८
राशि	तुला	वृश्चिक	धन्	मकर	कुम्भ	मीन
घट्यादि	४।३८	४।५९	५।२३	५।२३	४।५९	४।३८

पलभा की परिभाषा—

सायनार्के तुलामेषादिगे तु विषुवं दिनम् ।
मध्याह्ने तत्र शङ्कोर्या छाया सा पलभा स्मृता ॥ ३१ ॥

सायन स्पष्टसूर्य जब मेषादि या तुलादि पर आवे वह विषुव दिन कहलाता है (उसी दिन, दिन-रात्रि दोनों तुल्य होते हैं) उसी दिन ठीक मध्याह्न में द्वादशाङ्गुलशङ्कु की जो छाया (अंगुलात्मक) हो उसीका नाम पलभा (विषुवती) है। यह अक्षांश के भेद से तत्तद्देश की भिन्न भिन्न होती है ॥ ३१ ॥

चरखण्ड का आनयन—

त्रिष्ठा सा दशभिर्नागैर्दशभिश्च हता पृथक् ।
त्रिभिर्भक्तान्तिमा तानि स्वदेशीयचराणि हि ॥ ३२ ॥

जिस देश की पलभा को तीन जगह रख कर क्रमसे १०। ८।१० से गुण दें (अन्तिम खण्ड को तीन से भाग भी दे) तब जो गुणनफल हो वे ही उस देश के चरखण्ड होंगे।

उदाहरण—

यथा काशी की पलभा ५ । ४५ (५ अंगुल, ४५ व्यंगुल) इस को तीन जगह रख कर गुणकांकों से गुणने पर

(५ । ४५) × १० = ५० । ४५० = ५७ । ३०

(५ । ४५) × ८ = ४० । ३६० = ४६ । ०

(५ । ४५) × १० = ५० । ४५० = ५७ । ३० इसको ३ से भाग देने पर १९ । १०,

अतः पलात्मक चरखण्ड ५७ । ३०, ४६, १९ । १० हुए इन में प्रथम, तृतीय खण्ड में द्वितीय अवयव विपलात्मक हैं जो कि स्वल्पान्तर से लंकोदय में केवल पलात्मक उदयमान रहने के कारण छोड़ देने पर केवल पलात्मक चरखण्ड ५७,४६,१९ आये। सूक्ष्मता के लिये विपल का भी ग्रहण करना उचित है ॥ ३२ ॥

चरखण्ड पर से स्वदेशीय राश्युदयमान जानने का प्रकार—

क्रमोत्क्रमस्थैस्तैर्हीनयुक्ता लङ्कोदयाः क्रमात् ।
उत्क्रमात् स्युः स्वदेशीयराशीनामुदया ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

जिस प्रकार २७८, २९९, ३२३ इन अंकोंको क्रम से उत्क्रम से रख कर लङ्कोदय विदित कराया गया है, उसी प्रकार जिस देश का उदयमान जानना हो, वहाँ के चरखण्डों को भी उसी प्रकार क्रम उत्क्रम से रक्खें, जहाँ क्रमसे हैं वहाँ चरखण्ड क्रम से घटावें, जहाँ उत्क्रम से हैं वहाँ चरखण्ड को जोड़ दें तो उस देश का राश्युदयमान आ जायगा ।

उदाहरण—

यथा काशी के चरखंड ५७, ४६, १९ हैं, इनको क्रमस्थ लङ्कोदय २७८, २९९, ३२३ में क्रम से घटाये तो मेष, वृष, मिथुन के उदयमान (काशी) के हुए २७८–५७ = २२१ (मेष), २९९–४६ = २५३ (वृष), ३२३–१९ = ३०४ (मिथुन) । तथा उत्क्रमस्थ लंकोदय ३२३, २९९, २७८ में उत्क्रमस्थ चरखण्ड १९, ४६, ५७ जोड़े तो ३२३ + १९ = ३४२ (कर्क), २९९ + ४६ = ३४५,

(सिंह) २७८+५७=३३५ (कन्या)। इसी तरह क्रम से घटाने से उत्क्रम में जोड़ने से तुलादि छः राशियों के भी उदयमान होंगे ॥ ३३ ॥

अभ्यासार्थ काशी के राश्युदयमान-बोधक पद्य—

भूदस्रदस्रास्त्रिशरद्वितुल्या वेदाभ्ररामा द्विसमुद्ररामाः ।
पञ्चाब्धिरामाः शररामरामाः क्रमोत्क्रमाद्राश्युदयानि काश्याम् ॥३४॥

काशी के उदयमान–चक्र—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
उदयपल	२२१	२५३	३०४	३४२	३४५	३३५
राशि	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला
घट्यादि	३।४१	४।१३	५।४२	५।४२	५।४५	५।३५

इसी प्रकार मिथिला की पलभा ६ (अंगुल) को १०, ८, १० से गुणने पर चरखण्ड ६०,४८, २० हुये, इनको पूर्व-कथनानुसार लंकोदय में वियोग-योग करने पर मिथिला के उदयमान निम्नपद्यस्थ सिद्ध होते हैं।

अष्टेन्दुपक्षाः शशिबाणपक्षा गुणाभ्ररामा गुणवेदरामाः ।
शैलाब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥३५॥

राशि	उदयपल	घट्यादि	राशि
मेष	२१८	३।३८	मीन
वृष	२५१	४।११	कुम्भ
मिथुन	३०३	५।३	मकर
कर्क	३४३	५।४३	धनु
सिंह	३४७	५।४७	वृश्चिक
कन्या	३३८	५।३८	तुला

अक्षांश-सारिणी

नगर नाम	अक्षांश		नगर नाम	अक्षांश		नगर नाम	अक्षांश	
	अंश	कला		अंश	कला		अंश	कला
काशी	२५	१८	पूना	१६	०	विजैनगर	१८	७
कानपुर	२६	३०	पेशावर	३४	२	भागलपुर	२५	१५
कलकत्ता	२२	३५	पटना	३५	३७	भरतपुर	२७	१३
करांची	२४	५१	पालामऊ	२३	५२	भूपाल	२३	१६
काश्मीर	३४	६	पूर्नियाँ	२५	३६	मथुरा	२७	३२
कोचीन	६	५८	पुरुलिया	३३	२०	मिर्जापुर	२५	१०
कटक	२०	२८	पुरी	१६	४८	मेरठ	२६	१
खैरागढ़	२१	२६	पेरिस	४८	५०	मैनपुरी	२७	१४
खेरी	२७	५४	फतेहपुर	२६	०	मुजफ्फरपुर	२६	७
गढ़वाल	३०	०	फर्रुखाबाद	२७	२४	मुजफ्फरनगर	२६	२८
ग्वालियर	२६	१४	बदाऊँ	२८	१२	मयूरगंज	२१	५५
गाजीपुर	२५	३५	बरेली	२८	२२	मानभूम	२३	२४
गोंडा	२८	५	बलिया	२५	४४	मुंगेर	२५	२३
गोरखपुर	२६	५०	बस्ती	२६	४८	मोतिहारी	२६	४०
चित्रकूट	२५	१२	बहराइच	२७	३४	मास्को	५५	४५
जालौन	२६	८	बान्दा	२५	२८	मोरादाबाद	२८	५०
जौनपुर	२५	४२	बाराबंकी	२६	५६	मद्रास	१३	४
जम्बू	३२	४४	बिजनौर	२६	२३	मन्सूरी	३०	२७
जबलपुर	२३	१४	वैद्यनाथ	३४	३०	मालदह	२५	३
जयपुर	२६	५५	बर्लिन	५२	३२	रामपुरराज्य	२८	४८
जोधपुर	२६	१८	बड़ोदा	२२	०	रायबरेली	२६	१४
झाँसी	२५	३०	बम्बई	१८	५५	रांची	२३	२३
देहरादून	३०	१६	बीकानेर	२८	१	रंगून	१६	४५
दरभंगा	२६	१०	बुन्दी	२४	४५	रायपुर	२१	१५
देहली	२८	३८	बुलन्दशहर	२८	२४	रीवाँ	२४	३१
नैनीताल	२६	२३	बामड़ा	२१	४०	लखनऊ	२६	५५
प्रतापगढ़	२५	३४	बेतिया	२६	४८	लण्डन	५१	३०
पीलीभीत	२८	४०	विहार	२५	११	लाहोर	३१	३४
पटियाला	३०	२०	बिलासपुर	२२	२	ससराम	२४	५७

नगर नाम	अक्षांश		नगर नाम	अक्षांश		नगर नाम	अक्षांश	
	अंश	कला		अंश	कला		अंश	कला
सिंहभूम	२२	२४	अंबिकापुर	२३	१०	कुमिल्ला	२३	१२
सोनपुर	२५	४२	अमृतसर	३१	३७	कुदरा	२५	५
सागर	२३	५०	अलवर	२७	३४	कर्नाटक	१२	०
सिमला	३१	६	अहमदाबाद	२३	१	किशनगढ़	२३	१५
सिन्ध	२४	५१	उज्जैन	२३	१०	कनाल	२९	४१
सहारनपुर	२९	५८	इन्दौर	२२	४४	कोल्हापुर	१६	४५
सीतापुर	२७	३२	उदयपुर	२४	३६	गया	२४	४५
सुलतानपुर	२६	१६	आजमगढ़	२६	०	गोदावरी	१६	३०
शाहजहाँपुर	२७	५४	इटावा	२६	४७	गोलकुण्डा	१७	४३
शाहाबाद	२५	१०	इलाहाबाद	२५	२८	चित्तौर	२४	५०
संभलपुर	२१	२८	उन्नाव	२६	४८	चुनारगढ़	२५	१०
सिरोज	२४	६	एटा	२७	३५	चिनाव	३१	०
सिहोरा	२३	१२	आबू	२४	२५	जलालपुर	३२	४०
सूरत	२१	१२	उटकमण्ड	११	१५	नाभा	३०	२३
सोलापुर	१७	४०	अमेठी	२६	७	नागौर	२७	१५
सतारा	१७	५२	अमांवां	२५	९	नेपाल	२७	४२
सपाट	३०	५८	आसाम	२६	३०	नागपुर	२१	५०
सीतापुर	२७	३०	अटक	३३	५३	नासिक	१९	५८
शिमला	३१	६	अहमदनगर	१९	६	नीमच	२४	२७
शिकारपुर	२७	५७	कच्छ	२२	५०	नागपुर	२०	०
अलीगञ्ज	२६	१२	कपुरथला	३१	२३	प्रतापगढ़	२५	२७
आरा	२५	३०	काल्पी	२६	८	(अवध)		
अयोध्या	२६	४८	कांकरौली	२५	०	जालन्धर	३१	१८
अलमोड़ा	२९	३७	काञ्ची	९	२	जिन्द	२९	१९
अलीगढ़	२७	५५	कुरुक्षेत्र	३०	०	जामनगर	२२	२७
आगरा	२७	१२	कोटा	२५	२५	जूनागढ़	२१	३०
अनूपशहर	२८	२१	कोलम्ब्रो	६	५६	जौनपुर	२५	४२
अजमेर	२६	२७	कोल्हापुर	१६	४५	नाथद्वार	२४	५२
अमरावती	२०	५६	काबुल	३४	३०	नारनोल	२८	५
						नर्मदा	२१	५०

किसी देश के अक्षांश पर से पलभा जानने के लिये—

पलभा-सारिणी

अक्षांश		१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
पलभा	अं.	० ० ० ० १ १ १ १ १ २ २ २ २ २ ३ ३ ३
	व्यं.	१२२५३७५० ३१५२८४१५४ ६१९३३४६५९१२२६४०
	प्र.	३४ ९४४२१ ०४०२३१० ०५४५५ ०१२२८५४२४ ५

अक्षांश		१८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
पलभा	अं.	३ ४ ४ ४ ४ ५ ५ ५ ५ ६ ६ ६ ६ ७ ७ ७ ८
	व्यं.	५३ ७२२३६५० ५२०३५५१ ६२२३९५५१२२९४७ ५
	प्र.	५६५५ १२२५३३८३१४२ ७५२४८ ४४११८५३३१३८

अक्षांश		३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१
पलभा	अं.	८ ८ ९ ९ ९ १० १० १० ११ ११ ११ १२ १२ १२ १३ १३ १४ १४
	व्यं.	२४४३ २२२४३ ४२५२८११३५ ०२५५२१९४८१८४९
	प्र.	७ ५३५३० १ ९५०१८२४२४ ०३७ ४३७१८ ३ ८

सारिणी से पलभा का आनयन—

आद्यं पूर्णांशसम्भूतं फलमत्राङ्गुलादिकम् ।
कलादिकं च यच्छेषं गतैष्यान्तरसंगुणम् ॥ ३६ ॥
षष्ट्या भक्तं व्यंगुलादि द्वितीयं फलमुच्यते ।
तयोर्योगसमा वेद्या तद्देशे पलभा स्फुटा ॥ ३७ ॥

अक्षांश के प्रत्येक अंश की पलभा (अंगुलादि) तत्तत्कोष्ठ के नीचे दिये हुए प्रथम फल समझे तथा अंशातिरिक्त कलादि जो शेष रहे उसको गत-ऐष्य के अन्तर से गुणा करे, उसमें ६० से भाग देने पर लब्धि व्यंगुलात्मक द्वितीय फल होगा। इन दोनों फल का योग करे तो वही उस अक्षांश वाले देश की स्फुट पलभा होगी।

उदाहरण—

दरभंगा का अक्षांश २६ । १० है, तो सारिणी में २६ अंश के कोष्ठ का फल ५ । ५१ । ७ (प्रथम) शेष १० कला को गतैष्यान्तर ६ । ६ । ५२–५ । ५१ । ७ = १५ । ४५ से गुणने पर १५० । ४५० = १५७ । ३० आया, इसमें ६० का भाग देने पर लब्धि २ । ३७ (व्यंगुलात्मक) मिली (द्वितीय फल), दोनों का यथास्थान योग किया तो ५ । ५१ । ७ + ०।२ ।३७ = ५।५३ । ४४ पलभा आई ॥३६–३७॥

विना सारिणी के अक्षांश पर से पलभा का आनयन—

अक्षांशवर्गषष्ट्यंशहीनैः खार्कैर्विभाजितः ।
जिनघ्नाक्षांश एव स्यात् पलभा लघुजीवया ॥ ३८ ॥

अर्थ—अक्षांश के वर्ग को ६० से भाग देकर लब्धि को १२० में घटा देने पर जो शेष रहे उससे २४ गुणित अक्षांश में भाग दे, जो लब्धि आवे वही पलभा होगी (यह लघुज्याप्रकार से सिद्ध होता है इसलिये व्यङ्गुल में नाम मात्र का कुछ अन्तर पड़ेगा) ।

उदाहरण—

यथा अक्षांश २५ । ३० वाले देश की पलभा लाना है तो उसका वर्ग (२५ । ३०) × (२५ । ३०) = ६२५ । ७५०

७५० । ९००

६२५ । १५०० । ९०० = ६५० । १५ हुआ

इसको ६० से भाग दिया तो लब्धि १० । ५० । १५ इसको १२० में हीन करने पर १२०–१० । ५० । १५ = १०९ । ९ । ४५ यह भाजक हुआ। अक्षांश २५ । ३० को २४ से गुणा ६०० । ७२० = ६१२ यह भाज्य हुआ, यहाँ भाजक में तीन खण्ड हैं, अतः दोनों को एक जाति करने परभाजक = (१०९ × ६० + ९) ६० + ४५ = ६५४९ × ६० + ४५ = ३९२९८५, तथा भाज्य = ६१२ × ६० × ६० = २२०३२००, अब भाग देने के लिये न्यास—

३९२९८५) २२०३२०० (५ = अङ्गुल
१९६४९२५
२३८२७५
× ६०
३९२९८५) १४२९६५०० (४१ = व्यङ्गुल
१५७१९४०
५७७१००
३९२९८५
१८४११५
× ६०
३९२९८५) ११०४६९०० (२८ = प्रतिव्यङ्गुल
७८५९७०
३१८७२००
३१४३८८०
४३३२० (त्याज्य)

इस तरह उक्त अक्षांश पर पलभा ५ । ४१ । २८ आई ॥ ३८ ॥

प्रथमलग्नानयन—

(भोग्यप्रकार से)

सायनार्कस्य भोग्यांशाः स्वोदयघ्ना विभाजिताः ।
त्रिंशता लब्धमर्कस्य भोग्यमिष्टपलात्यजेत् ॥ ३९ ॥
गम्यराश्युदयांश्चापि शोधयेद्यो न शुद्धयति ।
सोऽशुद्धसंज्ञकः शेषं त्रिंशान्निघ्नं विभाजयेत् ॥ ४० ॥
अशुद्धोदयमानेन लब्धं लग्नगतांशकाः ।
अशुद्धपूर्वमेषाद्यैः सहिता व्ययनांशकाः ॥ ४१ ॥

लग्नं स्यात्प्रथमं भोग्यप्रकारगणितागतम् ।
एतदेव सषड्भं सत्सप्तमं लग्नमुच्यते ॥ ४२ ॥

स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़ने से सायनार्क कहलाता है, उसके राश्यादि में जो अंशादि हो वह भुक्त है (भुक्त प्रकार से लग्नायन में इसीसे काम लिया जाता है) उसको ३० अंश में घटा देने पर जो अंशादि शेष रहे वही भोग्यांश होता है। उसी भोग्यांश को सायनार्क जिस राशि में हो उस राशि के स्वदेशीय उदयमान से गुण दे और ३० से भाग दे तब जो लब्धि आवेगी वह सायन सूर्य का भोग्यपल होगा, उसको पलात्मक इष्ट में घटा दे, तब जो इष्ट का शेष रहे उसमें सायन-सूर्यनिष्ठ के अग्रिम राशियों के मान पूरे पूरे जहाँ तक घट सके घटा दे, तब जो अन्तिम शेष रहे वह लग्न का भुक्तपल रहेगा, और अन्ततः इष्टपल शेष में जिस राशि का पूरा उदयमान नहीं घट सके उसको अशुद्ध राशि समझे।

अब लग्न का भुक्तपलरूप जो अन्तिम शेष बचे उसको ३० से गुण दे और अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग दे तब जो लब्धि आवेगी वह अंशादि होगी। उसमें अशुद्ध-संज्ञक से पूर्व राशि की जो संख्या (मेषादि से) हो वह राशिस्थान में रखे इस प्रकार सायन प्रथम लग्न बन जायगा, परन्तु आचार्यों ने निरयन लग्न से काम लिया है इसलिये उसमें अयनांश घटा देने पर प्रयोजनीय स्पष्ट प्रथम लग्न हो जायगा। इसमें ६ राशि जोड़ने से सप्तम लग्न हो जाता है।

उदाहरण–

यथा स्पष्टसूर्य ४।१।२०।२४ अयनांश २१।३१।४८ इष्टघटी १६।५५=१०१५ (पलात्मक) पर मिथिला-देशीय प्रथम लग्न बनाना है तो सायनार्क ४।१।२०।२४+२१।३१।४८=४।२२।५२।१२ हुआ, इसके भुक्तांश २२।५२।१२ को ३० अंश में घटाने पर भोग्यांश ७।७।४८ रहा। सायनार्क सिंह पर है, अतः सिंह के उदयमान ३४७ (मिथिलोदयमान में देखें) से भोग्यांश ७।७।४८ को गुण दिया तो २४२९।२४२९।१६६५६ हुआ, षष्टिशुद्ध करने पर २४७४।२६।३६ हुआ, इसमें ३० का भाग देने के लिये न्यास—

३०) २४७४ । २६ । ३६ (८२ । २८ =
२४०
७४
६०
१४
× ६०
८४०
२६

३०) ८६६ (२८
६०
२६६
२४०
२६ (त्याज्य)

लब्धि आई, इसको इष्टपल १०१५ में घटाया तो प्रथम शेष ९३२। ३२ रहा, इसमें सिंह के अग्रिम कन्या का उदयमान ३३८ घटाया तो द्वितीय शेष ५९४। ३२ रहा, इसमें तुला का मान ३३८ घटाया तो अन्तिम शेष २५६ । ३२ बचा, अब इसमें वृश्चिक का मान ३४७ नहीं घट सकता, इसलिये वृश्चिक अशुद्धसंज्ञक हुआ। अब अन्तिम शेष २५६। ३२ को ३० से गुणा किया। ७६८०। ९६० = ७६९६ और अशुद्ध (वृश्चिक) के उदयमान ३४७ से भाग देने के लिये न्यास—

३४७) ७६९६ (२२
६९४
७५६
६९४
६२
× ६०
३४७) ३७२० (१०
३४७०
२५०
× ६०
३४७) १५००० (४३
१३८८
११२०
१०४१
७९ (त्याज्य)

इस प्रकार भुक्तांश २२। १०। ४३ मिला। इसमें अशुद्ध से पूर्व तुला की संख्या ७ राशिस्थान में जोड़ा तो ७। २२। १०। ४३ हुआ, इसमें अयनांश २१। ३१ । ४८ घटाने पर स्पष्ट प्रथम लग्न ७। ०। ३८। ५६ आया, इसीमें ६ राशि जोड़ने से सप्तम लग्न १। ०। ३८। ५६ हुआ॥ ३९–४२॥

भुक्तप्रकार से लग्नज्ञान—

एवं भुक्तांशकैर्भुक्तपलमानीय शोधयेत् ।
इष्टनाडीपलेभ्योऽथ गतराश्युदयानपि ॥४३॥
विलोमं यो न शुद्धयेत्सोऽशुद्धराशिस्ततः परम् ।
शेषं त्रिंशद्गुणं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥४४॥
अशुद्धराशिसंख्यायां हीनं तद्व्ययनांशकम् ।
आद्यलग्नं भवेदेतत्सषड्भं सप्तमं भवेत् ॥४५॥

इसी तरह सायनार्क के भुक्तांश पर से भुक्तपल लाकर पलात्मक इष्ट में घटाकर रविनिष्ठ राशि के पूर्वराशियों (यथा मेष के बाद मीन, उसके बाद कुम्भ इत्यादि) से पूरे २ मान जहाँ तक घट सके,घटा दे, जिसका पूरा मान न घट सके उसे अशुद्धसंज्ञक राशि समझे, बाद अन्तिम शेष को ३० से गुणा कर अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग देने पर जो लब्धि अंशादिक आवे वह लग्न का भोग्यांश होगा, उसको अशुद्ध राशि की संख्या में घटा दे तथा अयनांश भी हीन कर दे तो स्पष्ट प्रथमलग्न का राश्यादि आ जायगा। उसमें ६ राशि जोड़ने से सप्तम लग्न होगा।

उदाहरण—

यथा मध्य रात्रि के बाद किसी का जन्म इष्ट ५४। ३० पर हुआ है, तत्कालीन स्पष्ट सूर्य ४। २। ४०। ५६ और अयनांश २१। ३१। ४८ है तो सुविधा के लिये उस इष्ट को ६० में घटाने से रात्रिशेषेष्टकाल ६०—५४। ३० = ५। ३० हुआ, इसी पर भुक्त प्रकार से लग्नानयन करते हैं। ऊपरके कथनानुसार सूर्य में अयनांश जोड़ने पर सायनार्क ४। २४। १२। ४४ हुआ, इसके निर्दिष्ट अंशादि ही २४। १२। ४४ भुक्तांश है जिसको रविनिष्ठ राशि सिंह के उदयमान ३४७ से गुणा ८३२८। ४१६४। १५२६८ = ८४०१। ३८। २८ तीस से भाग दिया तो रविभुक्तपल २८० आया, इसको इष्ट (५। ३०) पल ३३० में घटाया तो केवल ५० रहा, इसमें इसके पूर्व कर्क का उदयमान ३४३ नहीं घट सकता, अतः कर्क ही

अशुद्ध हुआ। अब उस ५० शेष को ३० से गुण दिया १५०० अशुद्ध कर्कोदय ३४३ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि ४। २२। २३ आया, इसको अशुद्ध कर्क की संख्या ४ में घटाया ४–४। २२। २३ = ३। २५। ३७। ३७ अयनांश भी हीन किया तो ३। २५। ३७। ३७–२१। ३१। ४८ = ३। ४। ५। ४९ यही प्रथम लग्न-- हुआ। इसमें ६ राशि जोड़ने से सप्तम लग्न ९। ४। ५। ४९ आया॥ ४३–४५॥

विशेष—

चेदिष्टमाने नहि भुक्तभोग्यं शुद्ध्येत्तदेष्टं गुणितं खरामैः।
तत्स्वोदयाप्तांशविहीनयुक्तो रविर्भवेल्लग्नमिहाद्यसंज्ञम् ॥४६॥

यदि इष्टपल में भुक्तपल (भुक्तप्रकार), भोग्यपल (भोग्य प्रकार) नहीं घट सके तो ऐसी स्थिति में केवल इष्टपल को ३० से गुणा कर रविनिष्ठराशि के उदयमान से भाग दे तब जो लब्धि अंशादिक आवे वह सूर्य में घटा दे (भोग्यप्रकार में जोड़ दे) तो स्वयं प्रथमलग्न स्पष्ट हो जायगा।

उदाहरण—

इष्ट १। ५ = ६५ पल, स्पष्ट सूर्य ४। १। २। २० अयनांश २१। ३१। ४८ यहाँ पर भोग्यप्रकार से लग्नानयन के लिये 'सायनार्कस्य भोग्यांशाः' इसके अनुसार सायन सूर्य ४। २२। ५२। ८ के भोग्यांश ७। ७। ५२ को सिंह के उदयमान से गुणा २४२९। २४२९। १८२४४ = ५४७४। ३३। ४, तीस से भाग दिया तो भोग्यपल ८२ आया, यह इष्टपल ६५ में नहीं घट सकता, ऐसी स्थिति में इष्टपल ६५ को ३० से गुण दिया १९५० सिंह के उदयमान ३४७ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि ५। ३७। १० आया इसको स्पष्टसूर्य ४। १। २। २० में जोड़ा ४। ६। ३९। ३०, अयनांश २१। ३१। ४८ घटा दिया तो प्रथम लग्न ३। १५। ७। ४२ यही हुआ। (ऐसी स्थिति में स्वल्पान्तर से अयनांश का परिग्रहण न भी किया जाय तो क्षति नहीं) ऐसे ही भुक्तप्रकार में भी जानना चाहिये॥ ४६॥

भोग्य एवं भुक्त प्रकार का उपयोग-काल—

दिनार्धात्पूर्वकाले तु तत्कालार्काद्दिवागतात्।
इष्टकालात्समानेयं लग्नं भोग्यप्रकारतः॥ ४७॥

ततः सूर्यास्तकालान्तर्वर्त्तिकाले द्युशेषतः ।
सषड्भार्कात्सुखेनैव ज्ञेयं भुक्तप्रकारतः ॥ ४८ ॥
ततो रात्र्यर्धपर्यन्तं सषड्भार्कान्निशागतात् ।
भोग्यप्रकारतश्चैवं रात्र्यर्धादधिकेष्टके ॥ ४९ ॥
रात्रिशेषेष्टकालेन तत्कालार्काच्च केवलात् ।
भुक्तप्रकारतो लग्नानयने लाघवं भवेत् ॥ ५० ॥

यदि मध्याह्न के भीतर जन्म हो तो तात्कालिक सूर्य और दिनगत इष्ट (सूर्योदय से जन्मकाल तक) से भोग्यप्रकार से, यदि मध्याह्न के बाद सूर्यास्त के भीतर हो तो तात्कालिक सूर्य में ६ राशि जोड़ कर सषडभार्क एवं दिनशेष इष्ठ (जन्मकल से भावी सूर्यास्त तक) के द्वारा भुक्तप्रकार से, यदि सूर्यास्त के बाद मध्यरात्रि के भीतर जन्मकाल हो तो रात्रिगत इष्ट (सूर्यास्त से जन्मकाल तक) एवं सषड्भ रवि से भोग्य प्रकार के द्वारा, इसी तरह यदि अर्धरात्रि के बाद अग्रिम सूर्योदय के भीतर जन्म हो तो रात्रिशेष इष्ट (जन्मकाल से अग्रिम सूर्योदय तक) तथा केवल तत्कालिक सूर्य से भुक्तप्रकार के द्वारा लग्नानयन में लाघव होता है। (दिनशेष इष्ट—जन्म कालेष्ट को दिनमान में घटाने से, रात्रिगतेष्ट—तत्कालिकेष्ट में दिनमान को घटाने से, तथा रात्रिशेषेष्ट—तत्कालिक इष्ट को ६० में घटाने से होता है) ॥ ४७–५० ॥

अपर विशेष—

सूर्योदये तु तत्कालरविरेवाद्यलग्नकम् ।
तथा सूर्यास्तकाले तु रविरेवास्तलग्नकम् ॥ ५१ ॥

यदि ठीक सूर्योदयकाल में लग्न बनाना हो तो केवल उस समय का स्पष्ट सूर्य बना ले वही प्रथम लग्न स्पष्ट हो जायगा। एवं यदि सूर्यास्तकालिक लग्न जानना हो तो तत्कालिक स्पष्टसूर्य बना ले वह सप्तम लग्न होगा, उसमें ६ राशि जोड़ने से सूर्यास्तकालिक ठीक स्पष्ट प्रथम लग्न हो जायगा ॥ ५१ ॥

दशम लग्न साधन के लिये इष्ट-स्वरूप नत का ज्ञान—

(दिन में)

दिने दिनार्धादधिकेऽष्टमानेऽन्तरं तयोरेत्र परं नतं स्यात् ।
अल्पे तु पूर्वं नतमाहुरार्याः खलग्नसंसाधन इष्टरूपम् ॥५२॥

दिन में नत जानने के लिये, यदि इष्टकाल दिनार्ध से अधिक हो तो दोनों (दिनार्ध और इष्टकाल) के अन्तर करने से पश्चिम नत होता है। यदि दिनार्ध से इष्टकाल कम हो तो दोनों का अन्तर करने से पूर्व नत होगा।

उदाहरण--

किसी का जन्मकालिक इष्ट १६।५५, और उस दिन दिनमान ३२।१२ अर्थात् दिनार्ध १६।६ है। यहाँ पर दिनार्ध से इष्ट अधिक है, अतः दोनों का अन्तर १६।५५-१६।६=०।४९ यही पश्चिम नत हुआ। यदि इष्टकाल ७।२० मान लिया जाय तो दिनार्ध से इष्ट को कम होने के कारण दोनों का अन्तर १६।६-७।२०=८।४६ यह पूर्व नत हुआ। (इसीको इष्ट मानकर दशम लग्न का आनयन किया जाता है)॥५२॥

नत का ज्ञान (रात्रि में)

रात्रौ निशार्धादधिकं यदीष्टं परं नतं तद्विवरेण तुल्यम् ।
पूर्वं नतं रात्रिदलाल्पकेष्टे बोध्यं सुधीभिः पृथगेवमत्र ॥ ५३ ॥

रात्रि में जन्म होने पर यदि रात्रिमान इष्ट रात्र्यर्ध से अधिक हो तो दोनों के अन्तर रूप पश्चिम नत, तथा रात्र्यर्ध से अल्प इष्ट हो तो उन्हीं दोनों का अन्तर पूर्व नत होता है, इस प्रकार दिन रात्रि का अलग २ नत का ज्ञान करना चाहिये।

उदाहरण--

यथा रात्रिमान २८।४२ दिनमान ३१।१८ सूर्योदय से जन्मकाल तक का इष्ट ४६।२५ है तो इस इष्ट में दिनमान घटाने पर रात्रिगत इष्ट १५।७ यह रात्र्यर्ध १४।२१ से अधिक है, अतः इन दोनों का अन्तर १५।७-१४।२१=०।४६ यह पश्चिम नत हुआ, ऐसे ही पूर्व नत का उदाहरण मान लेना चाहिये ॥ ५३ ॥

कब किस प्रकार से दशम लग्न का ज्ञान करना—

सदा पूर्वनते भुक्तप्रकारेण परे नते।
भोग्यप्रकारतो रात्रौ सषड्भार्कात् खलग्नकम् ॥ ५४ ॥

दिन या रात्रि में पूर्व नत आने पर भुक्त प्रकार से, पश्चिम नत आने पर भोग्य प्रकार से दशम लग्नानयन करना। यदि रात्रिका हो तो तात्कालिक सूर्य में ६ राशि जोड़कर सषड्भ रवि से उसका ज्ञान करना उचित है ॥ ५४ ॥

दशम लग्न जानने का प्रकार—

लङ्कोदयैर्भुक्तपलं विशोध्य पलीकृतात्पूर्वनतादथैवम्।
परान्नताद्भोग्यपलं पुरोक्त्याऽन्यत्कर्म तत्स्याद्दशमाख्यलग्नम् ॥५५॥

यदि पूर्वनत हो तो लङ्कोदय के द्वारा सूर्य के भुक्तपल को, पश्चिमनत हो तो भोग्य पल को इष्टपल में घटावे और क्रिया प्रथम लग्नानयन की तरह भुक्त-भोग्य-प्रकार के अनुसार करे तब दशम लग्न बन जायगा।

उदाहरण—

यथा गत ५२ श्लोक के उदाहरण में पश्चिमनत ०।४९ आया इसीको इष्ट मानकर लङ्कोदय के द्वारा दशम लग्न का आनयन करना है। तत्कालिक सायन स्पष्ट सूर्य ४। २२। ४६, नतपल ४९ मात्र है तो 'सदा पूर्वनते भुक्तप्रकारेण' इसके कथनानुसार भोग्यप्रकार से करना उचित है, अतः सूर्यभुक्तांश २२। ४९ को ३० में घटा देने पर सूर्य का भोग्यांश ७।११ आया, इसको रविनिष्ठ राशि सिंह के लङ्कोदय २९९ से गुणा २०९३। ३२८९ = २१४७। ४९, तीस से भाग दिया तो लब्धि भोग्य पल ७१ आया। यह नतपल ४९ में नहीं घट सकता अतः 'चेदिष्टमाने नहि भुक्तभोग्यं' इस पद्य के अनुसार केवल नतपल (इष्टपल) ४९ को ३० से गुण दिया १४७० सिंहोदय २९९ से भाग दिया तो दशम लग्न का भुक्तांश ४। ५४। ५८ आया, यह सायन सूर्य ४। २०। ४९। ११ में जोड़ दिया और अयनांश घटा दिया तो दशम लग्न राश्यादि ४। ६। १२। ११ हुआ। इसमें ६ राशि जोड़ने पर चतुर्थ लग्न १०। ६। १२। ११ आया ॥ ५५ ॥

विशेष—

दिनार्धतुल्येष्टकाले खलग्नं रविरेव हि ।
निशादलेष्टकाले तु रविरेव चतुर्थकम् ॥५६॥

यदि ठीक मध्याह्नकाल में दशम लग्न जानना हो तो दिनार्ध तुल्य इष्ट से चालन देकर जो तात्कालिक सूर्य हो वही दशमलग्न तथा मध्यरात्रि में जानना हो तो मध्य-रात्रिकालिक सूर्य ही को चतुर्थ लग्न समझना चाहिये। चतुर्थ लग्न में ६ राशि जोड़ने से दशम लग्न हो जाता है ॥ ५६ ॥

सन्धि सहित द्वादशभावों का साधन—(मानसागरी)

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषं षड्भिर्विभाजितम् ।
राश्यादि योजयेल्लग्ने सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः ॥५७॥
सन्धिः षडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः ।
धनभावः षडंशाढ्यः सन्धिर्धनतृतीययोः ॥५८॥
षडंशसंयुतः सन्धिस्तृतीयो भाव उच्यते ।
षडंशाढ्यस्तृतीयः स्यात् सन्धिर्भ्रातृचतुर्थयोः ॥५९॥
तृतीयसन्धिरेकाढ्यस्तुर्यः सन्धिर्भवेदिह ।
द्व्याढ्यस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवेत्स्फुटः ॥६०॥
त्र्याढ्यो द्वितीयसन्धिः स्यात्सन्धिः पञ्चमभावजः ।
धनभावो वेदयुतो रिपुभावः प्रजायते ॥६१॥
लग्नसन्धिः पञ्चयुतः सन्धिः स्याद्रिपुभावजः ।
लग्नाद्याः सन्धिसहिता भावाः षड्राशिसंयुताः ॥६२॥
सप्तमाद्या भवन्तीह भावाः सर्वे ससन्धयः ।
आसन्नभावयोर्योगदलं संधिः प्रकीर्त्यते ॥६३॥
खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम् ।

चतुर्थ लग्न में प्रथम लग्न को घटा कर शेष को ६ से भाग देने पर जो लब्धि हो वह (षष्ठांश) लग्न में जोड़ने से प्रथम भाव की विराम और द्वितीय भाव की आरम्भ सन्धि होगी, इस में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव, इसमें षष्ठांश जोड़ने से द्वि० भा० की सन्धि इस प्रकार उत्तरोत्तर षष्ठांश जोड़ने से तीन भाव और तीन संधि का ज्ञान हो जाता है। तृतीय संधि में एक जोड़ने से चतुर्थ संधि, तृतीय भाव में २ जोड़ने से पञ्चम भाव, द्वितीय सन्धि में ३ जोड़ने से पञ्चम सन्धि, द्वितीय भाव में ४ जोड़ने से षष्ठ भाव, एवं प्रथम सन्धि में ५ जोड़ने से षष्ठ सन्धि होगी। इन्हीं छः भाव और छः सन्धियों में ६ जोड़ने पर क्रमसे सप्तम अष्टम, नवम दशम, एकादश, द्वादश भाव एवं उनकी सन्धियाँ हो जायँगी। (भावों के नाम—१ तनु, २ धन, ३ सहज, ४ सुहृत्, ५ सुत, ६ रिपु, ७ जाया, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय, १२ व्यय, ये हैं) समीपस्थ दो भावों के योगार्ध-तुल्य सन्धि (पूर्व का विराम अग्रिम का प्रारम्भ) कही जाती है। भाव के समान ग्रह रहने से भावफल पूरा तथा सन्धि के समान रहने से शून्य फल होता है।

उदाहरण

यथा प्रथम लग्न ७।०।३८।५६ को चतुर्थ लग्न १०।६।१२।११ में घटाया तो शेष २।५।३३।१५ इसमें ६ से भाग देने पर लब्धि (षष्ठांश) ०।१५।५५।३२।

इसीको प्रथम लग्न में जोड़ने से प्रथम संधि, ततः अग्रिम भाव, सन्धि—

प्र० लग्न ७ । ० । ३८ । ५६
+० । १५ । ५५ । ३२ (षष्ठांश)

प्र० सन्धि = ७ । १६ । ३४ । २८
+० । १५ । ५ । ३२

द्वि० भाव = ८ । २ । ३० । ०
+० । १५ । ५५ । ३२

द्वि० संधि = ८ । १८ । २५ । ३२
+० । १५ । ५५ । ३२

तृ० भाव = ९ । ४ । २१ । ४
+० । १५ । ५५ । ३२

तृ० संधि = ९ । २० । १६ । ३६

इस प्रकार तीन भाव, तीन संधि का ज्ञान हो गया। अब 'तृतीयसंधिरेकाढ्यः' इसके अनुसार :—

चतुर्थ संधि = तृ. सं. + १ = ९।२०।१६। ३६ + १ = १०।२०।१६।३६

पञ्चम भाव = तृ. भा. + २ = ९ । ४ । २१ । ४ + २ = ११।४।२१।४

पञ्चम संधि = द्वि. सं. + ३ = ८।१८।२५। ३२ + ३ = ११।१८।२५।३२

षष्ठ भाव = द्वि. भा. + ४ = ८ । २ । ३०।० + ४ = ०।२।३०।०

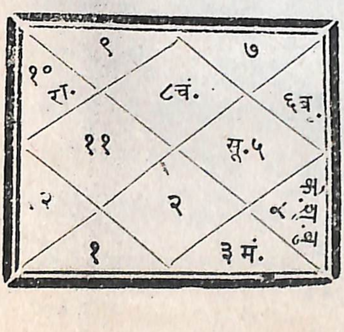
षष्ठ सन्धि = प्र. सं. + ५ = ७।१६।३४।२८ + ५ = ०।१६।३४।२८।

इस तरह ससन्धि छः भाव हो गये। इन्हीं में छः २ राशि जोड़ने से ससन्धि सप्तमादि छः भाव होंगे। समीपस्थ दो भावों के योग का आधा संधि कहा गया है ॥ ५७–६३ ॥

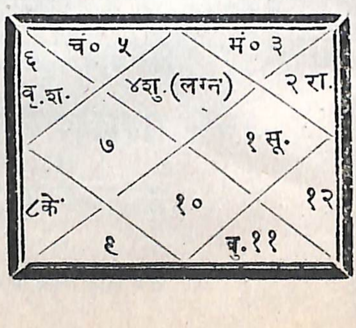
छात्रों की सुविधा के लिये एक जातक के जन्माङ्गचक्र स्पष्ट ग्रह, एवं इस प्रकार आये हुये भावों का विवरण देते हैं। यथा—

श्री विक्रम संवत् १९९१ शाके १८५६ श्रावण शुक्ल अष्टमी शनि (ता० १८–८–३४) इष्टघटी १६।५५ विशाखानक्षत्र ८।५२ दिनमान ३२।१८, भयात ७।४१ भभोग ५८।७ (अनुराधा), अयनांश २१।३१।४८ तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ४।१।१७।१३, प्रथम लग्न ७।०।३८।५६ दशम लग्न ४।६ १२। ११ होरालग्न १।२८।३८।५६।

जन्माङ्गचक्र—(ह)



नवांशकुण्डली—



जन्मकालिक स्पष्ट ग्रह—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
राशि	४	७	२	३	५	३	९	९	३
अंश	१	५	२८	२४	२९	८	२७	१६	१६
कला	१७	५	३५	२९	६	५५	५७	६	६
विकला	१३	४५	४३	५५	४९	५२	५५	१५	१५
गति	ग.	ग़.	ग.	ग.	ग.	ग.	ग.	ग.	ग.
कला	५७	८२५	३७	१०१	९	७१	५	३	३
विकला	३८	५६	२६	५२	३५	१३	३	११	११

ससन्धि द्वादश भाव—

भाव		रा.	अं.	क.	चि.	सन्धि	रा.	अं.	क.	वि.
१	तनु	७	०	३८	५६	सं०	७	१६	३४	२८
२	धन	८	२	३०	०	सं०	८	१८	२५	३२
३	सहज	९	४	२१	४	सं०	९	२०	१६	३६
४	सुहृत्	१०	६	१२	११	सं०	१०	२०	१६	३६
५	सुत	११	४	२१	४	सं०	११	१८	२५	३२
६	रिपु	०	२	३०	०	सं०	०	१६	३४	२८
७	जाया	१	०	३८	५६	सं०	१	१६	३४	२८
८	मृत्यु	२	२	३०	०	सं०	२	१८	२५	३२
९	धर्म	३	४	२१	४	सं०	३	२०	१६	३६
१०	कर्म	४	६	१२	११	सं०	४	२०	१६	३६
११	आय	५	४	२१	४	सं०	५	१८	२५	३२
१२	व्यय	६	२	३०	०	सं०	६	१६	३४	२८

दशवर्ग-विचार—

गृहं होराऽथ द्रेष्काणः सप्तांशो नवमांशकः ।
दशांशो द्वादशांशश्च त्रिंशांशः षोडशांशकः ॥६४॥
षष्टंयशश्चेति विज्ञेयं दशवर्गपदं बुधैः ।
यथाक्रमेण सर्वेषां निरूपणमथोच्यते ॥६५॥

अतः पर ग्रहों की विशेष अवस्था पर से फलादेश के लिये दशवर्ग कहते हैं जो

कि गृह १, होरा २, द्रेष्काण ३, सप्तांश ४, नवमांश ५, दशांश ६, द्वादशांश ७, त्रिशांश ८, षोड़शांश ९, एवं षष्ट्यंश १०, के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनका विवरण यथा क्रम नीचे दिया जाता है॥ ६४-६५॥

(१) राशियों के अधिपति--

सूर्यः सिंहस्य कर्कस्य चन्द्रो भौमोऽलिमेषयोः।
बुधः कन्यामिथुनयोर्गुरुर्वै मीनचापयोः॥६६॥
तुलावृषपतिः शुक्रः शनिर्मकरकुम्भयोः।
कुजाद्या द्विद्विराशीशा रवीन्द्वेकैकराशिपौ॥६७॥

सूर्य सिंह का, चन्द्रमा कर्क का, मंगल वृश्चिक-मेष का, बुध कन्या-मिथुन का, बृहस्पति मीन धनु का, शुक्र तुला-वृष का तथा शनैश्चर मकर-कुम्भ का स्वामी है। इस प्रकार सूर्य-चन्द्र केवल एक २ राशि के तथा मंगलादि पाँच ग्रह दो २ राशियों के स्वामी सिद्ध होते हैं॥ ६६-६७॥

राशि-स्वामि-चक्र--

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
स्वामी	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०

(२) होरेश--

समराशाविन्दुरव्योर्होरे पञ्चदशांशके।
विषमे तु विलोमेन रवीन्द्वोर्भवतः सदा॥६८॥

सम राशियों (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) में पहिली होरा चन्द्रमा की, दूसरी सूर्य की होती है, विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) में विलोम अर्थात् पहिली होरा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की होती है, होरा का मान १५ अंश होता है॥ ६८॥

होराचक्र--

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	
१५ तक	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	१
३० तक	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	चं०	सू०	२

(३) द्रेष्काण के स्वामी—

स्वपञ्चनवमेशाः स्युर्द्रेष्काणेशाश्च राशिषु ।
राशित्रिभागो द्रेष्काणो दशभागमितो भवेत् ।।६९।।

प्रत्येक राशि में प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, द्वितीय द्रेष्काण उससे पञ्चम राशि का, तृतीय द्रेष्काण उससे नौवीं राशि का होता है, द्रेष्काण का मानराशि ३० का तृतीयांश १० अंश होता है ।

द्रेष्काण-चक्र—

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	
१० तक	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	१
२० तक	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	मे०	वृ०	मि०	क०	२
३० तक	ध०	म०	कुं०	मी०	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	३

विशेष—जिस राशि का जो द्रेष्काण है उसके स्वामी का भी वही माना जाता है, यथा मेष में प्रथम मेष का अर्थतः उसके स्वामी मंगल का, द्वितीय सिंह का अर्थतः उसके स्वामी सूर्य का, एवं तृतीय धनु अर्थात् उसके स्वामी बृहस्पति का द्रेष्काण इसी तरह आगे नवांश—द्वादशांश आदि में भी समझना चाहिये ।।६९ ।।

(४) सप्तमांश के अधिपति—

आजे सप्तांशपा ज्ञेयास्तदादीशाः समे तथा ।
तत्सप्तमादिराशीशाः क्रमशः परिकीर्त्तिताः ।।७०।।
राशिमानं सप्तभक्तं लब्धिरंशाश्चतुर्मिताः ।
कलाः सप्तदशाष्टौ च विकलास्तन्मितिर्भवेत् ।।७१।।

विषम राशियों (मेष, मिथुन इत्यादि) में उसी राशि से आरम्भ कर सप्तम राशि तक (उनके अधिपति ग्रहों के) क्रमसे सप्तांश होते हैं। सम राशियों (वृष, कर्क इत्यादि) में उससे सप्तम राशि से शुरू कर (तदादि राशियों के स्वामि-ग्रहों के) सप्तांश होते हैं। सप्तांश का मान जानने के लिये राशिमान (३० अंश) में ७ से भाग देने पर पहले ४ अंश फिर १७ कला एवं ८ विकला लब्धि आती है,

यही सप्तांश का मान होगा। इसी को उत्तरोत्तर जोड़ने से सातों सप्तांश के मान क्रम से ४।१७।८।८।३४।१७ इत्यादि होंगे जो कि चक्र में साफ हैं (सूक्ष्मलब्धि के विचार से विकला के बाद भी कुछ शेष रह जाता है, जिसका परिग्रहण पद्य में नहीं किया गया स्वल्पान्तर से) यथा—

७) ३० (४
२८
―――
२
×६०
―――
७) १२० (१७
७
―――
५०
४९
―――
१
×६०
―――
७) ६० (८
५६
―――
४ (शेष त्याज्य) ॥ ७०–७१ ॥

सप्तांशचक्र—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
४।१७।८	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	१
८।३४।१७	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	२
१२।५१।२५	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	३
१७।८।३४	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	४
२१।२५।४२	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	५
२५।४२।५१	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	६
३०।०।०	०	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	७

चक्रोद्धार—

मेषादितः समारभ्य तदादीनां क्रमेण हि।
विन्यासतोऽन्तिमो मीने तस्यैव सप्तमांशकः ॥ ७२ ॥

राश्यादि पर से सप्तांश ज्ञान—

गतराशिः सप्तगुणो वर्तमानेन संयुतः ।
अर्कैर्हृतः शेषतुल्योऽजादेः सप्तांशको भवेत् ॥ ७३ ॥

गत-राशि संख्या को ७ से गुणा कर वर्त्तमान राशिगत जिस सप्तांश पर ग्रह या लग्न पड़ता हो उसकी संख्या जोड़ दे, १२ से भाग देने पर शेष-तुल्य मेषादिक्रम से सप्तांश उस राशि का होता है। उदाहरणार्थ—लग्नराश्यादि ९।५।७ में गतराशि ९ को ७ से गुणा ६३ हुआ, इसमें अंशादि ५।७ को द्वितीय सप्तांश में पड़ने के कारण २ जोड़ा तो ६३+२=६५ अब १२ से भाग दिया तो शेष ५ का सप्तांश सिद्ध हुआ—जो चक्र में भी साफ है ॥ ७३ ॥

(५) नवमांश के अधिपति—

मेषसिंहधनुर्मेषादिकाः प्रोक्ता नवांशकाः ।
मृगकन्यावृषेष्वेवं मृगाद्याश्च तुलादिकाः ॥ ७४ ॥
तुलामिथुनकुम्भेषु कर्कटाद्यास्तथैव च ।
मीनवृश्चिककर्केषु ज्ञेया विज्ञजनैः सदा ॥ ७५ ॥
नवोद्धृते राशिमाने लब्धिरंशत्रयं तथा ।
कलाश्च विंशतिः सैव नवांशस्य मितिर्भवेत् ॥ ७६ ॥

मेष, सिंह, धनु राशियों में मेषादिक (मेष से धनु तक) राशियों के नवांश होते हैं। मकर, कन्या, एवं वृष इन राशियों में मकरादिक (मकर से कन्या तक) राशियों के, तुला, मिथुन, कुम्भ में तुलादिक (तुला से मिथुन तक) राशियों के, तथा मीन, वृश्चिक कर्क में कर्कादिक (कर्क से मीन तक) राशियों के नवांश होते हैं। नवांश का मान जानने के लिये राशिमान (३०) को ९ से भाग देने पर लब्धि ३ अंश २० कला आती है, यही एक नवांश का मान होता है। इसीको उत्तरोत्तर जोड़ने से ३। २०, ६।४०, १० । ०, इत्यादि चक्र-लिखित उपपन्न होते हैं॥ ॥७४–७६॥

नवांश-चक्र---

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
३।२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	१
६।४०	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	२
१०।०	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	३
१३।२०	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	४
१६।४०	सिं.	बृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	५
२०।०	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	६
२३।२०	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	७
२६।४०	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	बृ.	सिं.	वृ.	कुं.	८
३०।०	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	९

चक्रोद्धार---

इत्थं मेषादिमारभ्य मेषादेर्न्यासतः स्वयम् ।
मीतान्तिमो हि मीनस्य नवांशः परिजायते ।। ७७ ।।

राश्यादि पर से नवांशज्ञान---

नवगुणिता गतराशेः संख्या युक्ता तु वर्त्तमानेन ।
द्वादशहृतावशेषे मेषादिनवांशको बोध्यः ।। ७८ ।।

गत राशि की संख्या को ९ से गुणा कर वर्त्तमान राशिस्थ नवांश की संख्या जोड़ दे, उसमें १२ से भाग देने पर (लब्धि को त्याग कर) जो शेष बचे तत्तुल्य मेष से गिनकर जो राशि आवे उसी का नवांश जानना चाहियें।

उदाहरण---

किसी का जन्मलग्न राश्यादि ५।९।७।१५ है, तब जानना है किस नवांश में लग्न पड़ता है, अतः पद्य के अनुसार गतराशि सिंह जिसकी संख्या ५ को ९ से गुणने पर ९×५=४५ हुआ, इसमें (९।७।१५) यह तीसरे नवांश में पड़ता है जिसकी संख्या ३ जोड़ा तो ४५+३=४८ आया, इसमें १२ से भाग देने पर १२ (या शून्य) शेष रहा अतः मीन के नवांश में लग्न है, सिद्ध हुआ। इसी तरह ग्रहों के राश्यादि में भी नवांश का ज्ञान किया जाता है ।। ७७-७८ ।।

(६) दशमांश के स्वामी—

विषमेषु तदादीनां दशांशा राशिषु स्मृताः ।
समेषु नवमादीनां क्रमशः प्रभवन्ति हि ।। ७९ ।।

विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह आदि) में उसी राशि से आरम्भ कर दशवीं तक राशियों के दशांश होते हैं। परन्तु समराशियों (वृष, कर्क कन्या आदि) में उससे नौवीं राशि को आरम्भ कर (दश तक) राशियों के दशांश क्रम से कहे गये हैं (प्रत्येक दशमांश तीन २ अंश का होता है) ।। ७९ ।।

दशमांश-चक्र—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
३।०	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	१
६।०	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	सि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	२
९।०	मि.	मी	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	३
१२।०	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	४
१५।०	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	५
१८।०	क.	मि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	६
२१।०	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	बृ.	७
२४।[illegible]	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	८
२७।०	ध.	क.	क.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	बृ.	तु.	क.	९
३०।०	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	बृ.	सि.	१०

(७) द्वादशांश के अधिपति—

प्रत्येकस्मिन् राशौ तत्तद्राशेः प्रवृत्तानाम् ।
राशीनां क्रमतो वै द्वादशभागाः परिज्ञेयाः ।।८०।।

सभी राशियों में उसी राशि से आरम्भ कर अग्रिम राशियों के द्वादशांश होते हैं। (राशिमान ३० में १२ से भाग देने पर लब्धि २ अंश ३० कला आती है, यही द्वादशांश का मान है) ।। ८० ।।

द्वादशांश-चक्र—

राशि	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	
२।३०	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	व.	म.	कुं.	मी.	१
५।०	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	क.	मी	मे.	२
७।३०	मि	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	३
१०।०	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	क.	मी	मे.	वृ.	मि	५
१२।३०	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	लि.	क.	५
१५।०	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि	क.	सि	६
१७।३०	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	७
२०।०	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	८
२२।३०	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	९
२५।०	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	१०
२७।३०	कु.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	११
३०।०	म.	मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	१२

(८) षोड़शांश के अधिपति—

मेषे मेषाद्वृषे सिंहान्मिथुने धनुषस्तथा ।
षोडशांशा भवन्त्येव तच्चतुर्थे तदादिकात् ।।८१।।
येषामीशा क्रमादोजे ब्रह्मा विष्णुः शिवो रविः ।
चत्वारश्चतुरावृत्त्या षोडशोत्क्रमतः समे ।।८२।।
राशिमाने नृपैर्भक्ते लब्धमेकोंऽशकस्तथा ।
द्विपञ्चाशत्कलास्त्रिंशद्विकलाः षोडशांशकः ।।८३।।

मेष में मेषादिक, वृष में सिंहादिक, मिथुन में धनुरादिक राशियों के षोड़शांश होते हैं, इनसे चतुर्थ राशि में भी इसी क्रम से षोड़शांश कहे गये हैं, अर्थात् मेष से चतुर्थ कर्क में मेषादिक, वृष से चतुर्थ सिंह में सिंहादिक, मिथुन से चतुर्थ कन्या में धनुरादिक, फिर कर्क से चतुर्थ तुला में मेषादिक, सिंह से चतुर्थ वृश्चिक में सिंहादि इत्यादि क्रम से षोड़शांश जानना चाहिये। जिनके स्वामी स्वतन्त्र रूप से—विषम राशियों में ब्रह्मा, विष्णु शिव और रवि ये चार क्रम से चार आवृत्तियों में १६

होकर षोड़शांश के अधिपति होते हैं। सम राशियों में उत्क्रम से अर्थात् रवि, शिव, विष्णु, ब्रह्मा इस प्रकार चार आवृत्तियों में स्वामी होते हैं। षोड़शांश का मान —एक राशि (३०) में १६ का भाग देने पर लब्धि १ अंश ५२ कला ३० विकला आती है यही एक षोड़शांश का मान है॥ ८१–८३॥

षोडशांश चक्र—

स्वामी	समराशि	विषमराशि	स्वामी	अंशादि अं.	क.	वि	सं.
	वृ. क. क. वृ. म.	मी मे. मि सिं तु. ध. कु.					
रवि	सिं मे. ध. सिं मे.	ध. मे. ध. सिं.मे. ध. सिं	ब्रह्मा	१	५२	३०	१
शिव	क. वृ. म. क. वृ.	म. वृ. म. क. वृ. म. क.	विष्णु	३	४५	०	२
विष्णु	तु. मि कुं. तु. मि.	कु. मि कुं. तु. मि कुं. तु.	शिव	५	३७	३०	३
ब्रह्मा	वृ. क. मी वृ. क.	मी क. मी.वृ. क. मी वृ.	रवि	७	३०	०	४
रवि	ध. सिं मे. ध. सिं	मे. सिं मे. ध. सिं मे. ध.	ब्रह्मा	९	२२	३०	५
शिव	म. क. वृ. म. क.	वृ. क. वृ. म. क. वृ. म.	विष्णु	११	१५	०	६
विष्णु	कुं. तु. मि कु. तु.	मि तु. मि.कुं. तु. मि कुं.	शिव	१३	७	०	७
ब्रह्मा	मी वृ. क. मी वृ.	क. वृ. क. मी वृ. क. मी.	रवि	१५	०	०	८
रवि	मे. ध. सिं मे. ध.	सिं ध. सिं मे. ध. सिं मे.	ब्रह्मा	१६	५२	०	९
शिव	वृ. म. क. वृ. म.	क. म. क. वृ. म. क. वृ.	विष्णु	१८	४५	०	१०
विष्णु	मि कुं. तु. मि कु.	तु. कुं. तु. मि कुं. तु. मि.	शिव	२०	३७	३०	११
ब्रह्मा	क. मी वृ. क. मी.	वृ. मी वृ. क. मी वृ. क.	रवि	२२	३०	०	१२
रवि	सिं मे. ध. सिं मे.	ध. मे. ध. सिं मे. ध. सिं	ब्रह्मा	२४	२२	३०	१३
शिव	क. वृ. म. क. वृ.	म. वृ. म. क. वृ. म. क.	विष्णु	२६	१५	०	१४
विष्णु	तु. मि कु. तु. म.	कु. मि कुं. तु. मि कुं. तु.	शिव	२७	७	३०	१५
ब्रह्मा	वृ. क. मी वृ. क.	मी क. मी वृ. क. मी वृ.	रवि	३७	०	०	१६

(९) त्रिशांश-स्वामी—

पञ्चेषुनागाद्रिशरांशकानां कुजार्किजीवज्ञसिताः क्रमेण।
ओजेषु, युग्मेषु विलोमरीत्या त्रिशांशकानामधिपास्त एव ॥८४॥

विषम राशियों में ५, ५, ८, ७, ५ आरम्भ से इन अंशों के अधिपति क्रम से

मंगल, शनैश्चर, बृहस्पति, बुध और शुक्र होते हैं (आरम्भ के ५ अंश तक मंगल, ततः पर ५ अंश तक शनि इत्यादि) समराशियों में विलोम अर्थात् इन्हीं अंशों के स्वामी प्रथम शुक्र, द्वितीय बुध, तृतीय गुरु, चतुर्थ शनि, पञ्चम मंगल इस प्रकार त्रिशांशेश होते हैं (त्रिशांश का मान केवल १ अंश होता है) ॥ ८४ ॥

अंश	विषम राशि						सम राशि					
	मे.	मि.	सि.	तु.	ध.	कु.	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.
५ + ५ = १०	श.	श.	श.	श.	श.	श.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.
१० + ८ = १८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.
१८ + ७ = २५	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.
२५ + ५ = ३०	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.

(१०) षष्टचंश--

ओजे षष्ट्यंशकाधीशा घोररक्षःसुरादयः ।
क्रमेणोत्क्रमतो युग्मे इन्दुरेखादयः स्मृताः ॥ ८५ ॥

षष्टचंशों के स्वामी--(सर्वार्थचिन्तामणि)

घोरांशको राक्षसदेवभागौ कुबेररक्षोगणकिन्नरांशाः ।
भ्रष्टः कुलघ्नो गरलाग्निसंज्ञौ मायांशकः प्रेतपुरीषभागः ॥ ८६ ॥
अपां पतिर्देवगणेशभागः कलाहिभागावमृतांशुचन्द्रौ ।
मृद्वंशकः कोमलपद्मभागौ लक्ष्मीशवागीशदिगम्बरांशाः ॥ ८७ ॥
देवार्द्रभागौ कलिनाशभागः क्षितीश्वरांशः कमलाकरांशः ।
क्रमेण मन्दात्मजमृत्युकालदावाग्निघोराधमकण्टकाश्च ॥ ८८ ॥
सुधामृतांशौ परिपूर्णचन्द्रविषप्रदग्धौ कुलनाशमुख्यौ ।
वंशक्षयोत्पातककालरूपाः सौम्यश्च मृद्वंशसुशीतलांशौ ॥ ८९ ॥

दंष्ट्राकरालेन्दुमुखप्रवीणकालाग्निदण्डायुधनिर्मलांशाः ।
शुभाशुभांशावतिशीतलांशः सुधापयोधिभ्रमणेन्दुरेखाः ॥ ६० ॥

विषम राशियों में षष्टयंशों के अधिपति क्रम से घोर, राक्षस, देव, कुबेर इत्यादि (इन्दुरेखा पर्यन्त ६०) होते हैं एवं समराशियों में ये ही विलोम से इन्दुरेखा, भ्रमण, सुधापयोधि, अतिशीतल इत्यादि घोर पर्यन्त देवगण षष्टयंशों के स्वामी कहे गये हैं। (उन सबों के नाम विस्तार के भय से यहाँ न देकर केवल चक्र ही में रखा है, षष्टयंश चक्र का भी समावेश दो पृष्ठों में किया गया है जिसमें मेषादि राशियों के नाम १, २, ३ इत्यादि अङ्कों के द्वारा ही अङ्कित किये गये हैं)॥८५-६०॥

षष्ट्यंशचक्र—(क)

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	विषमस्वामी	समस्वामी	अंशादि
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१ घोर	६० इन्दुरेखा	०।३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२ राक्षस	५९ भ्रमण	१। ०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	३ देव	५८ सुधासागर	१।३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	४ कुबेर	५७ अतिशीत	२। ०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	५ रक्ष	५६ अशुभ	२।३०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	६ किन्नर	५५ शुभ	३। ०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	७ भ्रष्ट	५४ निर्मल	३।३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	८ कुलहन्ता	५३ दण्डायुध	४। ०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	९ गरल	५२ कालाग्नि	४।३०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१० अग्नि	५१ प्रवीण	५। ०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	११ माया	५० इन्दुमुख	५।३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१२ यम	४९ दंष्ट्राकराल	६। ०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१३ वरुण	४८ शीतल	६।३०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१४ इन्द्र	४७ मृदु	७। ०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	१५ काल	४६ सौम्य	७।३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	१६ नाग	४५ काल	८। ०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	१७ अमृत	४४ उत्पात	८।३०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	१८ चन्द्र	४३ वंशक्षय	९। ०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१९ मृदु	४२ मुख्य	९।३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२० कोमल	४१ कुलनाश	१०। ०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२१ कमल	४० विषदग्ध	१०।३०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२२ विष्णु	३९ पूर्णचन्द्र	११। ०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	२३ सरस्वती	३८ अमृत	११।३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	२४ दिगम्बर	३७ सुधा	१२। ०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२५ देव	३६ कण्टक	१२।३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२६ आर्द्र	३५ आमय	१३। ०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२७ कलिनाश	३४ घोरा	१३।३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२८ क्षितीश	३३ दावानल	१४। ०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	२१ कमलाकर	३२ काल	१४।३०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३० मन्दपुत्र	३१ मृत्यु	१५। ०

षष्टयंशचक्र—(ख)

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	विषमस्वामी	समस्वामी	अंशादि
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	३१ मृत्यु	३० मन्दपुत्र	१५।३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	३२ काल	२९ कमलाकर	१६। ०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	३३ दावानल	२८ क्षितीश	१६।३०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	३४ घोरा	२७ कलिनाथ	१७। ०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	३५ अधम	२६ आर्द्र	१७।३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	३६ कण्टक	२५ देव	१८। ०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	३७ सुधा	२४ दिगंबर	१८।३०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	३८ अमृत	२३ सरस्वती	१९। ०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	३९ पूर्णचन्द्र	२२ विष्णु	१९।३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	४० विषदग्ध	२१ कमल	२०। ०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	४१ कुलनाश	२० कोमल	२०।३०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	४२ मुख्य	१९ मृदु	२१। ०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	४३ वंशक्षय	१८ चन्द्र	२१।३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	४४ उत्पात	१७ अमृत	२२। ०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	४५ काल	१६ नाश	२२।३०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	४६ सौम्य.	१५ काल	२३। ०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	४७ मृदु	१४ इन्द्र	२३।३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	४८ शीतल	१३ वरुण	२४। ०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	४९ दंष्ट्राकराल	१२ यम	२४।३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	५० इन्दुमुख	११ माया	२५। ०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५१ प्रवीण	१० अग्नि	२५।३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५२ कालानल	९ गरल	२६। ०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	५३ दण्डायुध	८ कलहन्ता	२६।३०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	५४ निर्मल	७ भ्रष्ट	२७। ०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	५५ शुभ	६ किन्नर	२७।३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	५६ अशुभ	५ रक्ष	२८। ०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५७अतिशीत-	४ कुबेर	२८।३०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५८सुधासागर	३ देव	२९। ०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	५९ भ्रमण	२ राक्षस	२९।३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६० इन्दुरेखा	१ घोर	३०। ०

षष्ट्यंश—फलविचार—

क्रूरषष्ट्यंशगाः सर्वे नाशयन्ति खचारिणः ।
अपि पूर्णबलैर्युक्ताः स्वोच्चमूलत्रिकोणगाः ॥ ६१ ॥
स्वर्क्षकेन्द्रोत्तमांशस्था मित्रक्षेत्रत्रिकोणगाः ।
सप्तवर्गोद्भवस्वांशस्वाधिमित्रांशकान्विताः ॥ ६२ ॥

कोई भी ग्रह अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, स्वनवांश, मित्रनवांश, मित्रत्रिकोण आदि उत्तम स्थान में रहते पूर्णबली होने पर भी यदि षष्ट्यंश के विचार से क्रूरांशों में पड़ जायँ तो पूर्णबलजनित अपने शुभ फल को नाश कर जातक के लिये अशुभ फल देने वाले हो जाते हैं। अर्थतः दशवर्गों में षष्ट्यंश ही प्रधान है। इन ६० षष्ट्यंशों में २७ क्रूरांश शेष ३३ शुभांश हैं जो कि नाम ही से व्यक्त हैं ॥ ६१–६२ ॥

दशवर्ग में विशेष विचार—

वर्गा इमे दश प्रोक्ताः पूर्वाचार्यैर्महर्षिभिः ।
भवन्ति वर्गसंयोगे पारिजातादिसंज्ञकाः ॥ ६३ ॥
त्रिकारिनीचगेहस्था ग्रहा बलविवर्जिताः ।
मरणावस्थगाश्चेत्तु पारिजातादिनाशकाः ॥ ६४ ॥

प्राचीन आचार्य एवं ऋषियों ने जो दशवर्ग कहा है उनमें से दो, तीन, चार आदि अनुकूल वर्ग रहने से पारिजात, उत्तम, गोपुर आदि विशिष्ट संज्ञायें होती हैं (अग्रिम श्लोकों में देखिये), परन्तु जो ग्रह त्रिक (६, ८, १२) में, शत्रुगृह में, नीच में, अथवा मरणावस्था में रहें वे बलहीन होने के कारण पारिजात, गोपुर आदि उत्तम-फलकारक योगों को विफल कर देते हैं ॥ ६३–६४ ॥

पारिजातादि-संज्ञा—

वर्गद्वयं पारिजातं षड्भिः पारावतांशकः ।
उत्तमं तु त्रिवर्गं हि चतुर्वर्गं तु गोपुरम् ॥ ६५ ॥

वर्गपञ्चकसंयोगे सिंहासनमुदीर्यते ।
सप्तभिर्देवलोकः स्यादष्टभिश्च स एव हि ॥ ९६ ॥
ऐरावतं तु नवभिः फलं तेषां पृथक् पृथक् ।
दशवर्गस्य संयोगे विदुर्वैशेषिकांशकम् ॥ ९७ ॥

पूर्वोक्त दशवर्गों में दो वर्ग अनुकूल रहने पर पारिजात (१) तीन से उत्तम (२) चार से गोपुर (३) पाँच से सिंहासन (४) छः से पारावत (५) सात तथा आठ से देवलोक (६) नौ से ऐरावत (७) एवं दश से वैशेषिक (८) संज्ञा होती है ॥ ९५-९७ ॥

ग्रहों की स्थिति पर लज्जितादि संज्ञा—(संकेतकौमुदी)

ग्रहाणां षड्विधा भावा ये प्रोक्ताः शम्भुना पुरा ।
तत्सर्वमखिलं सूक्ष्मं लिख्यतेऽत्र मयाधुना ॥ ९८ ॥
लज्जितो गर्वितश्चैव क्षुधितस्तृषितस्तथा ।
मुदितः क्षोभितश्चैवं ग्रहभावाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ९९ ॥

ग्रहों की अवस्थिति से पहले श्रीशङ्कर जी ने जो उनके छः प्रकार के स्वभावों को कहा है, उनका वर्णन भलीभाँति यहाँ करता हूँ । वे छः भाव ये हैं—लज्जित (१), गर्वित (२), क्षुधित (३), तृषित (४), मुदित (५), एवं क्षोभित (६) ॥ ९८-९९ ॥

(१) लज्जित—

परगेहगतः खेटो राहुयुक्तो यथा तथा ।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह उच्यते ॥ १०० ॥

जो ग्रह अन्य ग्रहों की राशि (अपने उच्च के अतिरिक्त में) राहु के साथ या सूर्य, शनि, मङ्गल के साथ हो वह लज्जित कहा जाता है ॥ १०० ॥

(२) गर्वित—

तुङ्गस्थानगतो यश्च त्रिकोणेऽपि भवेत्पुनः ।
गर्वितः स निगदितो मुनिभिः कृतनिश्चयैः ॥ १०१ ॥

जो ग्रह अपनी उच्चराशि में रहते त्रिकोण (९, ५) में पड़ जाय वह गर्वित कहा गया है॥ १०१॥

(३) क्षुधित—

शत्रुगेही मित्रयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदि।
क्षुधितः स हि विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा॥१०२॥

जो ग्रह अपने शत्रुओं की राशि पर रहते शत्रु से देखा जाता हो या शनैश्चर के साथ हो वह क्षुधित कहा जाता है॥ १०२॥

(४) तृषित—

जलराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः।
शुभग्रहा न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः॥ १०३॥

जो ग्रह जलचर राशि में रहते शत्रु से दृष्ट हो, और शुभ ग्रहों की दृष्टि उसके ऊपर न पड़ती हो तो उसे तृषित समझना चाहिये॥ १०३॥

(५) मुदित—

मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेणैवावलोकितः।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्त्तितः॥ १०४॥

जो ग्रह मित्रों की राशि में रहते मित्र के साथ हो और उसके ऊपर मित्र ग्रहों की ही दृष्टि पड़ती हो या बृहस्पति के साथ हो, वह मुदित कहा जाता है॥१०४॥

(६) क्षोभित—

रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षोभितं तं विजानीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः॥ १०५॥

जो ग्रह जहाँ कहीं रहते सूर्य के साथ हो और उसके ऊपर पाप ग्रहों की ही दृष्टि पड़ती हो (या शत्रु शुभ ग्रह से भी देखा जाता हो) तो उसको क्षोभित जानना चाहिये॥ १०५॥

क्षुधित-क्षोभित का फल—

येषु येषु च भावेषु ग्रहास्तिष्ठन्ति सर्वथा।
क्षुधिताः क्षोभिता वापि स नरो दुःखभाजनः॥ १०६॥

जिन जिन भावों में क्षुधित (३) क्षोभित (६) ग्रह जातक के जन्मचक्रगत प्रतीत हो वे सभी भाव अशुभफलजनक होते हैं अर्थतः वह जातक यावज्जीवन दुःख ही का अनुभव करने वाला होता है॥ १०६॥

एवं क्रमेण बोद्धव्यं सर्वभावेषु पण्डितैः।
बलाबलविचारेण वक्तव्यः फलनिर्णयः ॥१०७॥

इसी प्रकार सभी भावों में बलाबल के अनुसन्धान से फल कहना चाहिये, अर्थात् क्षुधित, क्षोभित आदि रहते भी यदि अल्पबली हो तो अल्प, पूर्ण बली हो तो अत्यधिक अनिष्ट जाने॥ १०७॥

अन्योन्यं च यदा युक्तं फलं मिश्रं वदेत्सुधीः।
बलहीने तथा हानिः सबले च यथाक्रमम् ॥१०८॥

यदि किसी भाव में क्षुधित आदि अनिष्ट कारक एवं मुदित आदि शुभकारक दोनों पड़ जायँ तो दोनों के बलानुमान से शुभाशुभ फलों की अल्पता या अधिकता कहनी चाहिये ॥ १०८ ॥

कर्मस्थाने स्थितो यस्य लज्जितस्तृषितस्तथा।
क्षुधितः क्षोभितो वापि स नरो दुःखभाजनः ॥१०९॥

जिसके कर्मस्थान (दशम) में लज्जित, तृषित, क्षुधित एवं क्षोभित ग्रह पड़े वह जातक आजन्म दुःखी रहता है॥ १०९॥

सुतस्थाने भवेद्यस्य लज्जितो ग्रह एव च।
सुतनाशो भवेत्तस्य एकस्तिष्ठति सर्वथा ॥११०॥

जिसके पञ्चम भाव में लज्जित ग्रह रहे उसके शेष सभी पुत्र मर जाते हैं, केवल एक पुत्र जीवित रहे ऐसा जानना चाहिये॥ ११०॥

क्षोभितस्तृषितश्चैव सप्तमे यस्य वा भवेत्।
म्रियते तस्य नारी च सत्यमाह दिगम्बरः ॥१११॥

जिसके सप्तम भाव (जाया स्थान) में क्षोभित या तृषित ग्रह पड़े उसकी स्त्री शीघ्र मर जाती है जैसा कि शंकरजी का कथन है ॥ १११ ॥

एवमन्येऽपि भावाश्च प्रोक्तव्या हि प्रयत्नतः ।
ग्रहाणां च बलं ज्ञात्वा फलं वेद्यं यथाक्रमम् ॥११२॥

इसी प्रकार अन्य भावों में भी ग्रहों के बलाबल पर शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिये ॥ ११२ ॥

ग्रहों की दीप्तादिक अवस्था—(मानसागरी)

दीप्तः स्वस्थो मुदितः शान्तः शक्तः प्रपीड़ितो दीनः ।
विकलः खलश्च कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा ॥११३॥

मतान्तर से दीप्त (१) स्वस्थ (२) मुदित (३) शान्त (४) शक्त (५) प्रपीड़ित (६) दीन (७) विकल (८) एवं खल (९) ये नौ प्रकार की अवस्थायें कही गई हैं ॥ ११३ ॥

उनके लक्षण—

दीप्तस्तुङ्गगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हृते हर्षितः
शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ।
सुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥११४॥

जो ग्रह अपनी उच्चराशि (परमोच्च) पर हो वह दीप्त (१), अपनी राशि पर रहे तो स्वस्थ (२) अपने मित्र ग्रहों की राशि पर रहे तो हर्षित (मुदित) (३) कहा गया है, एवं शुभ ग्रहों के वर्ग में रहने से शान्त (४) उदित होकर देदीप्यमान होने से शक्त (५) सुप्त याने अस्तगत होने से विकल (६) अपने नीच गृह में रहने से दीन (७), पापग्रहों के साथ रहने से खल (८) एवं अन्य ग्रहों के साथ युद्ध में (दक्षिणदिग्गत) पीड़ित रहने से पीड़ित (९) कहा जाता है ॥११४॥

(१) दीप्तग्रह-फल—

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालङ्कृतकुञ्जरेशः ।
नरो भवेत्तन्निलये सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥११५॥

जिसके जन्मकालिक प्रबल ग्रह दीप्तावस्था में रहे वह महाप्रतापी, शत्रुओं को एकदम नष्ट करने वाला, सदैव उसका द्वार उन्मत्त हाथी से अलंकृत, तथा सर्वांशिक लक्ष्मी से उसका घर शोभित रहता है॥ ११५ ॥

(२) स्वस्थ-फल—

स्वस्थे महद्वाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलेन युक्तः ।
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ॥११६॥

यदि स्वस्थ संज्ञक ग्रह पड़े तो अनेक प्रकार के वाहन (हाथी घोड़े, मोटर साइकिल आदि) धन-धान्य, उत्तम २ विशाल मकानों से सहित, किसी सेना में प्रधान, महा प्रतापी अनेक शत्रुवर्गों के साथ विवाद में विजय पाने वाला पुरुष होता है॥ ११६ ॥

(३) मुदित का फल—

हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणमणिव्रजचितः ।
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥११७॥

यदि हर्षित (मुदितावस्था में) ग्रह हो तो जातक पूर्ण धनी, उसके घर की स्त्रियाँ हीरे जवाहिर आदि के बहु मूल्य भूषणों से भूषित, स्वयं सदैव धार्मिक कामों में तत्पर, शत्रुओं को नाश करने वाला कन्दर्प के समान सुन्दर होता है ॥११७॥

(४) शान्त का फल—

शान्तेऽतिशान्तो हि महीपतीनां मन्त्री स्वतन्त्रो बहुमित्रपुत्रः ।
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ॥११८॥

शान्त-संज्ञक ग्रह पड़े तो जातक अत्यन्त शान्तिप्रिय, राजाओं के प्रधान मन्त्री, अनेक मित्र एवं पुत्र से सहित, शास्त्रों का ज्ञाता, पराये का उपकार करने वाला तथा सदैव धार्मिक कामों में निरत रहता है ॥ ११८ ॥

(५) शक्त का फल—

शक्तेऽतिशक्तः पुरुषो विशेषात् सुगन्धमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ।
विख्यातकीर्त्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्त्ताऽरिजनप्रहर्त्ता ॥११९॥

यदि शक्त-संज्ञक ग्रह अनुकूल हो तो जातक कार्यमात्र में प्रवीण, सुगन्धित पदार्थ माला सेन्ट आदि में चित्त रखने वाला, पवित्र आत्मा का अनेक धार्मिक कीर्त्तिवाला, परोपकारी तथा शत्रुओं का संहारक पुरुष होता है ॥ ११९ ॥

(६) पीड़ित का फल—

पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोऽपि नितान्तम् ।
याति सञ्चलनतां निजस्थलाद्व्याकुलत्वमपि बन्धुचिन्तया॥१२०॥

यदि जन्मकालिक ग्रह पीड़ित सिद्ध हो तो जातक सदैव व्याधि एवं दुर्व्यसनों से पीड़ित रहे, अपने परम्परागत वासस्थान को छोड़कर दूसरी जगह चला जाय तथापि पारिवारिक चिन्ता से सदैव व्याकुल रहे॥ १२० ॥

(७) दीन का फल—

दीनेऽतिदीनोऽपचयेन तप्तः सम्प्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ।
संत्यक्तनीतिः खलुहीनकान्तिः स्वजातिवैरं हि नरः प्रयाति॥१२१॥

यदि दीनावस्था में ग्रह प्रतीत हो तो जातक को उत्तरोत्तर अवनति होती जाय, किसी राज-दरवार से अनबन होने के कारण सदैव भयभीत रहे। डर के मारे आचार-नीति छोड़ दे, मलिन शरीर वाला, अपने बन्धुवर्गों के साथ भी शत्रुता प्राप्त कर ले॥ १२१ ॥

(८) विकल का फल—

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलत्वगलन्मतिः ।
खलसखः स्थलसञ्चरणो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥१२२॥

यदि जन्मकालिक ग्रह विकल-संज्ञक हो तो जातक सदैव उदास, प्रबल शत्रु के प्रताप से डरता हुआ, दुष्टों के साथ सहानुभूति रखने वाला, पतला शरीर, दूसरे के कामों में समय बिताने वाला, जहाँ कहीं पैदल चलने वाला पुरुष होता है ॥ १२२ ॥

(६) खल का फल—

खलाभिधाने हि खलैः कलिः स्यात्कान्तातिचिन्तापरितप्तचित्तः ।
विदेशयानं धनहीनतान्तः कोपी भवेल्लुब्धमतिप्रकाशः ॥१२३॥

जिसके जन्मकाल में खल-संज्ञक ग्रह प्रतीत हो, उसको दुष्टों के साथ विवाद, स्त्री-सम्बन्ध की सर्वांशिक चिन्ताओं से पीड़ित, विदेश जाने में विवश, गरीबी के कारण अत्यन्त दुःखी, तथा पराये की चीजों के ऊपर लोभ करने वाला अधम जातक होता है ॥ १२३ ॥

प्रसङ्गवश ग्रहों के अंशभेद से उच्च, मूलत्रिकोण एवं स्वगृह विवरण—(सारावली)

विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ।
उच्चं भागत्रितयं वृष इन्दोः स्यात्त्रिकोणमपरे स्युः ॥१२४॥
द्वादश भागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभं तु भौमस्य ।
उच्चबलं कन्यायां बुधस्य तिथ्यंशकैः सदा चिन्त्यम् ॥१२५॥
परतस्त्रिकोणजातं पञ्चभिरंशैः स्वराशिजं परतः ।
दशभिर्भागैश्चापे त्रिकोणमपरे स्वभं तु देवगुरोः ॥१२६॥
शुक्रस्यांशास्तिथयस्त्रिकोणमपरे स्वभं तुलायां च ।
कुम्भे त्रिकोणनिजभे रविजस्य रवेर्यथा सिंहे ॥१२७॥

सूर्यका सिंह में आरम्भ से २० अंश तक त्रिकोण, उसके बाद (२१ से ३० तक) स्वगृह, चन्द्रमा का—वृष में आरम्भ से ३ अंश तक उच्च, उसके बाद ४ से ३० तक त्रिकोण, मंगल का—मेष में आरम्भ से १२ अंश तक त्रिकोण, ततः पर ३० तक स्वगृह, बुध का—कन्या में १ से १५ तक उच्च, उसके बाद १६ से २० तक (५

अंश) त्रिकोण, ततः पर (२१ से ३० तक) स्वगृह, बृहस्पति का--धनु में आरम्भ से १० अंश तक त्रिकोण, उसके बाद ११ से ३० तक स्वगृह, शुक्र का—तुला में आरम्भ से १५ तक त्रिकोण, ततः पर १६ से ३० तक स्वगृह, एवं शनैश्चर का--कुम्भ में आरम्भ से २० अंशतक त्रिकोण, शेष २१ से ३० तक स्वगृह है ॥ १२४-१२७ ॥

स्पष्टता के लिये चक्र--

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ
उच्चांश	०	३	०	१५	०	०	०
त्रिकोणांश	२०	०	१२	५	१०	१५	२०
गृहांश	१०	२७	१८	१०	२०	१५	१०

ग्रहों की बालादिक अवस्था--(जन्मपत्रिकाविधान)

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजे समे तद्विपरीतमाहुः ।
बालः कुमारोऽथ युवाऽथ वृद्धो मृतो लवानामृतुभिः क्रमेण ॥१२८॥

प्रत्येक विषम राशि (मेष, मिथुन आदि) में आरम्भ के ६ अंश बाल, ७ से १२ तक कुमार, १३ से १८ तक युवा, १९ से २४ तक वृद्ध तथा २५ से ३० तक मृत ये पाँच अवस्थायें होती हैं, समराशियों (वृष, कर्क आदि) में इसके उलटा अर्थात् प्रथम मृत, द्वितीय वृद्ध, तृतीय युवा, चतुर्थ कुमार और पञ्चम बाल अवस्था होती है। इन अवस्थाओं के अनुसार ही सभी ग्रह अपने अपने शुभाशुभ फल देने में प्रवीण तथा अक्षम होते हैं ॥ १२८ ॥

स्पष्टता के लिये चक्र--

बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत	मे. मि. सि. तु. ध. कुं.
मृत	वृद्ध	युवा	कुमार	बाल	वृ. क. क. वृ. म. मी.
६	१२	१८	२४	३०	अंश

होरालग्न जानने का प्रकार--

इष्टनाड़ी हता द्वाभ्यां पञ्चभक्ता फलेन युक् ।
युग्मलग्नमयुग्मे तु होरालग्नं रविर्भवेत् ॥१२९॥

जन्मकालिक इष्ट को दो से गुण कर पाँच से भाग देने पर जो लब्धि (राश्यादि) आवे वह यदि लग्न सम राशि (वृष, कर्क कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) में हो तो लग्न ही में जोड़ दे। यदि विषम राशि में हो तो लग्न में नहीं, किन्तु जन्मकालिक स्पष्टसूर्य में जोड़ने से होरालग्न का राश्यादि आ जायगा।

उदाहरण

इष्टघटीपल १६। ५५ प्रथमलग्न ७।०।३८।५६ स्पष्टसूर्य ४।१।१७।१३ है तो इष्ट को द्विगुणित करने पर (१६।५५) × २ = ३२।११० = ३३।५०, पाँच से भाग दिया तो—

५) ३३।५० (६ = राशि
    ३०
    ——
    ३
  × ३०
    ——
    ९०
    ५०
    ——
५) १४० (२८ = अंश
    १४०
    ——
    ००

लब्धि राश्यादि ६।२८ मिली। प्रथम लग्न समराशि (वृश्चिक) में है अतः उसी में लब्धि जोड़ने से

७।०।३८।५६ प्र० ल०
× ६।२८।०।० लब्धि
——————
१३।२८।३८।५६

यहाँ राशिस्थान में १२ से अधिक है अतः १२ से तष्टित करने पर होरालग्न १।२८।३८।५६ राश्यादि सिद्ध हुआ ॥ १२९ ॥

शयनादिक अवस्था का ज्ञान—

यस्मिन्नृक्षे च यः खेटस्तयोः संख्यकयोर्हतिः।
ग्रहस्यांशेन संगुण्या जन्मर्क्षं जातकस्य च ॥१३०॥
यातदण्डं तथा लग्नमेकीकृत्य नियोजयेत्।
रविणा च हरेद्भागमेकादौ शेषके क्रमात् ॥१३१॥
शयनं चोपवेशश्च नेत्रपाणिप्रकाशने।
गमनेच्छा च गमनं सभायां वसतिस्तथा ॥१३२॥

आगमो भोजनं चैव नृत्यलिप्सा च कौतुकम् ।
निद्रेति द्वादशावस्था ग्रहाणां कथिताः पुरा ॥१३३॥

जिस नक्षत्र पर जो ग्रह हो, दोनों की संख्या का परस्पर गुणन कर उसको ग्रहनिष्ठ अंश से भी गुण दे, उसमें जातक की नक्षत्रसंख्या, इष्टघटी तथा लग्न की संख्या ये सब मिलावे तब १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उसके अनुसार उस ग्रह की अवस्था---(१) शयन, (२) उपवेश, (३) नेत्रप्रकाश, (४) पाणिप्रकाशन, (५) गमनेच्छा, (६) गमन, (७) सभावसति, (८) आगम, (९) भोजन, (१०) नृत्यलिप्सा, (११) कौतुक एवं (१२) निद्रा इनमें से एक जाने।

यथा किसी जातक का जन्मलग्न ७।१।२०।१७, स्पष्ट सूर्य ४।१। २०।२४ (मघा नक्षत्र पर), इष्ट १६।५५ इसमें विचार करना है कि सूर्य की कौन अवस्था होगी। मघा की संख्या १० को सूर्यसंख्या १ से गुणने पर १०×१=१० इसको सूर्यनिष्ठ अंशसंख्या २ से गुणा १०×२=२० इसमें इष्टघटी १६ लग्न वृश्चिक ८ जन्मर्क्ष १० ये तीनों जोड़ दिया तो २०+१६+८+१०=५४ हुआ, इसमें १२ से भाग देने पर शेष ६ बचा, अतः छठीं गमन नामकी आई, ऐसे ही सभी ग्रहों की अवस्थायें जानी जा सकती हैं॥ १३०–१३३ ॥

विशिष्टावस्था-ज्ञान के लिए स्वराङ्कचक्र--

१	२	३	४	५
अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

अवस्थाङ्कः स्वगुणितः स्वराङ्केन समन्वितः ।
अंकैस्तष्टः क्षेपकेण संयोज्य त्रिभिराहरेत् ॥१३४॥

शेषतुल्या तु खेटस्य विशिष्टा ज्ञायते बुधैः ।
दृष्टिश्चेष्टा विचेष्टा च कथिता मुनिपुंगवैः ॥१३५॥

क्षेपक--

रवौ पञ्च तथा देयं चन्द्रे दद्याद् द्वयं तथा ।
कुजे द्वयं च संयुक्तं बुधेऽपि त्रयमेव हि ॥१३६॥
गुरौ बाणाः प्रदातव्यास्त्र्यं दद्याच्च भार्गवे ।
शनैश्चरे त्रयं देयं राहौ दद्याच्चतुष्टयम् ॥१३७॥

फल--

दृष्टौ स्वल्पफलं ज्ञेयं चेष्टायां विपुलं फलम् ।
विचेष्टायां फलं न स्यादेवं दृष्टिफलं स्मृतम् ॥१३८॥

अवस्थाङ्क को उसीसे गुण कर जातक के आद्यक्षर के ऊपर (स्वराङ्क चक्र में) जो अङ्क हो वह जोड़ कर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे, उसके अनुसार दृष्टि (१), चेष्टा (२), विचेष्टा (३) इनमें से एक का ज्ञान करना। ग्रहों के क्षेपक--रवि का = ५, चन्द्र का = २, मंगल का = २, बुध का = ३, गुरु का = ५, शुक्र का = २, तथा शनैश्चर का = ३ शेष स्पष्ट ही है ॥

उदाहरण--

पूर्वोदाहरण में शेष ६ (अवस्थाङ्क) था, अतः उसीसे गुणने पर ६ × ६ = ३६ हुआ, जातक का नामाद्यक्षर 'ह' है, जिसके ऊपर का 'ओ' स्वराङ्क ५ जोड़ा ३६ + ५ = ४१ इसमें बारह से भाग देकर शेष ५ में सूर्य का क्षेपक ५ मिलाया तो ५ + ५ = १० हुआ, इसमें ३ से भाग दिया तो शेष केवल १ रहा, अतः दृष्टि नाम की विशिष्ट अवस्था आई ॥ १३४-१३८ ॥

जायाभाव-विचार (प्राचीन संग्रह)

दारेशे शुभराशिस्थे स्वोच्चस्वर्क्षगते भृगौ ।
पञ्चमे नवमेऽब्दे तु विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१३९॥

जिस जातक की जन्मकुण्डली के सप्तमेश शुभग्रह की राशि (धनु, मीन, वृष, तुला आदि) में रहे, शुक्र अपने उच्च (मीन) में या स्वराशि (वृष, तुला) में पड़े, उनका विवाह पञ्चम या नवम वर्ष की अवस्था में प्रायः होता है ॥ १३९ ॥

दारस्थानगते सूर्ये तदीशे भृगुसंयुते ।
सप्तमैकादशे वर्षे विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१४०॥

जिसके सप्तम भाव में सूर्य रहे, एवं सप्तमेश शुक्र के साथ जहाँ कहीं हो तो उसका विवाह सातवें या ग्यारहवें वर्ष में प्रायः होता है ॥ १४० ॥

कुटुम्बस्थानगे शुक्रे दारेशे लाभराशिगे ।
दशमे षोडशेऽब्दे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१४१॥

जिसके चतुर्थ भाव में शुक्र हो, और सप्तम भाव का स्वामी ग्यारहवें में हो तो उसका विवाह प्रायः दशवें या सोलहवें वर्ष में होता है ॥ १४१ ॥

लाभकेन्द्रगते शुक्रे लग्नेशे मन्दराशिगे ।
वत्सरैकादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१४२॥

जिसके केन्द्र (१, ४, ७, १०) में या एकादश में शुक्र रहे, और लग्नेश जहाँ कहीं रहे मकर या कुम्भ राशि पर पड़ता हो तो इस योग में जातक का विवाह ग्यारहवें वर्ष में होता है ॥ १४२ ॥

लग्नात्केन्द्रगते शुक्रे तस्मात् कामगते शनौ ।
द्वादशैकोनविंशे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१४३॥

जिसके केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुक्र हो और शुक्र से सातवें में शनैश्चर पड़ता हो तो इस योग में जातक का विवाह १२ वें या १९ वें वर्ष में कहना चाहिये ॥ १४३ ॥

चन्द्राज्जामित्रगे शुक्रे शुक्राज्जामित्रगे शनौ ।
वत्सरेऽष्टादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१४४॥

जिस चक्र में चन्द्रमा से सातवें में शुक्र हो एवं शुक्र से सातवें में शनैश्चर हो (अर्थतः चन्द्रमा, शनैश्चर एक राशि में रहें उनसे सातवें में शुक्र पड़े) तो जानना चाहिये कि उस जातक का विवाह १८ वर्ष की अवस्था में होगा ॥ १४४ ॥

धनेशे लाभराशिस्थे लग्नेशे कर्मराशिगे ।
प्राप्ते पञ्चदशे वर्षे विवाहं लभते नरः ॥१४५॥

जिसके धनभावेश लाभस्थान में और लग्नेश दशवें में पड़ें तो उसका विवाह १५वें वर्ष के आरम्भ में कहना चाहिये ॥ १४५ ॥

धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे धनराशिगे ।
वर्षे त्रयोदशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१४६॥

जिसके जन्मचक्र में धनभावेश लाभस्थान में और लाभेश धनस्थान में रहे तो उसका विवाह १३ वें वर्ष के आरम्भ में होता है ॥ १४६ ॥

रन्ध्रजामित्रगे शुक्रे दारेशे भौमसंयुते ।
द्वाविंशे सप्तविंशेऽब्दे विवाहं लभते नरः ॥१४७॥

जिसके शुक्र अष्टम या सप्तम में हो और सप्तमेश मंगल के साथ जहाँ कहीं पर रहे तो उसका विवाह २२वें या २७वें वर्ष की अवस्था में कहना चाहिये ॥१४७॥

दारकांशगते लग्ननाथे दारेश्वरे व्यये ।
त्रयोविंशे च षड्विंशे विवाहं लभते नरः ॥१४८॥

जिसके चक्र में लग्नेश सप्तमभावस्थ राशि के नवांश में पड़े और सप्तमेश व्ययभाव में रहे, उसका विवाह २३वें या २६वें वर्ष में होता है ॥ १४८ ॥

रन्ध्रेशे दारराशिस्थे लग्नेशे भृगुसंयुते ।
पञ्चविंशे त्रयस्त्रिंशे विवाहं लभते नरः ॥१४९॥

जिसके जन्मचक्र में अष्टमेश सप्त में हो और लग्नेश शुक्र के साथ जहाँ कहीं रहे तो इस योग में जातक का विवाह २५वें या ३३वें वर्ष में कहना चाहिये ॥१४९॥

भाग्याद्भाग्यगते शुक्रे दारेशे राहुसंयुते ।
एकत्रिंशे त्रयस्त्रिंशे दारलाभं विनिर्दिशेत् ॥१५०॥

जिस जातक के चक्र में शुक्र नवम भाव से नवम (अर्थतः पञ्चम भाव) में रहे और सप्तमेश राहु के साथ होकर जिस किसी में पड़ा रहे तो उसका विवाह ३१वें या ३२वें वर्ष पर होता है ॥ १५० ॥

भाग्यजामित्रगे शुक्रे तद्द्यूने दारनायके ।
त्रिंशे वा सप्तविंशेऽब्दे विवाहं लभते नरः ॥१५१॥

जिसके शुक्र नवम या सप्तम में रहे और सप्तमेश शुक्र से सातवें स्थान पर बैठा हो तब जानना चाहिये कि उस जातक का विवाह ३०वें या २७ वर्ष की उमर में होगा ॥ १५१ ॥

स्त्रीमृत्यु-योग

दारेशे नीचराशिस्थे शुक्रे रन्ध्रारिसंगते ।
अष्टादशेत्रयस्त्रिंशे वत्सरे दारनाशनम् ॥१५२॥

जिस जातक का सप्तमेश अपनी नीच राशि में पड़े और शुक्र ६ठे या आठवें में वर्तमान हो तो जातक के १८वें या ३३वें वर्ष की अवस्था में उसकी स्त्री का मरण हो जाता है ॥ १५२ ॥

दारेशे नीचराशिस्थे व्ययेशे मन्दराशिगे ।
तस्य चैकोनविंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥१५३॥

जिसके सप्तमेश नीचराशि में और १२वें भाव का स्वामी जहाँ कहीं रहते मकर कुम्भ राशि पर दीख पड़े तो जानना चाहिये कि जातक के १९वें वर्ष की उमर में उसकी स्त्री का देहान्त होगा ॥ १५३ ॥

कुटुम्बस्थानगे राहौ कलत्रे भौमसंयुते ।
पाणिग्रहत्रिदिवसे सर्पदंशाद्वधूमृतिः ॥१५४॥

जिसके जन्मचक्र के चतुर्थ स्थान में राहु हो, एवं सप्तम स्थान में मङ्गल पड़े (यह भी मङ्गलीयोग स्त्री-नाशकारक है) उसकी स्त्री का नाश विवाह के बाद तीसरे दिन में सर्प द्वारा होता है ॥ १५४ ॥

रन्ध्रस्थानगते शुक्रे दारेशे सौरिराशिगे ।
द्वादशैकोनविंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ।। १५५ ।।

यदि शुक्र अष्टम स्थान में हो और सप्तमेश जिस किसी भाव में रहते शनैश्चर की राशि (मकर, कुम्भ) पर वर्त्तमान हो तो जानना चाहिये कि जातक के १२वें या १९वें वर्ष की अवस्था में उसकी स्त्री का देहान्त होगा ।। १५५ ।।

लग्नेशे नीचराशिस्थे धनेशे निधनं गते ।
त्रयोदशे तु सम्प्राप्ते कलत्रस्य मृतिं वदेत् ।। १५६ ।।

जिसके चक्र में लग्नेश अपनी नीच राशि में रहे तथा द्वितीयेश अष्टम में दीख पड़े तो जातक के १३वें वर्ष की उमर होते ही उसकी स्त्री का मरण जानना चाहिये ।। १५६ ।।

द्यूनेशान्यतमेंऽशे स्युर्यावन्तो द्यूनपक्षकाः ।
तावत्यः स्युस्त्रियो नृणामेकैवार्किकुजांशके ।। १५७ ।।

स्त्रीभाव-कारक जितने ग्रह सप्तमेश के अतिरिक्त ग्रहों के नवांश में पड़ते हों उतनी स्त्रियाँ उस जातक को होंगी। यदि शनि, मङ्गल के नवांश में पड़े तो एक ही स्त्री होगी, यह जानना चाहिये ।। १५७ ।।

शनैश्चरे विलग्नस्थे भसंधिस्थे सितेऽस्तगे ।
पुत्रभावेऽशुभैर्युक्ते जातो वन्ध्यापतिर्भवेत् ।। १५८ ।।

जिसके शनैश्चर लग्न में, अस्तगत शुक्र सन्धि में, तथा पञ्चम भाव में पाप-ग्रह पड़े तो जाने कि जातक की स्त्री वन्ध्या होगी अर्थात् एक भी सन्तति न होगी ।। १५८ ।।

पापर्क्षे पापसंयुक्ते कलत्रे पापसंयुते ।
विभार्यो मृतदारो वा शुक्रेन्द्विज्यबुधैः शुभम् ।। १५९ ।।

जिसके जन्मकालिक चन्द्रमा पापराशि में पापग्रह के साथ हो, जाया-स्थान में पापग्रह हो तो जातक का विवाह होता ही नहीं, कदाचित् हो भी तो शीघ्र ही स्त्री मर जाती है। परन्तु सप्तम में शुक्र, चन्द्रमा, बृहस्पति एवं बुध रहे तो शुभ जानना चाहिये ।। १५९ ।।

लग्नान्त्यमन्दगैः पापैः क्षीणे धीस्थे निशाकरे ।
पुत्रजायाविहीनस्य जायते जन्म निश्चितम् ॥ १६० ॥

जिसके लग्न, सप्तम तथा द्वादश इन स्थानोंमें पापग्रह पड़ते हों तथा क्षीणवली चन्द्रमा पञ्चम में रहे तो ऐसे योग में जातक सदैव स्त्री-पुत्र से रहित रहता है ॥ १६० ॥

जातक के बन्धुओं के लिए अरिष्टकथन—

दिवाकरात्पञ्चमगो हि पापः पितुः कृतेऽरिष्टकरो जनन्याः ।
चन्द्राच्चतुर्थः सहजस्य भौमात्तृतीयगो मातुलकस्य सौम्यात् ॥१६१॥
चतुर्थगः पुत्रकृते गुरोश्च पुत्रस्थितः सप्तमगः स्त्रियः स्यात् ।
भृगोस्तथैवं शनितोऽष्टमस्थो मृत्युप्रदः स्वस्य कृते विचिन्त्यः ॥१६२॥

यदि जातक के लग्नचक्र में सूर्य से नवम स्थान में कोई पापग्रह पड़े तो जातक के पिता को कष्ट कहना, एवं चन्द्रमा से चतुर्थ में पापग्रह हो तो माता को, मंगल से तीसरे में पापग्रह हो तो भाई को, बुध से चतुर्थ में पापग्रह हो तो मातुल (मामा) को, बृहस्पति से पञ्चम में पापग्रह हो तो पुत्र को, शुक्र से सप्तम में पापग्रह हो तो स्त्री को कष्ट कहना चाहिये। परन्तु यदि शनैश्चर से आठवें में कोई पापग्रह पड़ा हो तो स्वयं जातक के लिये मृत्युकारक समझना चाहिये ॥ १६१–१६२ ॥

स्पष्टार्थ चक्र—

ग्रह से	पाप-ग्रह-स्थान	अरिष्ट-भागी
सूर्य	६	पिता
चन्द्र	४	माता
मंगल	३	भाई
बुध	४	मामा
बृहस्पति	५	पुत्र
शुक्र	७	स्त्री
शनि	८	स्वयं

विंशोत्तरी-दशाविचार--

कृत्तिकातः समारभ्य गणयेज्जन्मभावधि ।
नवभिर्विहृते शेषतुल्यग्रहदशा भवेत् ॥१६३॥

कृत्तिका से आरम्भ कर जन्मनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें ९ से भाग देकर (लब्धि का प्रयोजन नहीं) शेष के तुल्य ग्रह की दशा (जन्मकाल की) होती है। यथा--किसी का जन्म-नक्षत्र अनुराधा है, जिसकी संख्या (कृत्तिका से गिनने पर) १५ को ९ से भाग दिया तो शेष ६ रहा, अतः दशाधीश के क्रम से छठी दशा शनैश्चर की हुई। सुविधाके लिये अग्रिम चक्र में नक्षत्रों का भी युक्तिसंगत निवेश कर दिया गया है जिसके द्वारा जन्म-नक्षत्र के सामने ऊपर जो ग्रह पड़ता हो, ठीक उसीकी महादशा सिद्ध होती है। इस उदाहरण में भी अनुराधा के ऊपर शनैश्चर ही है, (चक्र देखें) ॥ १६३ ॥

दशा के अधिपति एवं दशावर्ष--

सूर्यश्चन्द्रः कुजो राहुर्गुरुः सौरिर्बुधः शिखी ।
शुक्रश्चेति नव प्रोक्ता विंशोत्तर्यां दशेश्वराः ॥१६४॥
रसदिक्सप्तधृत्यष्टिनवैकनगभूमिताः ।
सप्त-विंशतितुल्यौ च सूर्यादीनां दशाब्दकाः ॥१६५॥

सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, राहु, बृहस्पति, शनैश्चर बुध, केतु तथा शुक्र ये नौ ग्रह क्रमसे विंशोत्तरी दशा के अधिपति होते हैं। उनके दशावर्ष क्रमसे ६, १०, ७, १८, १६, १९, १७, ७, २० नियत हैं ॥ १६४ - १६५ ॥

महादशावर्षचक्र--

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
दशाधीश	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
दशावर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
जन्मनक्षत्र	कृ. उ.फ. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पु. वि. पू.	पु. अ. उ.	आ. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू.फ. पू.षा. भ.

जन्मकालिक महादशा का भुक्त-भोग्य जानने का प्रकार—

भयातमानं गुणितं दशाब्दैर्भभोगमानेन हृतं फलं यत् ।
वर्षादिकं भुक्तदशाप्रमाणं स्वाब्दाद्विहीनं भवतीह भोग्यम् ॥१६६॥

जन्मकालिक भयात को जन्मकालिक महादशावर्ष से गुणा कर भभोग से भाग दे तब जो लब्धि आवे वही (वर्षादि) उस दशा का भुक्त (जन्म से पहले बीता हुआ भाग) होता है। उसको महादशावर्ष में घटाने पर जो शेष (वर्षादि) बचे वह भोग्य (जन्म के बाद दशा का भाग) हो जायगा।

उदाहरण—

भयात ७।४१ (पलात्मक ४६१), भभोग ५८।७ (पलात्मक ३४८७), शनैश्चर की महादशा में जन्म है। अतः शनिदशावर्ष १९ से भयात को गुणा तो ४६१ × १९ = ८७५९ आया, इसमें भभोग ३४८७ से भाग देने के लिये न्यास—

```
३४८७ ) ८७५९ ( २ = वर्ष
       ६९७४
       १७८५ (वर्षशेष को १२ से गुणने पर)
       × १२
       ————
३४८७ ) २१४२० ( ६ = मास
       २०९२२
       ————
         ४९८ (मास-शेष को ३० से गुणा)
       × ३०
       ————
३४८७ ) १४९४० ( ४ = दिन
       १३९४८
       ————
         ९९२ (दिनशेष को ६० से गुणा)
         × ६०
       ————
३४८७ ) ५९५२० ( १७ = घटी
       ३४८७
       ————
       २४६५०
       २४४०९
       ————
         २४१
         × ६०
       ————
```

३४८७) १४४६० (४ = पल
　　　　१३९४८
　　　　५१२ (त्याज्य)

इस प्रकार लब्धि वर्षादि २।६।४।१७।४ शनैश्चर की भुक्त दशा आई, इसको १९ वर्ष में घटाने पर भोग्यदशावर्ष

१९।०।०।०।०
२।६।४।१७।४
१६।५।२५।४२।५६ ज्ञात हुआ। इसीको

जन्म संवत् और ज० का० स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से शनि—महादशा का विराम या अग्रिम बुध–महादशा का आरम्भ होगा (महादशाचक्र देखें) ॥ १६६ ॥

महादशाचक्र लिखने का क्रम—

	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	दशेश
जन्म	१६	१७	७	२०	६	१०	७	१८	१६	वर्ष
कालिक	५	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन
	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	दण्ड
	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
१९९१	२००७	२०२४	२०३१	२०५१	२०५७	२०६७	२०७४	२०९२	२१०८	सं
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सूर्य
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	राशि.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	अंश
१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	कला
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	विकला

अन्तर्दशा लाने का प्रकार—

दशा दशाहता कार्या विहृता परमायुषा ।
लब्धमन्तर्दशामानं वर्षादिकमिहेरितम् ॥१६७॥

जिसकी महादशा में जिसका अन्तर जानना हो, दोनों के दशावर्ष का घात कर परमायु १२० से भाग देने पर लब्धि वर्षादि अन्तर्दशा होती है।

उदाहरण—

यथा सूर्य की महादशा में बृहस्पति का अन्तर लाना है तो दोनों का दशावर्ष—गुणनफल = ६ × १६ = ९६ में १२० से भाग देने के लिये— १२०) ९६ (० = वर्ष

००

९६

× १२

१२०) ११५२ (९ = मास

१०८०

७२

× ३०

१२०) २१६० (१८ = दिन

१२०

९६०

९६०

०

इस तरह लब्धि ० । ९ । १८ वर्षादि सूर्य की महादशा में बृहस्पति का अन्तर आया (यही बृहस्पति की महादशा में सूर्य का भी अन्तर हुआ) ऐसे ही सब ग्रहों की महादशा में सबका अन्तर लाकर अग्रिम चक्रों में अङ्कित किया गया है ॥ १६७ ॥

यथा—सूर्य की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	सू. सू.	सू. चं.	सू. मं.	सू. रा.	सू. बृ.	सू. श.	सू. बु.	सू. के.	सू. शु.	योग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	६
मास	३	६	४	१०	९	११	१	४	०	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	०

चन्द्रमा की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	चं.	योग
	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०	१०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६	०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगल की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	योग
	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०	७
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७	०
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	०

राहु की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	योग
	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	०

बृहस्पति की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	योग
	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	ङ	२	१६
मास	१	६	२	११	८	९	४	११	४	०
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	०

शनि की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	श. श.	श. बु.	श. के.	श. शु.	श. सू.	श. चं.	श. मं.	श. रा.	श. बृ.	योग
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६	०
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	०

बुध की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	बु. बु.	बु. के.	बु. शु.	बु. सू.	बु. चं.	बु. मं.	बु. रा.	बु. बृ.	बु. श.	योग
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२	१७
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	०
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	०

केतु की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	के. के.	के. शु.	के. सू.	के. चं.	के. मं.	के. रा.	के. बृ.	के. श.	के. बु.	योग
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०	७
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११	०
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	०

शुक्र की महादशा में सब का अन्तर—

ग्रह	शु. शु.	शु. सू.	शु. चं.	शु. मं.	शु. रा.	शु. बृ.	शु. श.	शु. बु.	शु. के.	योग
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१	२०
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२	०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूक्ष्मदशाविचार के लिये

प्रत्यन्तरदशा जानने का प्रकार–

अन्तर्दशा-दशा-प्रत्यन्तरेशाब्दहतिर्हृता ।
शून्यवेदैः फलं प्रत्यन्तरे तु दिवसादिकम् ॥ १६८ ॥

जिसकी महादशा एवं जिसकी अन्तर्दशा में जिसका प्रत्यन्तर जानना हो उन तीनों ग्रह के महादशावर्षों का गुणनफल ले आवे तब उसमें ४० से भाग देने पर लब्धि दिनादिक प्रत्यन्तरकाल आवेगा। यदि दिनस्थान में ३० से अधिक हो तो ३० से भाग देकर लब्धि मास, शेष दिन रहेगा, ऐसा करने से भी प्रत्यन्तर मासादिक या वर्षादिक बन जायगा।

उदाहरण—

यथा शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर जानना है तो तीनों के वर्षों २०, १६, १० का घात करने पर गुणनफल=२०×१६×१०=३२००, इसमें ४० का भाग देने से लब्धि ८० दिनादि आई, इसमें ३० से भाग दिया तो मासादि २।२० यही चन्द्रमा का प्रत्यन्तर-काल हुआ। ऐसे ही सभी की महादशा-अन्तर्दशा में सभी ग्रहों का प्रत्यन्तर लाकर यथाक्रम अग्रिम चक्रों में अङ्कित किया गया है॥ १६८॥

सूर्य की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू. सू. सू.	सू. सू. चं.	सू. सू. मं.	सू. सू. रा.	सू. सू. बृ.	सू. सू. श.	सू. सू. बु.	सू. सू. के.	सू. सू. शु.	
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	१८
दण्ड	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	०

सूर्य की महादशा चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.चं. चं.	सू.चं. मं.	सू.चं. रा.	सू.चं. बृ.	सू.चं. श.	सू.चं. बु.	सू.चं. के.	सू.चं. शु.	सू.चं. सू.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०	६
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	०
दण्ड	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

सूर्य की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.मं. मं.	सू.मं. रा.	सू.मं. बृ.	सू.मं. श.	सू.मं. बु.	सू.मं. के.	सू.मं. शु.	सू.मं. सू.	सू.मं. चं.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	६
दण्ड	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	०

सूर्य की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.रा. रा.	सू.रा. बृ.	सू.रा. श.	सू.रा. बु.	सू.रा. के.	सू.रा. शु.	सू.रा. सू.	सू.रा. चं.	सू.रा. मं.	योग
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०	१०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२४
दण्ड	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	०

सूर्य की महादशा बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.बृ. गु.	सू.बृ. श.	सू.बृ. बु.	सू.बृ. के.	सू.बृ. शु.	सू.बृ. सू.	सू.बृ. चं.	सू.वृ. मं.	सू.बृ. रा.	योग
मास	१	१	१	०	१	१	०	०	१	९
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	१८
दण्ड	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	०

सूर्य की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.श. श.	सू.श. बु.	सू.श. के.	सू.श. शु.	सू.श. सू.	सू.श. चं.	सू.श. मं.	सू.श. रा.	सू.श. बृ.	योग
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१	११
दिन	२४	१८	१९	२७	२७	२८	१९	२१	१५	१२
दण्ड	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	०

सूर्य की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.बु. बु.	सू.बु. के.	सू.बु. शु.	सू.बु. सू.	सू.बु. चं.	सू.बु. भौ.	सू.बु. रा.	सू.बु. बृ.	सू.बु. श.	योग
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१	१०
दिन	१३	१७	२१	१५	२२	१७	१५	१०	१८	६
दण्ड	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	०

सूर्य की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.के. के.	सू.के. शु.	सू.के. सू.	सू.के. चं.	सू.के. भौ.	सू.के. रा.	सू.के. बृ.	सू.के. श.	सू.के. बु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	६
दण्ड	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	

सूर्य की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	सू.शु. शु.	सू.शु. सू.	सू.शु. चं.	सू.शु. भौ.	सू.शु. रा.	सू.शु. गु.	सू.शु. श.	सू.शु. बु.	सू.शु. के.	योग
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०	१२
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.चं. चं.	चं.चं. मं.	चं.चं. रा.	चं.चं. बृ.	चं.चं. श.	चं.चं. बु.	चं.चं. के.	चं.चं. शु.	चं.चं. सू.	योग
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०	१०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	०
दण्ड	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.मं. मं.	चं.मं. रा.	चं.मं. बृ.	चं.मं. श.	चं.मं. बु.	चं.मं. के.	चं.मं. शु.	चं.मं. सू.	चं.मं. चं.	योग
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०	७
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	०
दण्ड	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	०

चन्द्र की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.रा. रा.	चं.रा. बृ.	चं.रा. श.	चं.रा. बु.	चं.रा. के.	चं.रा. शु.	चं.रा. सू.	चं.रा. चं.	चं.रा. मं.	योग
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	०
दण्ड	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०

चन्द्र की महादशा बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.बृ. बृ.	चं.बृ. श.	चं.बृ. बु.	चं.बृ. के.	चं.बृ. शु.	चं.बृ. सू.	चं.बृ. चं.	चं.बृ. म.	चं.बृ. रा.	योग
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२	१६
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.श. श.	चं.श. बु.	चं.श. के.	चं.श. शु.	चं.श. सू.	चं.श. चं.	चं.श. मं.	चं.श. रा.	चं.श. बृ.	योग
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	०
दण्ड	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	०

चन्द्र की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.बु. बु.	चं.बु. के.	चं.बु. शु.	चं.बु. सू.	चं.बु. चं.	चं.बु. मं.	चं.बु. रा.	चं.बु. बृ.	चं.बु. श.	योग
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२	१७
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	०
दण्ड	५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	०

चन्द्र की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.के. के.	चं.के. शु.	चं.के. सू.	चं.के. चं.	चं.के. मं.	चं.के. रा.	चं.के. बृ.	चं.के. श.	चं.के. बु.	योग
मास	०	१	०	१	०	१	०	१	०	७
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	०
दण्ड	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	०

चन्द्र की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.शु. शु.	चं.शु. सू.	चं.शु. चं.	चं.शु. मं.	चं.शु. रा.	चं.शु. बृ.	चं.शु. श.	चं.शु. बु.	चं.शु. के.	योग
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१	२०
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	०
दण्ड	०	६	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	चं.सू. सू.	चं.सू. चं.	चं.सू. मं.	चं.सू. रा.	चं.सू. वृ.	चं.सू. श.	चं.सू. बु.	चं.सू. के.	चं.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१	६
दिन	६	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	०
दण्ड	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

मंगल की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.मं. मं.	मं.मं. रा.	मं.मं. वृ.	मं.मं. श.	मं.मं. बु.	मं.मं. के.	मं.मं. शु.	मं.मं. सू.	मं.मं. चं.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	२७
दण्ड	३४	३	३६	१६	४६	३४	३०	२१	१५	०
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०

मंगल की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.रा. रा.	मं.रा. बृ.	मं.रा. श.	मं.रा. बु.	मं.रा. के.	मं.रा. शु.	मं.रा. सू.	मं.रा. चं.	मं.रा. मं.	योग
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०	१२
दिन	२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	१८
दण्ड	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	०

मंगल की महादशा बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.बृ. बृ.	मं.बृ. श.	मं.बृ. बु.	मं.बृ. के.	मं.बृ. शु.	मं.बृ. सू.	मं.बृ. चं.	मं.बृ. मं.	मं.बृ. रा.	योग
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१	११
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६
दण्ड	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	०

मङ्गल की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.श. श.	मं.श. बु.	मं.श. के.	मं.श. शु.	मं.श. सू.	मं.श. चं.	मं.श. मं.	मं.श. रा.	मं.श. बृ.	योग
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९
दण्ड	११	३२	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	०

मंगल की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.बु. बु.	मं.बु. के.	मं.बु. शु.	मं.बु. सू.	मं.बु. चं.	मं.बु. मं.	मं.बु. रा.	मं.बु. बृ.	मं.बु. श.	योग
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१	११
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२७
दण्ड	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	०

मंगल की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.के. के.	मं.के. शु.	मं.के. सू.	मं.के. चं.	मं.के. मं.	मं.के. रा.	मं.के. बृ.	मं.के. श.	मं.के. बु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	२७
दण्ड	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	०

मंगल की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.शु. शु.	मं.शु. सू.	मं.शु. चं.	मं.शु. मं.	मं.शु. रा.	मं.शु. बृ.	मं.शु. श.	मं.शु. बु.	मं.शु. के.	योग
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०	१४
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	०
दण्ड	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

मंगल की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.सू. सू.	मं.सू. चं.	मं.सू. मं.	मं.सू. रा.	मं.सू. बृ.	मं.सू. श.	मं.सू. बु.	मं.सू. के.	मं.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६
दण्ड	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	०

मंगल की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	मं.चं. चं.	मं.चं. मं.	मं.चं. रा.	मं.चं. बृ.	मं.चं. श.	मं.चं. बु.	मं.चं. के.	मं.चं. शु.	मं.चं. सू.	योग
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०	७
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	०
दण्ड	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	०

राहु की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.रा. रा.	रा.रा. बृ.	रा.रा. श.	रा.रा. बु.	रा.रा. के.	रा.रा. शु.	रा.रा. सू.	रा.रा. चं.	रा.रा. मं.	योग
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१	३२
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	१२
दण्ड	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	०

राहु की महादशा गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.बृ. बृ.	रा.बृ. श.	रा.बृ. बु.	रा.बृ. के.	रा.बृ. शु.	रा.बृ. सू.	रा.बृ. चं.	रा.बृ. म.	रा.बृ. रा.	योग
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४	२८
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	५	२४
दण्ड	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	०

राहु की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.श. श.	रा.श. बु.	रा.श. के.	रा.श. शु.	रा.श. सू.	रा.श. चं.	रा.श. मं.	रा.श. रा.	रा.श. बृ.	योग
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४	३४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	६
दण्ड	२७	२१	५४	०	१८	३०	५१	५४	४८	०

राहु की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.बु. बु.	रा.बु. के.	रा.बु. शु.	रा.बु. सू.	रा.बु. चं.	रा.बु. मं.	रा.बु. रा.	रा.बु. बृ.	रा.बु. श.	योग
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४	३०
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	१८
दण्ड	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	०

राहु की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.के. के.	रा.के. शु.	रा.के. सू.	रा.के. चं.	रा.के. मं.	रा.के. रा.	रा.के. बृ.	रा.के. श.	रा.के. बु.	योग
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१	१२
दिन	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	१८
दण्ड	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	०

राहु की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.शु. शु.	रा.शु. सू.	रा.शु. चं.	रा.शु. मं.	रा.शु. रा.	रा.शु. बृ.	रा.शु. श.	रा.शु. बु.	रा.शु. के.	योग
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२	३६
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.सू. सू.	रा.सू. चं.	रा.सू. मं.	रा.सू. रा.	रा.सू. बृ.	रा.सू. श.	रा.सू. बु.	रा.सू. के.	रा.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१	१०
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	२४
दण्ड	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	०

राहु की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.चं. चं.	रा.चं. मं.	रा.चं. रा.	रा.चं. बृ.	रा.चं. श.	रा.चं. बु.	रा.चं. के.	रा.चं. शु.	रा.चं. सू.	योग
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०	१८
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	०
दण्ड	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

राहु की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	रा.मं. मं.	रा.मं. रा.	रा.मं. बृ.	रा.मं. श.	रा.मं. बु.	रा.मं. के.	रा.मं. शु.	रा.मं. सू.	रा.मं. चं.	योग
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१	१२
दिन	२२	२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	१८
दण्ड	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	०

गुरु की महादशा गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.बृ. बृ.	बृ.बृ. श.	बृ.बृ. बु.	बृ.बृ. के.	बृ.बृ. शु.	बृ.बृ. सू.	बृ.बृ. चं.	बृ.बृ. मं.	बृ.बृ. रा.	योग
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३	२५
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	१८
दण्ड	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	०

गुरु की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.श. श.	बृ.श. बु.	बृ.श. के.	बृ.श. शु.	बृ.श. सू.	बृ.श. चं.	बृ.श. मं.	बृ.श. रा.	बृ.श. बृ.	
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४	३०
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	१२
दण्ड	२४	११	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	०

गुरु की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.बु. बु.	बृ.बु. के.	बृ.बु. शु.	बृ.बु. सू.	बृ.बु. चं.	बृ.बु. भौ.	बृ.बु. रा.	बृ.बु. बृ.	बृ.बु. श.	योग
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४	२७
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	६
दण्ड	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	०

गुरु की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.के. के.	बृ.के. शु.	बृ.के. सू.	बृ.के. चं.	बृ.के. भौ.	बृ.के. रा.	बृ.के. बृ.	बृ.के. श.	बृ.के. बु.	योग
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१	११
दिन	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	६
दण्ड	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	०

गुरु की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.शु. शु.	बृ.शु. सू.	बृ.शु. चं.	बृ.शु. म.	बृ.शु. रा.	बृ.शु. बृ.	बृ.शु. श.	बृ.शु. बु.	बृ.शु. के.	योग
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१	३२
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.सू. सू.	बृ.सू. चं.	बृ.सू. मं.	बृ.सू. रा.	बृ.सू. बृ.	बृ.सू. श.	बृ.सू. बु.	बृ.सू. के.	बृ.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	१	१	१	१	१	१	९
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	१८
दण्ड	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	०

गुरु की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.चं. चं.	बृ.चं. मं.	बृ.चं. रा.	बृ.चं. बृ.	बृ.चं. श.	बृ.चं. बु.	बृ.चं. के.	बृ.चं. शु.	बृ.चं. सू.	योग
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०	१६
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.मं. मं.	बृ.मं. रा.	बृ.मं. बृ.	बृ.मं. श.	बृ.मं. बु.	बृ.मं. के.	बृ.मं. शु.	बृ.मं. सू.	बृ.मं. चं.	योग
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०	११
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	६
दण्ड	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	०

गुरु की महादशा राहु की अन्तर्दशा प्रत्यन्तर—

ग्रह	बृ.रा. रा.	बृ.रा. बृ.	बृ.रा. श.	बृ.रा. बु.	बृ.रा. के.	बृ.रा. शु.	बृ.रा. सू.	बृ.रा. चं.	बृ.रा. मं.	योग
मास	४	२	४	४	१	४	१	२	१	२८
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	२४
दण्ड	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	०

शनि की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.श. श.	श.श. बु.	श.श. के.	श.श. शु.	श.श. सू.	श.श. चं.	श.श. मं.	श.श. रा.	श.श. बृ.	योग
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४	३६
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	३
दण्ड	२९	२६	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	०

शनि की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.बु. बु.	श.बु. के.	श.बु. शु.	श.बु. सू.	श.बु. चं.	श.बु. मं.	श.बु. रा.	श.बु. बृ.	श.बु. श.	योग
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५	३२
दिन	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	९
दण्ड	१७	३१	३०	२७	४५	३१	३१	१२	२६	०

शनि की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.के. के.	श.के. शु.	श.के. सू.	श.के. चं.	श.के. मं.	श.के. रा.	श.के. बृ.	श.के. श.	श.के. बु.	योग
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१	१३
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	९
दण्ड	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	११	३२	०

शनि की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.शु. शु.	श.शु. सू.	श.शु. चं.	श.शु. मं.	श.शु. रा.	श.शु. बृ.	श.शु. श.	श.शु. बु.	श.शु. के.	योग
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२	३८
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	०
दण्ड	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

शनि की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.सू. सू.	श.सू. चं.	श.सू. मं.	श.सू. रा.	श.सू. बृ.	श.सू. श.	श.सू. बु.	श.सू. के.	श.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१	११
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	१२
दण्ड	६	३०	५६	१८	३६	९	२७	५७	०	०

शनि की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.चं. चं.	श.चं. मं.	श.चं. रा.	श.चं. बृ.	श.चं. श.	श.चं. बु.	श.चं. के.	श.चं. शु.	श.चं. सू.	योग
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०	१९
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	०
दण्ड	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	०

शनि की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.मं. मं.	श.मं. रा.	श.मं. बृ.	श.मं. श.	श.मं. बु.	श.मं. के.	श.मं. शु.	श.मं. सू.	श.मं. चं.	योग
मास	०	१	१	२	१	०	२	१	१	१३
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	२९	३	९
दण्ड	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५	०

शनि की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	श.रा. रा.	श.रा. बृ.	श.रा. श.	श.रा. बु.	श.रा. के.	श.रा. शु.	श.रा. सू.	श.रा. चं.	श.रा. मं.	योग
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१	३४
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	६
दण्ड	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	०

शनि की महादशा गुरुकी अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	श.बृ. बृ.	श.बृ. श.	श.बृ. बु.	श.बृ. के.	श.बृ. शु.	श.बृ. सू.	श.बृ. चं.	श.बृ. मं.	श.बृ. रा.	योग
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४	३०
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१२
दण्ड	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	०

बुध की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.बु. बु.	बु.बु. के.	बु.बु. शु.	बु.बु. सू.	बु.बु. चं.	बु.बु. मं.	बु.बु. रा.	बु.बु. बृ.	बु.बु. श.	योग
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४	३२
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	९
दण्ड	५०	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१७	०

बुध की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.के. के.	बु.के. शु.	बु.के. सू.	बु.के. चं.	बु.के. मं.	बु.के. रा.	बु.के. बृ.	बु.के. श.	बु.के. बु.	योग
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१	११
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२७
दण्ड	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४	०

बुध की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.शु. शु.	बु.शु. सू.	बु.शु. चं.	बु.शु. मं.	बु.शु. रा.	बु.शु बृ.	बु.शु. श.	बु.शु. बु.	बु.शु. के.	योग
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१	३४
दिन	२०	२१	२५	२६	३	१६	११	२४	२६	१०
दण्ड	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

बुध की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.सू. सू.	बु.सू. चं.	बु.सू. मं.	बु.सू. रा.	बु.सू. बृ.	बु.सू. श.	बु.सू. बु.	बु.सू. के.	बु.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१	१०
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	६
दण्ड	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	०

बुध की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.चं. चं.	बु.चं. मं.	बु.चं. रा.	बु.चु. बृ.	बु.चं. श.	बु.चं. बु.	बु.चं. के.	बु.चं. शु.	बु.चं. सू.	योग
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०	१७
दिन	१२	२६	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	०
दण्ड	३०	४५	३०	०	४५	१६	४५	०	३०	०

बुध की महादशा मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.मं. मं.	बु.मं. रा.	बु.मं. बृ.	बु.मं. श.	बु.मं. बु.	बु.मं. के.	बु.मं. शु.	बु.मं. सू.	बु.मं. चं.	योग
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०	११
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२६	१७	२६	२७
दण्ड	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५	०

बुध की महादशा राहु की अन्तर्दशा प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.रा. रा.	बु.रा. बृ.	बु.रा. श.	बु.रा. बु.	बु.रा. के.	बु.रा. शु.	बु.रा. सू.	बु.रा. चं.	बु.रा. मं.	योग
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१	०
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	१८
दण्ड	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	०

बुध की महादशा गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.बृ. बृ.	बु.बृ. श.	बु.बृ. बु.	बु.बृ. बृ.	बु.बृ. के.	बु.बृ. शु.	बु.बृ. सू.	बु.बृ. चं.	बु.बृ. मं.	योग
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४	२७
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६
दण्ड	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	०

बुध की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	बु.श. श.	बु.श. बु.	बु.श. के.	बु.श. शु.	बु.श. सू.	बु.श. चं.	बु.श. मं.	बु.श. रा.	बु.श. बृ.	योग
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४	३२
दिन	३	१७	२६	११	१८	१०	२६	२५	९	९
दण्ड	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	०

केतु की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.के. के.	के.के. शु.	के.के. सू.	के.के. चं.	के.के. मं.	के.के. रा.	के.के. बृ.	के.के. श.	के.के. बु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	२७
दण्ड	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	०

केतु की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.शु. शु.	के.शु. सू.	के.शु. चं.	के.शु. मं.	के.शु. रा.	के.शु. बृ.	के.शु. श.	के.शु. बु.	के.शु. के.	योग
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०	१४
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	०
दण्ड	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

केतु की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.सू. सू.	के.सू. चं.	के.सू. मं.	के.सू. रा.	के.सू. बृ.	के.सू. श.	के.सू. बु.	के.सू. के.	के.सू. शु.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६
दण्ड	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	०

केतु की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.चं. चं.	के.चं. मं.	के.चं. रा.	के.चं. बृ.	के.चं. श.	के.चं. बु.	के.चं. के.	के.चं. शु.	के.चं. सू.	योग
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०	७
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	०
दण्ड	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	०

केतु की महादशा मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.मं. मं.	के.मं. रा.	के.मं. बृ.	के.मं. श.	के.मं. बु.	के.मं. के.	के.मं. शु.	के.मं. सू.	के.मं. चं.	योग
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२
दण्ड	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५	०

केतु की महादशा राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.रा. रा.	के.रा. बृ.	के.रा. श.	के.रा. बु.	के.रा. के.	के.रा. शु.	के.रा. सू.	के.रा. चं.	के.रा. मं.	योग
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०	१
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	१८
दण्ड	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	०

केतु की महादशा गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

	के.बृ. बृ.	के.बृ. श.	के.बृ. बु.	के.बृ. के.	के.बृ. के.	के.बृ. सू.	के.बृ. च.	के.बृ. मं.	के.बृ. रा.	योग
मास	२३	१	१	०	१	०	०	०	१	११
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६
दण्ड	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	०

केतु की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.श. श.	के.श. बु.	के.श. के.	के.श. शु.	के.श. सू.	के.श. चं.	के.श. मं.	के.श. रा.	के.श. बृ.	योग
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९
दण्ड	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	०

केतु की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	के.बु. बु.	के.बु. के.	के.बु. शु.	के.बु. सू.	के.बु. चं.	के.बु. मं.	के.बु. रा.	के.बु. बृ.	के.बु. श.	योग
मास	१	०	१	०	०	०	२	३	१	११
विन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२७
वण्ड	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	८

(९) शुक्र की महादशा शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर---

ग्रह	शु.शु. शु.	शु.शु. सू.	शु.शु. चं.	शु.शु. मं.	शु.शु. रा.	शु.शु. बृ.	शु.शु. श.	शु.शु. बु.	शु.शु. के.	योग
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२	४०
दिन	१०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर---

ग्रह	शु.सू. सू.	शु.सू. चं.	शु.सू. मं.	शु.सू. रा.	शु.सू. बृ.	शु.सू. श.	शु.सू. बु.	शु.सू. के.	शु.सू. शु.	योग
मास	०	१	७	१	१	१	१	०	२	१२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर---

ग्रह	शु.चं. चं.	शु.चं. मं.	शु.चं. रा.	शु.चं. बृ.	शु.चं. श.	शु.चं. बु.	शु.चं. के.	शु.चं. शु.	शु.चं. सू.	योग
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१	२०
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर---

ग्रह	शु.मं. मं.	शु.मं. रा.	शु.मं. बृ.	शु.मं. श.	शु.मं. बु.	शु.मं. के.	शु.मं. शु.	शु.मं. सू.	शु.मं. चं.	योग
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१	१४
दिन	१४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	२
दण्ड	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा राहु की अन्तर्दशा म प्रत्यन्तर—

ग्रह	शु.रा. रा.	शु.रा. बृ.	शु.रा. श.	शु.रा. बु.	शु.रा. के.	शु.रा. शु.	शु.रा. सू.	शु.रा. चं.	शु.रा. मं.	योग
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२	३६
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	शु.बृ. बृ.	शु.बृ. श.	शु.बृ. बु.	शु.बृ. के.	शु.बृ. शु.	शु.बृ. सू.	शु.बृ. चं.	शु.बृ. मं.	शु.बृ. रा.	योग
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४	३२
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०
दण्ड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की महादशा शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	शु.श. श.	शु.श. बु.	शु.श. के.	शु.श. शु.	शु.श. सू.	शु.श. चं.	शु.श. मं.	शु.श. रा.	शु.श. बृ.	योग
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५	३८
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	०
दण्ड	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०

शुक्र की महादशा बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर—

ग्रह	शु.बु. बु.	शु.बु. के.	शु.बु. शु.	शु.बु. सू.	शु.बु. चं.	शु.बु. मं.	शु.बु. रा.	शु.बु. बृ.	शु.बु. श.	योग
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५	३४
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	
दण्ड	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	

शुक्र की महादशा केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर--

ग्रह	शु.के. के.	शु.के. शु.	शु.के. सू.	शु.के. चं.	शु.के. मं.	शु.के. रा.	शु.के. बृ.	शु.के. श.	शु.के. बु.	योग
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१	१४
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	०
दण्ड	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०

योगिनीदशा-विचार--

जन्मर्क्षसंख्या त्रियुता विभक्ताऽष्टभिस्तदा यत्किल शेषमत्र ।
तत्संख्यका जन्मभवा विचिन्त्या सद्योगिनीसंज्ञकमङ्गलाद्या ॥१६९॥

अश्विनी से गिन कर जन्म नक्षत्र की संख्या जो हो उसमें ३ मिला कर ८ से भाग देने पर शेषतुल्य मङ्गलादिक योगिनी दशा (जन्मकालिक) होती है।

उदाहरण---

यथा किसी का जन्मनक्षत्र अनुराधा है जिसकी संख्या १७ में ३ जोड़ने से २० हुआ, इसमें ८ से भाग दिया तो शेष ४ रहा, अतः चौथी दशा भ्रामरी की सिद्ध हुई (यही अधःस्थित चक्र से भी स्पष्ट है) ॥१६९॥

योगिनी के नाम अधिपति, दशावर्ष--

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा ।
उल्का सिद्धा सङ्कटेति योगिन्योऽष्टौ शिवोदिताः ॥ १७० ॥

स्वनामसदृशाः सर्वा दशाकाले फलप्रदाः ।
जातकस्य कृते यासामधीशाः खेचरा इमे ॥ १७१ ॥

चन्द्रार्कजीवभौमेन्दुसुतार्किसितराहवः ।
दशावर्षाणि चैतासामेकाद्यष्टौ यथाक्रमात् ॥ १७२ ॥

मंगला (१), पिङ्गला (२), धान्या (३), भ्रामरी (४), भद्रिका (५), उल्का (६), सिद्धा (७) तथा संकटा (८) ये आठ योगिनियों के नाम श्रीशङ्करजी के कथित हैं, इनके स्वामी ग्रह क्रम से चन्द्र (१), सूर्य, (२), बृहस्पति (३), मंगल (४), बुध (५), शनैश्चर (६), शुक्र (७), एवं राहु (८) हैं। योगिनियों के महादशा वर्ष क्रम से १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, नियत हैं ॥१७१-१७२॥

स्पष्टता के लिये चक्र—

योगिनी	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८
योगिनीश	चं.	सू.	बृ.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.
जन्म नक्षत्र	×	×	×	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.
	आ.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	ह.
	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.
	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	०	५

योगिनीदशा का भुक्त-भोग्यानयन—

दशावर्षमितिर्गुण्या भयातेन विभाजिता ।
भभोगेन फलं भुक्तं ततो भोग्यं पुरोक्तवत् ॥१७३॥

विंशोत्तरी दशा की तरह यहाँ भी भयात को दशावर्ष से गुण कर भभोग से भाग देने पर लब्धि वर्षादि दशा का भुक्त एवं उसको दशावर्ष में घटा देने से शेष भोग्य होता है।

उदाहरण

किसी का जन्म भ्रामरी की महादशा में है, भयात पल ४६१ भभोग-पल ३४८७ अतः भयात को भ्रामरी वर्ष ४ से गुणा ४६१ × ४ = १८४४ इसमें भभोग ३४८७ से भाग देने के लिये—

३४८७) १८४४ (० = वर्ष
0000
―――
१८४४
× १२
―――

३४८७) २२१२८ (६=मास
२०९२२
१२०६
× ३०
३४८७) ३६१८० (१०=दिन
३४८७०
१३१०
× ६०
३४८७) ७८६०० (२२=दण्ड
६९७४
८८६०
६९७४
१८८६
× ६०
३४८७) ११३१६० (३२=पल
१०४६१
८५५०
६९७४
१५७६ (त्याज्य)

अतः लब्धि वर्षादि ० । ६ । १० । २२ । ३२ यही भुक्त हुआ इसको दशावर्ष ४ में घटाने पर शेष—

४ । ० । ० । ० । ०
० । ६ । १० । २२ । ३२
३ । ५ । १९ । ३७ । २८ यह भोग्य हुआ ॥१७३॥

योगिनी-अन्तर्दशा-साधन—

दशाद्वयस्य यो घातः स हि षट्त्रिंशता हृतः ।
वर्षाद्यन्तर्दशामानं योगिनीजनितं फलम् ॥१७४॥

जिस योगिनी की महादशा में जिसका अन्तर जानना हो, दोनों के दशा वर्षों का घात करें, ३६ से भाग दे तब जो लब्धि (वर्षादिक) आवे वही अन्तर्दशा का मान होगा।

यथा—संकटा की महादशा में भ्रमरी का अन्तर लाना है तो दोनों के दशावर्षों ८, ४ का गुणनफल ३२ हुआ, इसमें ३६ का भाग दिया $\frac{३२}{३६} = \frac{८}{९}$ अतः वर्ष स्थान में शून्य आया, शेष ८ को १२ से गुणने पर ९६ इसमें ९ का भाग देने पर १० मास, फिर शेष ६ को ३० से गुण कर १८० नौ का भाग दिया तो दिन २० आया, इस प्रकार संकटा में भ्रामरी का अन्तर वर्षादिक ०। १०। २० अर्थतः मासादि १०। २० आया। इसी तरह सभी 'योगिनियों की महादशा में सभी के अन्तर जान कर अधोलिखित चक्रो में अङ्कित किया गया है ॥ १७४ ॥

सरल रीति से योगिनी का अन्तर्दशाज्ञान—

दशघ्ने दशावर्षमाने फलं यद्दिनाख्यं तदेवान्तरं मङ्गलायाः।
भवेत्तद्दशायां तदेवाग्रगाणामपि द्व्यादिनिघ्नं क्रमादन्तराणि ॥१७५॥

जिस योगिनी के दशावर्ष को १० गुणित कर दिया जाय उतने दिन उस दशा में मङ्गला का अन्तर होता है, फिर उसी को २, ३, ४, ५, ६, ७ से गुण देने पर क्रम से पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा का अन्तर होगा।

उदाहरण—

यथा पिङ्गला की महादशा में सब का अन्तर लाना है तो उसके दशावर्ष २ दशगुणित २० हुआ, यही पिङ्गला की दशा में मङ्गला का अन्तर है, यही द्विगुणित २० × २ = ४० दिन अर्थात् १ मास १० दिन पिङ्गला का, उसी का त्रिगुणित २० × ३ = ६० दिन = २ मास धान्या का ऐसे हीं भ्रामरी आदि का—आसानी से अन्तर का ज्ञान हो जाता है ॥ १७५ ॥

(१) मङ्गला की महादशा में सभी का अन्तर—

योगिनी	मं. मं.	मं. पिं.	मं. धा.	मं. भ्रा.	मं. भ.	मं. उ.	मं. सिं.	मं. सं.	योग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	०	०	१	१	०	२	२	२	०
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	०

(२) पिंगला की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	पि. पि.	पि. धा.	पि. भ्रा.	पि. भ.	पि. उ.	पि. सि.	पि. सं.	पि. मं.	योग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	२
मास	१	२	२	३	४	४	५	०	०
दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	०

(३) धान्या की महादशा में सभी का अन्तर—

योगिनी	धा. धा.	धा. भ्रा.	धा. भ.	धा. उ.	धा. सि.	धा. सं.	धा. मं.	धा. पि.	योग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	३
मास	३	४	५	६	७	८	१	२	०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(४) भ्रामरी की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	भ्रा. भ्रा.	भ्रा. भ.	भ्रा. उ.	भ्रा. सि.	भ्रा. सं.	भ्रा. मं.	भ्रा. पि.	भ्रा. धा.	योग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	४
मास	५	६	८	९	१०	१	२	४	०
दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०	०

(५) भद्रिका की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	भ. भ.	भ. उ.	भ. सि.	भ. सं.	भ. मं.	भ. पि.	भ. धा.	भ. भ्रा.	योग
वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०	५
मास	८	१०	११	१	१	३	५	६	०
दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०

(६) उल्का की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	उ. उ.	उ. सि.	उ. सं.	उ. मं.	उ. पि.	उ. धा.	उ. भ्रा.	उ. भ.	योग
वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०	६
मास	०	२	४	२	४	६	८	१०	०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(७) सिद्धा की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	सि. सि.	सि. सं.	सि. मं.	सि. पि.	सि. धा.	सि. भ्रा.	सि. भ.	सि. उ.	योग
वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१	७
मास	४	६	२	४	७	९	११	२	०
दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	०

(८) संकटा की महादशा में सब का अन्तर—

योगिनी	सं. सं.	सं. मं.	सं. पि.	सं. धा.	सं. भ्रा.	सं. भ.	सं. उ.	सं. सि.	
वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१	८
मास	९	२	५	८	१०	१	४	६	०
दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	०

नक्षत्रायु का साधन—

भयातहीना नवतिर्वेदगुण्या त्रिभाजिता ।
लब्धं वर्षादिकं ज्ञेयं नक्षत्रायुः कलौ युगे ॥ १७६ ॥

घट्यादिक भयात को ९० में घटा कर जो शेष रहे उसको ४ से गुणा कर ३ से भाग देने पर जो लब्धि वर्षादिक आवे वही उस जातक के लिये नक्षत्रायु होगी (इसी आयु का महत्व महर्षि पराशर आदि ने कलियुग के लिये विशेष रूप से कहा है)। यथा—किसी का भयात ७।४१ है तो इसको ९० में घटाने से

शेष ६०–७। ४१=८२ । १६ को ४ से गुणा ३२८ । ७६=३२६।
१६ इसमें ३ से भाग दिया—

३) ३२६ । १६ (१०६
३२७
२ । १६
× १२
२४ । १९२ = २७ । १२
३) २७ । १२ (६ । ४
२७ । १२
० ०

इस प्रकार लब्धि वर्षादि १०६ । ६ । ४ नक्षत्रायु हुई ॥ १७६ ॥

जैमिनि के मत से आयु का विचार—

आयुर्विचारोऽतिगभीर आद्यैर्विवेचितोऽनेकविधो महद्भिः ।
तमेव संक्षिप्तमहं प्रवक्ष्ये सुखावबोधं बहुधाऽनुभूतम् ॥ १७७ ॥

प्राचीन ऋषि-मुनियों ने जातक की आयु के सम्बन्ध में अनेक प्रकार से गूढ़ विचार किया है, उसीको संक्षेप रूपमें स्वानुभूत कुछ विचार में कहता हूँ ताकि छात्रों को आसानी से उसके तत्त्वों का परिज्ञान हो जाय, यथा—

लग्नाष्टमेशावथ लग्नचन्द्रौ होरातनू चाप्याधिनायकौ स्तः ।
आयुर्विचारे नियतावतस्तैस्त्रिभिः प्रकारैः करणीयमायुः ॥ १७८ ॥
चेल्लग्नजायाधिगतो हिमांशुस्तदैव लग्नेन्दुवशात्प्रसाध्यम् ।
तदन्यथा चेच्छनिचन्द्रमोभ्यां यथोदितं जैमिनिसूत्रकारैः ॥ १७९ ॥
त्रिभिः प्रकारैर्यदि दीर्घमध्यहीनायुषामन्यतमैकमेव ।
समागतं विद्धि तदा तदेव युक्तं न का चिन्मतभेदशङ्का ॥ १८० ॥
भेदद्वये चायुषि तत्प्रकारद्वयागतं वेद्यमथैवमत्र ।
भेदत्रये केवललग्नहोरालग्नोद्भवं ग्राह्यमतिप्रवीणैः ॥ १८१ ॥

एतत्प्रसङ्गे बहवो हि भेदा निरूपिताः सन्ति विचारमार्गे ।
शनैश्चरे योगकरे स्वगेहतुङ्गान्यगे श्रेणिनिपात एवम् ॥ १८२ ॥
गुरौ विलग्ने मदनस्थिते वा शुभेक्षिते तत्परिवृद्धिरुक्ता ।
दीर्घस्य वृद्धिस्तु ततोऽधिकायुर्हीने निपातस्तदभाव एव ॥ १८३ ॥

आयु के विचार में लग्नेश और अष्टमेश (प्रथम), लग्न और चन्द्रमा (द्वितीय) तथा प्रथम लग्न और होरालग्न (तृतीय) अधिनायक माने गये हैं, इसलिये तीनों प्रकार से आयु का निश्चय करना चाहिये। द्वितीय प्रकार के लिये अवसरभेद से विकल्प जाने अर्थात् यदि लग्न या सप्तम में चन्द्रमा पड़ता हो तब यथाकथित लग्न—चन्द्रमा से ही (द्वितीय प्रकारागत) आयु का ग्रहण करना चाहिये, यदि वैसी स्थिति (लग्न या सप्तम में चन्द्रमा) न रहे तो शनि–चन्द्रमा से विचार करना उचित है जैसा कि महर्षि जैमिनि ने अपने ग्रन्थ में वर्णन किया है। इस तरह यदि तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु (दीर्घायु, मध्यायु या अल्पायु) आवे तो निःशङ्क उसीको मानना चाहिये (सब आगे आयु के स्पष्टीकरण में तीनों प्रकार संबद्ध छः योगकारकों का अंशयोग होगा)। यदि तीनों प्रकार से आयु में विसंवाद पड़े अर्थात् एक से अल्पायु या मध्यायु दो से दीर्घायु (और भी कई भेद होंगे) तो दो प्रकार से आई हुई आयु मानना चाहिये यदि तीनों प्रकार की आयु परस्पर भिन्न (एक से अल्पायु, द्वितीय से मध्यायु तृतीय से दीर्घायु) हों तो अन्तिम प्रकार (लग्न और होरा लग्न) वाली ही आयु का परिग्रहण करना आवश्यक है।

यदि गृहीत आयु के योग कारकों में शनैश्चर पड़े तो कि अपने गृह (मकर कुम्भ) उच्च (तुला) के अतिरिक्त राशि पर बैठा हो तो श्रेणिनिपात (कक्षाह्रास) अर्थात् दीर्घायु में मध्यायु, मध्यायु में अल्पायु जानना चाहिये (अपने उच्च गृह में ही रहे तो कक्षाह्रास नहीं यह अर्थतः सिद्ध होता है), एवं बृहस्पति लग्न, सप्तम म रहते (पापग्रह से दृष्ट या युत न हो) शुभग्रह से दृष्ट हो तो कक्षा की वृद्धि याने अल्पायु में मध्यायु, मध्यायु में दीर्घायु जानना चाहिए, दीर्घायु में वृद्धि का अर्थ उससे भी अधिक आयु तथा अल्पायु में कक्षाह्रास का अर्थ कुछ भी आयु नहीं यह मानना चाहिये॥ १७८–१८३ ॥

अधिनायकों को अवस्थान (चर, स्थिर, द्विस्वभाव) पर से दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु जानने का उपाय—

आयुर्नायकयोरेकतरो द्वन्द्वेऽपरः स्थिरे ।
चरभे वाऽप्युभौ स्यातां तदा दीर्घायुरुच्यते ॥ १८४ ॥
उभौ द्वन्द्वे पृथग् द्वन्द्वातिरिक्ते वा यदा तदा ।
मध्यायुरन्यथात्वे तु हीनायुर्मुनिसम्मतम् ॥ १८५ ॥

तीनों प्रकार में दो दो अधिनायकों का एक साथ विचार किया जाता है। यदि दोनों जन्मकालिक कुण्डली में चरराशियों (मेष, कर्क, तुला, मकर) में पड़ें या एक द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) में, दूसरा स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में तो उस जातक को दीर्घायु समझना चाहिये। यदि दोनों द्विस्वभाव राशि में अथवा कोई एक स्थिर में दूसरा चर में तो मध्यायु। इन दो नियमों के विरुद्ध (अर्थात् दोनों स्थिर में अथवा एक चर में दूसरा द्विस्वभाव में) पड़े तो अल्पायु मानना चाहिये ॥ १८४–१८५ ॥

स्पष्टता के लिये चक्र—

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
एक चर में दूसरा चर में	एक चर में दूसरा स्थिर में	एक चर में दूसरा द्विस्वभाव में
एक स्थिर में दूसरा द्विस्वभाव में	एक स्थिर में दूसरा चर में	एक स्थिर में दूसरा स्थिर में
एक द्विस्वभाव में दूसरा स्थिर में	एक द्विस्वभाव में दूसरा द्विस्वभाव में	एक द्विस्वभाव में दूसरा चर में

दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु के प्रत्येक में ३ भेद—

रदाः षट्कृतिः शून्यवेदाश्च खण्डास्त्रिधा स्थापिता एकदस्रत्रिगुण्याः ।
क्रमाब्दा भवन्त्यायुषामल्पमध्यसुदीर्घाभिधानां प्रकारानुमत्या ॥१८६॥

उपरि कथित आयु के भेद जानने के लिये ३२, ३६, ४० इन तीन खण्डों को अधोऽधः क्रम से तीन तीन जगह रखे, और प्रत्येक पंक्ति में क्रमशः १, २, ३ इन

अङ्कों से गुण देने पर प्रथम पंक्तिस्थ एक प्रकार से आगत आयु का अल्पायु, मध्यायु, दीर्घायु, के द्वितीय पंक्तिस्थ दो प्रकार से आयु के एवं तृतीयपंक्तिस्थ तीनों प्रकार से आई हुई आयु के भेद (वर्षात्मक) हो जायेंगे। उपर, १ से गुणने पर भी वे ही अङ्क, ३२, ३६, ४० मध्य में २ से गुणने पर ६४, ७२, ८० नीचे ३ से गुणने पर ९६, १०८, १२० होंगे॥ १८६॥

स्पष्टार्थ चक्र—

एक प्रकार से	दो प्रकार से	तीन प्रकार से	
३२ × १ = ३२	३६ × १ = ३६	४० × १ = ४०	अल्पायु
३२ × २ = ६४	३६ × २ = ७२	४० × २ = ८०	मध्यायु
३२ × ३ = ९६	३६ × ३ = १०८	४० × ३ = १२०	दीर्घायु
प्रथम खण्ड ३२	द्वितीय खण्ड ३६	तृतीय खण्ड ४०	खण्ड

आगत आयु के स्फुटीकरण का दिग्दर्शन—

राश्यादिगे योगकरे तु पूर्णं राश्यन्तगेनैव कथञ्चिदायुः।
मध्येऽनुपाताद् गणितागमज्ञैः संसाधनीयं गतभागजातम् ॥१८७॥

आयुर्नायक ग्रहादिकों को राश्यादि में रहने से पूर्ण आयु (पण्डित खण्ड के तुल्य) तथा राश्यन्त में रहने से कुछ भी आयु नहीं होती, अतः आदि–अन्त के भीतर जहां कहीं रहें उनके गत अंशों की पृथक् पृथक् या योग कर समभाग की आयु का ज्ञान अनुपात से करना चाहिये॥ १८७॥

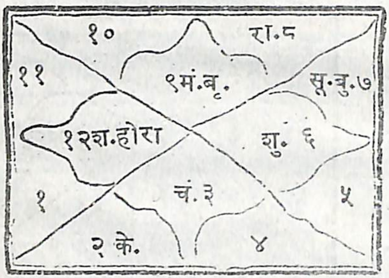
स्फुटीकरण की रीति—

निखिलयोगकरांशयुतिर्हृता निखिलसंख्यकया फलमंशकाः।
उचितखण्डगुणाःखगुणोद्धृताः फलविहीन मदो भवति स्फुटम्॥१८८॥

पूर्वोक्त नियमों के अनुसार जो आयु गृहीत हुई हो उसके योग कारक जितने (एक प्रकारागत में दो, द्विप्रकारागत में चार, त्रिप्रकारागत में छः) हों सभी

के अंशादिकों (राशि छोड़ कर) का योग कर उसमें योगकारकों की संख्या से भाग देने से लब्धि अंशादिक समभाग आवेगा। उसको उचित खण्ड (एक प्रकारागत में ३२ दो में ३६, तीन में ४०) से गुणा कर ३० से भाग देने पर लब्धि वर्षादिक सभी की सामूहिक अंशोद्भव आवेगी, उसको पूर्वागत (प्रकारभेद से अल्पायु मध्यायु, दीर्घायु जो हो) आयु में घटाने से शेषतुल्य जातक की स्फुटायु होगी ।।१८८।।

(१) उदाहरण-- (ब)



लग्नेशगुरु ८।२८।११।२० अष्टमेश चन्द्र २।१८।४३।३३
प्रथम लग्न ८।२३।२१।११ होरालग्न ११।१६।५।२५

इस चक्र में (१) लग्नेश बृहस्पति, अष्टमेश चन्द्रमा दोनों द्विस्वभाव में है अतः (श्लोक १८५ के अनुसार) मध्यायु योग हुआ।

(२). चन्द्रमा सप्तम में है इसलिये लग्न एवं चन्द्रमा से ही द्वितीयप्रकारागत लेना चाहिये, तदनुसार लग्न चन्द्रमा दोनों को द्विस्वभाव में रहने के कारण मध्यायु।

(३) लग्न, होरालग्न भी द्विस्वभाव में ही है अतः इससे भी मध्यायु योग।

इस तरह यहाँ तीनों प्रकार से मध्यायु आने के कारण मध्यायु निश्चित हुआ (सामान्य नियम से), परन्तु विशेष वचन (श्लोक १८३) से) बृहस्पति लग्न में है अतः कक्षावृद्धि अर्थात् मध्यायु से दीर्घायु परिणत होता है, इसलिये यही दीर्घायु योग मान्य हुआ, जिसके योग-कारक लग्नेश बृहस्पति और अष्टमेश चन्द्रमा हुए

* यहाँ ध्यान रखने की बात है कि ऊपर अंशादिक भाज्य है जिसमें नीचे भाजक ३० से भाग देकर वर्षादि लब्धि लाना है, अतः प्रथम स्थान में भाग देने से वर्ष, शेष में अंश स्थान का शेष तथा कलादिक सभी खण्डों का परिग्रहण करना आवश्यक है अर्थतः सभी को १२ से गुण कर गुणन फल को षष्टिशुद्ध कर तब हर से भाग देकर लब्धि मास, एवं, उसके शेष में अग्रिम विकलादिक को भी मासशेष मान कर ३० से गुण दे हर ३० से भाग दे अर्थतः मास आने पर शेष स्वयं दिनादिक

(एक प्रकार से), इन्हीं दो के अंशों पर से स्फुटीकरण करना उचित है। अत्र श्लोक १८८ के अनुसार

बृ. ८।२८।११।२०
चं. २।१८।४३।३३

राशि छोड़ कर अंशयोग=४६।५४।५३ योगकारक २ ग्रह हैं। अतः दो से भाग दिया तो समभाग २३।२७।२६।३० आया। यहाँ एक ही प्रकार से दीर्घायु परिणत हुआ है, अतः प्रथम खण्ड ३२ से इसको गुणा

(२३।२७।२६।३०) × ३२=७३६। ८६४ । १९९६ । ९६०

षष्टिशुद्ध करने पर

=७५० ।५२।३२ इसमें ३० का भाग देने के लिये

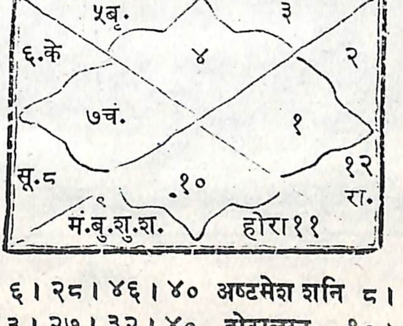
३०) ७५०।५२।३२ (२५=वर्ष
७५०
०
३०) ५२।३२ (१=मास
३०
२२।३२ (दिन, दण्ड)

अतः लब्धि वर्षादिक २५।१।२२।३२ आई, इसको एक प्रकार से सिद्ध दीर्घायु ९६ में घटाया तो शेष

२५।१।२२।३२
९६।०।०।०

स्फुटायु= ७०।१०।७।२८ आई।

(२) उदाहरण—(द)



लग्नेश चन्द्रमा ६।२८।४६।४० अष्टमेश शनि ८।२७।४६।११
प्रथमलग्न ३।२७।३२।४० होरालग्न १०।२७।३५।[illegible]

इस चक्र में--(१) लग्देश चन्द्रमा चर में अष्टमेश शनैश्चर द्विस्वभाव में हैं अतः अल्पायु।

(२) लग्न और चन्द्रमा दोनों चरमें हैं इसलिये दीर्घायु।

(३) लग्न चर में होरालग्न स्थिर में अतः मध्यायु।

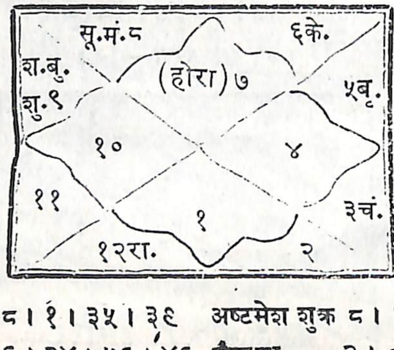
इसमें तीनों प्रकार से भिन्न भिन्न आयु सिद्ध होती है, अतः श्लोक १८१ के अनुसार लग्न और होरालग्न (तृतीय प्रकार) से सिद्ध आयु का ग्रहण करना उचित है, इसलिये उसके योगकारक लग्न और होरालग्न का अंशयोग अपेक्षित होगा--

लग्न ३ । २७ । ३२ । ४०
हो० लग्न १० । २७ । ३५ । २९

केवल अंशयोग = ५५ । ८ । ९ योग कारक संख्या

२ से भाग दनपर समभाग २७ । ३४ । ४ । ३० यहाँ भी एक ही प्रकार से मध्यायु गृहीत है। इसलिये प्रथम खण्ड ३२ से गुणा किया (२७ । ३४ । ४ । ३०) × ३२ = २२४ । १०८८ । १२८ । ९६० = २४२ । १० । २४, तीस से भाग दिया तो लब्धि वर्षादि ८ । ० । २६ । ४ । २८ इसको एक प्रकारानीत मध्यायु ६४ में हीन किया तो स्पष्टायु ५५ । ११ । ३ । ५५ । ३२ मिली।

(३) उदाहरण--(ग)



लग्नेश शुक्र	८ । १ । ३५ । ३९	अष्टमेश शुक्र	८ । १ । ३५ । ३९
प्रथम लग्न	६ । २४ । ५६ । ४६	चन्द्रमा	२ । ० । ४० । ४०
शनि	८ । २५ । १५ । ३९	होरालग्न	६ । ४ । ३७ । ५१

१--लग्नेश तथा अष्टमेश दोनों शुक्र ही है जो कि द्विस्वभाव में पड़ा है इसलिये मध्यायु योग हुआ। २--चन्द्रमा लग्न या सप्तम में नहीं है अतः लग्न-चन्द्र की

जगह श्लोक १७९ के अनुसार शनि-चन्द्रमा से द्वितीय प्रकार लिया जायगा। शनि चन्द्र ये दोनों भी द्विस्वभाव ही में पड़े हैं अतः इस प्रकार से भी मध्यायु योग आया। (३) तृतीय प्रकार में—लग्न, होरालग्न दोनों चर में हैं अतः इससे दीर्घायु आया। परन्तु दो तरह के विसंवाद में दो प्रकार से मध्यायु आया। इसलिये श्लोक के १८१ अनुसार इस जातक का मध्यायु ही निश्चित हुआ।

इसी मध्यायु का स्पष्टीकरण—

लग्नेश शुक्र	८। १। ३५। ३९	अष्टमेश ,,	८। १। ३५। ३९
शनि	८। २५। १५। ३९	चन्द्र	२। ०। ४०। ४०

केवल अंशयोग = २७। १२५। १५७ = २९। ७। ३७ योगकारक संख्या ४ से भाग दिया तो समांश ७। १६। ५४। १५ आया। इसको दो प्रकार से मध्यायु आने के कारण द्वितीय खण्ड ३६ से गुणा २५२। ५७६। १९४४। ५४० = २६२। ८। ३३ इसमें ३० से भाग देने पर लब्धि वर्षादिक ८। ८। २५। ४२। ३६ मिली, इसको द्विप्रकार-सिद्ध मध्यायु ७२ में हीन किया तो स्फुटायु ६३। ३। ४। १७। २४ आया।

इसमें द्विप्रकारागत मध्यायु के योगकारक ४ ग्रहों में एक शनैश्चर भी है जो अपने उच्च, गृह में न रहते चन्द्रमा, बृहस्पति से दृष्ट है अतः श्लोक १८२ के अनुसार इसमें कक्षाह्रास का अवसर आता है, तथापि उदाहरण के विकास के लिये वैसा ही दिखलाया। छात्रों को चाहिये कि इन रहस्यों को भलीभाँति पहले देख कर स्पष्टीकरण करें, ताकि स्पष्टीकरण से आई हुई आयु में किसी प्रकार का वैषम्य न हो। यद्यपि यह विषय अत्यन्त गूढ़ है, इस पर प्राचीन ऋषिमुनियों से लेकर आजतक के टीका-टिप्पणी-कारकों में भी बड़ा ही मतभेद है।

इस तरह विना सारिणी के भी आयु का स्पष्टीकरण हो जाता है, तथापि छात्रों की सुविधा के लिये तीनों खण्ड पर से अलग अलग सारिणी भी रख देता हूँ, जिसके आधार पर केवल योगकारकों का समभाग लाकर उसके अंश, कला, विकला के अनुसार गृहीत फलों का यथास्थान योगमात्र से स्पष्टायु का परिज्ञान आसानी से हो जायगा।

———

३२ प्रथम अंश

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
मास	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२

कला

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
I	कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२
	दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३
	दण्ड	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२
II	कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
	मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९
	दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२	३	९	१६	२२	२८	५
	दण्ड	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२

विकला

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
दण्ड	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
दण्ड	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२

खण्ड-सारिणी फल—

१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३२
११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०
६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

फल—

१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
४४	४५	४६	४७	४८	४९	४०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

फल—

१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५१	५८	४	११	१७	२४
३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

३६ द्वितीय अंश

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वर्ष	१	३	३	४	६	७	८	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६
मास	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९
दिन	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८

कला

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३
विन	७	१४	२१	२८	६	१३	२०	२७	४	१२	१९	२६	३	१०
वण्ड	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
मास	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
विन	१३	२०	२७	४	१२	१९	२६	३	१०	१८	२५	२	९	१६
वण्ड	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८

विकला

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
दण्ड	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०
पल	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
विन	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५
वण्ड	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४८	५५	२	९	१६
पल	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८

खण्ड-सारिणी फल—

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६
०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०
०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०

फल—

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७
१८	२५	२	९	१६	२४	१	८	१५	२२	०	७	१४	२१	२८	६
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४
२४	१	८	१५	२२	०	७	१४	२१	२८	६	१३	२०	२७	४	१२
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

फल—

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
४८	५५	२	९	१६	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

४० तृतीय अंश

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वर्ष	१	२	४	५	६	८	९	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१८
मास	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८

कला

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मास	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
दिन	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२
कला	३१	३२	३३	३३	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
मास	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
दिन	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२

विकला

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
दिन	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
दण्ड	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
दिन	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
दण्ड	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२

खण्ड सारिणी फल--

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३८	४०
०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०

फल--

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८
०	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
०	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०

फल--

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८
०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०

दशा-विमर्श—

पुरासन् सदाचारकर्मप्रसक्ता
जना देवपित्रादिसेवानुरक्ताः।
तदाधारजातं वयः खार्कतुल्यं दशावर्ष-
मानं कृतं पूर्वविद्भिः ॥ १८९ ॥
परं नाद्य घोरे कलौ सा व्यवस्था
न वायुः परं नो दशा तत्प्रमाणा।
अतो जातकस्य स्फुटायुर्विदित्वा
तदाधारसिद्धं दशान्तर्दशाद्यम् ॥ १९० ॥

(स्पष्टार्थ)

दशा का स्पष्टीकरण—

स्फुटायुःप्रमाणेन सर्वग्रहाणां
दशान्तर्दशादीनि संगुण्य भक्त्वा।
खसूर्यैः फलानीह तेषां भवेयु-
र्दशान्तर्दशाद्यानि युक्तानि जन्तोः ॥ १९१ ॥

पहले जातक की स्पष्टायु जान कर उससे ग्रहों के दशावर्ष (विशोत्तरीसिद्ध) को गुण दे और १२० से भाग दे तब जो लब्धि वर्षादिक आवे वही उस ग्रह का दशावर्ष (फलोपयोगी) समझना चाहिये।

उदाहरण—

यथा—स्फुटायु ७०।१०।७।२८ ('व' चक्र में) सिद्ध हुआ है, तदनुसार दशाचक्र बनाने के लिये सूर्यादि ग्रहों का दशावर्ष लाना है तो कथित श्लोक के अनुसार स्फुटायु को सूर्य-दशावर्ष ६ से गुण दिया तो (७०।१०।७।२८) × ६

=४२०।६०।४२।१६८=४२५।१।१४।४८ हुआ। इसमें १२० से भाग दिया तो लब्धि

१२०) ४२५।१।१४।४८ (३=वर्ष
३६०
५६ × १२ = ७८०
+१
१२०) ७८१ (६=मास
७२०
६१ × ३० = १८३०
+१४
१८४४

१२०) १८४४ (१५=दिन
१२०
६४४
६००
४४ × ६० = २६४०
+४८
१२०) २६८८ (२२=दण्ड
२४०
२८८
२४०
४८ × ६० = २८८०

१२०) २८८० (२४=पल
२४०
४८०
४८०
००

वर्षादिक ३।६।१५।२२।२४ यही सूर्य-दशावर्ष हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों का दशावर्ष लाकर अधोलिखित चक्र में न्यास किया गया है (अन्तर-प्रत्यन्तर में भी यही युक्ति लगा कर उनका भी स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझना चाहिये) ॥

स्फुटमहादशा-वर्षचक्र—

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
३	५	४	१०	६	११	१०	४	११	वर्ष
६	१०	१	७	५	२	०	१	६	मास
१५	२५	१७	१६	११	१८	१३	१७	२१	दिन
२२	३७	५१	१७	१६	४५	६	५१	१४	दण्ड
२४	२०	८	१२	४४	५६	२८	८	०	पल

इसी दशावर्ष के आधार पर जन्मकालिक दशा का भुक्त भोग्य लाकर पूर्व प्रदर्शित रीति के अनुसार महादशा चक्र का न्यास करना उचित है। सूक्ष्म विचार से कोई भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल इसी दशाकाल में जातक को देता है ॥ १९१ ॥

अंग्रेजी तारीख जानने का उपाय—(निजकृत तारिकागणित)

आजकल के ज्योतिषी लोग नवीन सभ्यतापूर्ण यजमानों की कुंडली में दशा का आरम्भ एवं समाप्ति सूचक सूर्यांश के साथ अंग्रेजी तारीख भी देने लगे हैं ताकि यजमान को आसानी से ज्ञात हो जाय, परन्तु अग्रिम कतिपय वर्षों के पञ्चांग न रहने से तारीख देने में दिक्कत उठानी पड़ती है, अतः उन लोगों के लिये तारीख जानने का उपाय बतलाता हूँ जिसके सहारे आसानी से सैकड़ों वर्ष आगे की तारीख मालूम हो सकती है।

सौर मासों में सावन दिनों की संख्या—

व्यवहारकृते सौरमासाधिष्ठितवासराः।
धनुर्वृश्चिकयोरूनत्रिंशज्ज्ञेया हि सावनाः ॥ १९२ ॥
तुलामकरकुम्भेषु त्रिंशन्मीने तथैव च।
द्वात्रिंशन्मिथुने चैकत्रिंशच्छेषेषु निश्चिताः ॥ १९३ ॥

चतुर्भक्ते विक्रमाब्दे यदि लब्धिर्निरग्रका ।
एकत्रिंशत्तदा कुम्भे वेद्याः स्वल्पान्तरादिह ॥१९४॥

व्यवहार के लिये स्वल्पान्तर से सौर मास में इस प्रकार दिनसंख्या नियत है—धनु वृश्चिक में २९ दिन, तुला, मकर, कुम्भ तथा मीन में ३० दिन, मिथुन में ३२ शेष राशियों (मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या) में ३१ दिन, परन्तु जिस वर्ष विक्रमाब्द में ४ से भाग देने पर निःशेष लब्धि आवे उस वर्ष के कुम्भ मास में एक दिन अधिक अर्थात् ३१ दिन मानना चाहिये।

(१) दिनसंख्या-बोधक चक्र—

सौर	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र	आश्विन
मास	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
दिन	३१	३१	३२	३१	३१	३१
सौर	कार्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मास	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिन	३०	२९	२९	३०	३० ३१	३०

अंग्रेजी महीनों में तारीख संख्या—

रूपाग्नयो नागयमाः कुरामास्त्रिंशत् कुवह्नी खगुणाः कुरामाः ।
महीगुणास्त्रिंशदथैकरामास्त्रिंशत्पुना रूपगुणाः क्रमेण ॥ १९५ ॥
क्राइष्टजन्यूअरिपूर्वमासदिनानि बोध्यानि बुधैर्यदा तु ।
वेदोद्धृता वर्षमितिर्निरग्रा ज्ञेयाधिकैका च तदा द्वितीये ॥१९६॥

जनवरी, फरवरी आदि अंग्रेजी महीनों में दिन (तारीख) संख्या इस प्रकार है—३१, २८, ३१, ३०, ३१, ३०, ३१, ३०, ३१, ३०, ३१। परन्तु जिस वर्ष ईसवीयाब्द में चार से भाग देने पर निःशेष लब्धि मिले उस वर्ष के फरवरी मास में एक दिन अधिक अर्थात् २९ समझना चाहिये॥ १९५-१९६ ॥

स्पष्टार्थ चक्र—

अंग्रेजी मास	जनवरी	फरवरी	मार्च	एप्रिल	मई	जून
तारीख	३१	२८ २९	३१	३०	३१	३०
अंग्रेजी मास	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
तारीख	३१	३१	३०	३१	३०	३१

विक्रम संवत् से ईशवी वर्ष जानने का प्रकार—

सप्तपंचाशता हीनो वैक्रमश्चेशवीयकः ।
नक्रादित्रितये चेत्स्यात्तदा सैक उदाहृतः ॥ १९७ ॥

जन्मकालीन विक्रम संवत् में ५७ घटा देने से ईशवीय वर्ष हो जाता है। परन्तु मकर, कुंभ, मीन ये जन्ममास (अर्थात् १४ जनवरी से १३ एप्रिल के भीतर का हो तो उसमें एक और जोड़ना चाहिये तब ईशवीय वर्ष उचित होगा) ॥१९८॥

लघु एवं सम तारीख संज्ञा—

नक्रादिगो जन्युअरी-चतुर्दश्यान्तारिकायां बहुधा रविः स्यात् ।
एतत्प्रसङ्गे गणकैर्नवीनैस्तन्नाम बोध्यं लघुतारिकेति ॥ १९८ ॥
तथैव मेषादिगते च भानावेप्रीलमासस्य चतुर्दशी च ।
याऽस्ति स्थिरेवात्र बुधैः प्रकल्प्यं तन्नामधेयं समतारिकेति॥१९९॥

प्रायः जनवरी महीने की १४वीं तारीख में सूर्य मकरादि में आ जाता है। इस प्रसङ्ग में उस तारीख का नाम लघुतारिख एवं एप्रिल महीने की १४वीं तारीख में सूर्य मेषादिगत हो जाता है। इसलिये उसका नाम समतारीख समझना चाहिये (अग्रिम श्लोकसे इन्हीं दो तारीखको आरम्भ कर गणना की जायगी)॥१९८-१९९॥

अब सूर्यांश पर से अंग्रेजी मास एवं तारीख लाने का प्रकार—

यद्राशिभागस्य विधातुमिष्टा मेषादितस्तद्दिनयोगरूपे ।
शोध्याः समाद्याः प्रतिमासजातास्तथाकृतेऽभीष्टसुतारिका स्यात्॥२००॥

मेषादिधन्वन्तकृते, यदीष्टा नक्रादिमीनान्तगता तदा तु ।
नक्रादितो वारयुतिं विधाय लब्धादिका एव विशोधनीयाः ॥२०१॥

सूर्य के जिस राशि अंश में अंग्रेजी तारीख जानना हो, मेषादि से आरम्भ कर उस दिन तक के दिनों की संख्या चक्र (१) से ठीक २ जो हो उसमें समतारीख (१४ एप्रिल) से अग्रिम तारीखों को प्रतिमास (जहाँ तक घट सके) घटा दें। अन्त में पूरे मास घट जाने पर जो शेष बचे तत्संख्याक तारीख अग्रिम मास की मानी जायगी। यह मेषादि से धनु के अन्त तक के लिये नियम है। यदि मकरादि से मीन के अन्त के भीतर की तारीख जानना हो तो मकरादि से सौरमासीय दिनों की संख्या में १४ जनवरी से आरम्भ कर तारीखें घटानी चाहिये।

उदाहरण दिखाने के लिये (ह) जन्मकुण्डली का एक अन्तर्दशा-चक्र का न्यास करता हूँ।

अन्तर्दशाचक्र—
(बुध की महादशा में सभी के अन्तर)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	कोष्ठक
बु. बु.	बु. के.	बु. शु.	बु. सू.	बु. चं.	बु. मं.	बु. रा.	बु. बृ.	बु. श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मास
२७	२७	६	६	०	२७	१८	६	९	दिन
१९९७	१९९८	२००१	२००१	२००३	२००४	२००६	२००९	२०११	संवत्
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सूर्य
२	२	०	१०	३	३	१०	१	९	राशि
१८	१५	१५	२१	२१	१८	६	१२	२१	अंश
३-७-४०	३०-६-४१	२८-४-४४	५-३-४५	६-८-४६	५-८-४७	१८-२-५०	२६-५-५२	३-२-५५	अं० ता०

यथा कोष्ठक ६ की अंग्रेजी तारीख जानना है जिसका संवत् २०११ तथ सूर्य-राशि-अंश ६।२१ है. अतः पहले संवत् में ५७ घटाया तो २०११–५७ = १९५४ मकरादिगत होने के कारण सैक करने पर १९५४ + १ = १९५५ ईशवीय हुआ। तारीख के लिये मकरादि से दिनयोग केवल २१ इसमें लघुतारिका से जनवरी मास की तारीख संख्या १८ हीन किया तो शेष ३ यह फरवरी की तीसरी है। अतः बुध की महादशा में शनैश्चर के अन्तर की अवधि तारीख ३ फरवरी १९५५ ई० विदित हुई।

एवं कोष्ठक ५ के लिये ईशवीय वर्ष = २००३–५७ = १९४६ (मेषादि रहने के कारण सैक करने की आवश्यकता नहीं)। तारीख के लिये मेषादि से दिनयोग = मेष = ३१, + मिथुन = ३२, + कर्क = २१ = ११५ (मेष से कर्क २१ तक), इसमें समतारिका से आगे की एप्रिल की शेष तारीख १७ घटाया तो शेष = ११५–१७ = ९८ ततः पर

९८
—३१ मई
६७
—३० जून
३७
—३१ जुलाई
६
(अगस्त का शेष)

अतः सिद्ध हुआ कि बुध की महादशा में चन्द्रमा का अन्तर तारीख ६–८–४६ तक रहेगा। इसी तरह सभी कोष्ठों की अंग्रेजी तारीख लाकर चक्र में साफ दिखलाई गई है।

सावन दिन का आरम्भ सूर्योदय से, अंग्रेजी तारीख का आरम्भ मध्य रात्रि से, मकर की संक्रांति कभी १३ जनवरी कभी १४ नजवरी को होती है, इत्यादि कारणों से इस प्रकार से आई हुई तारीख में कभी २ एक दिन का अन्तर पड़ सकता है। (उस तारीख का दिन जानना हो तारिकागणित देखें) ॥२००–२०१॥

सप्ताङ्काष्टमहीमिते शकनृपस्याब्दे लसत्फाल्गुने
पूर्णेन्दौ पितृवार्षिके शशिदिने होलोत्सवे शोभने।
शिष्यप्रार्थनया सुबोधतिलकेनालंकृतः पूर्णतां
यातः सर्वजनप्रमोदजनकः सत्कुण्डलीदर्पणः॥

* इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः *